आवरण पृष्ठ संख्या –1

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका अभी अभी विश्व की सर्वोच्च शक्ति माना जाने लगा है। साम्यवाद का विघटन जो नब्बे के दशक में हुआ उसने तो अमेरिका को और अधिक समृद्धिशाली – एवम शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर प्रस्तुत कर दिया। समृद्धि राष्ट्र के हर क्षेत्र में हो रही है। सम्पूर्ण विश्व के युवाओं और नेताओं के लिये यह राष्ट्र अनुकरणीय आदर्श मॉडल के रूप में उभर रहा है। अपनी व अन्य की स्वतंत्रता की प्यास, सबको समान स्वतंत्रता और समानता का आदर्श, और प्रत्येक नागरिक के लिये प्रसन्नता के अवसर, रोजगार के अवसर मुहैया कराने का इस राष्ट्र का संकल्प उत्तरोत्तर सफलता के नये आयाम हासिल करता जा रहा है।

इस राष्ट्र ने साम्यवाद से निरंतर संघर्ष किया क्योंकि साम्यवाद ने मनुष्यों के गौरव का हनन किया, उसे लूटा, उसकी स्वतंत्रता को समाप्त किया और उसे गरीबी में जीवन-यापन करने के लिये बाध्य किया।

राष्ट्र की प्रगति में आय के स्त्रोतों की निरंतर प्रगति, सैन्य शक्ति, व्यापार और उद्योग, शिक्षा का उत्तम तरीका, विज्ञान में निरंतर आगे बढने के प्रयास आदि सहयोगी हुए हैं। इस राष्ट्र की सम्पूर्ण विश्व को विज्ञान द्वारा आविष्कृत नये नये उपकरणों की देन जैसे टेलीफोन (दूरभाष) टेलीविजन (दूरदर्शन) मोटरकार, सिनेमा, वायुयान, इलैक्ट्रिक बल्ब आदि ने तथा पृथ्वी पर सुविधापूर्ण जीवन जीने की खोज ने सुखद और प्रसन्न जीवन-यापन करने की क्षमता प्रदान की है। इसके शक्ति स्तम्भ लोकतंत्र और राजनीतिक व्यवस्था है। इस राष्ट्र ने अपने नागरिकों को सोचने की स्वतंत्रता अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता, मानवाधिकारों के उपयोग की स्वतंत्रता, अपने जीवन के उद्देश्यों को पाने की स्वतंत्रता प्रदान की है। इसकी मुद्रा 'डालर' विश्व के हर राष्ट्र में स्वीकृत की जाती है।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि अमेरिका पूर्णतया आस्तिक है। इसकी ईश्वर पर पूरी आस्था है इसीलिये मुद्राओं व डालर के नोटों पर यह वाक्य कि

"ईश्वर अमेरिका को आशिर्वाद प्रदान करें" G B A छपा होता है जो कि इसके आस्तिक होने का पक्का प्रमाण है।

आवरण पृष्ठ संख्या –2

अमेरिका के द्वारा निर्धारित प्रगति के सिद्धान्त विश्व में कई राष्ट्रों ने स्वीकार कर उनका अनुकरण किया है। फलस्वरूप आज वे भी समृद्ध और उन्नत राष्ट्र हैं यथा पश्चिम जर्मनी, दक्षिण कोरिया, जापान, और ताइवान ने अमेरिका की आर्थिक नीतियों का अनुसरण कर स्वयं के राष्ट्र को भी समृद्ध किया है। यहां तक की अब तो चीन भी इसी आर्थिक संगठन से सम्बद्ध होकर निरंतर समृद्धि की ओर अग्रसर हो रहा है। व्यापार की दृष्टि से आज चाईना का नाम भी अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में साख और धाक जमा चुका है।

अमेरिका को अपने राष्ट्र के सुविख्यात विद्वानों की लंबी श्रृंखला पर गर्व है। जार्ज वांशिंगटन, अब्राहम लिंकन, मार्टिन लूथर किंग जूनियर, ओमास जेफरसन रूजवेल्ट, थामस आल्वा एडीसन, आइस्टीन आदि ने विभिन्न क्षेत्रों में चिरस्मरणीय कार्य किये है। इतिहास के पृष्ठों पर इनका नाम स्वर्णाक्षरों से लिखा गया है। और अब तो अमेरिका विश्व के प्रत्येक राष्ट्र की स्वतंत्रता का रक्षा कवच बनने के लिये कटिबद्ध है। ईराक, अफगानिस्तान में सद्दाम हुसैन और बिन लादने के अधिनायकवाद और आतंकवाद से वहां की जनता को मुक्ति दिलाने का पुनीत कार्य अपने सैनिकों का बलिदान करवाकर और अपने राजकोष की विपुल धनराशी को झोंक कर किया है। फिर भी दुष्प्रचार के कारण वहां के नागरिक और विश्व का कुछ जनमत अमेरिका से घृणा करता है।

मेरे विचार से इस दुष्प्रचार को मिटाने के जो अभी तक अमेरिका द्वारा प्रयत्न किये गये है वे पर्याप्त नहीं है। अमेरिका के नेक इरादों की सही तस्वीर लोगों के सामने रखने के लिये और अधिक प्रयासों व प्रचारों की आवश्यकता है। शांति और मानवाधिकारों की रक्षा में अमेरिका द्वारा किये गये प्रयास भी अभी प्रथम चरण ही में है। इसे अपने लक्ष्य की प्राप्ती के लिये अभी बहुत कुछ करना है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि निरंतर प्रयत्नशील रहने पर सदैव ही नये रास्ते प्राप्त होंगे, जो अपने

उद्देश्य की मंजिल तक ले जाने में सहायक होंगे। समस्यायें हैं, तो उनका निदान भी निरंतर के चिंतन और प्रयत्नों में छुपा है।

'स्वर्णिम अमेरिका' के लिये मेरी कल्पना है। इस पुस्तक में विभिन्न क्षेत्रों के सुधार हेतु जो सुझाव मैने प्रस्तुत किये हैं, यदि सरकार इनकी क्रियान्विती सही तरीके से करती है तो निश्चय ही ये सुझाव इस राष्ट्र की सफलता, अधिक गौरव प्राप्ति, और सबसे अधिक 'वास्तविक प्रसन्नता पूर्ण' अमेरिकन नागरिकों को जीवन-यापन कराने में सहायक हो सकती है।

यह सम्पूर्ण पुस्तक इन्टरनेट पर भी पढ़ी जा सकती है।

http://www.goldenamerica.net

http://www.goldenindia.biz

Published by:
Dr. P.C. Lunia
Golden America Foundation
301 E. 47th St # 14A
NewYork. N.Y. 10017 U.S.A.
Fax- 001-212-486-0423
Golden India Foundation
B-94A, Gyan Marg
Tilak Nagar, Jaipur- 302004 (India)
(C) Auther
First adition: 2004
Price Rs. 100.00
U.S.$ 5.00
Printed at: Popular Printers, Jaipur
Ph- 91-141-2606591
A vision of golden America By Dr. P.C. Lunia

संदर्भ सूची

मैने यह पुस्तक क्यों लिखी?

ईश्वर अमेरिका को आशीर्वाद प्रदान करे।

1. अमेरिका का विश्व को योगदान।

2. लोग अमेरिका को क्यों चाहते हैं?

3. 27 सूत्रीय योजना।

4. आतंकवादी अमेरिका से क्यों घृणा करते हैं? उनके हृदय कैसे बदले जायें कि वे अमेरिका को चाहने लगे।

5. इराक में शांती, स्थायित्व, और प्रगति की स्थापना के प्रयत्न।

6. विदेशी तेल आयात पर निर्भरता।

7. सुरक्षा सशक्तिकरण।

8. कार्यालयों में E व्यवस्था से अत्यधिक नौकरशाही हस्तक्षेप पर नियंत्रण ।

9. प्रतिवर्ष दसलाख अमेरिकन को नये रोजगारों, नये उद्योगों के लिये कैसे होशियार किया जाय?

10. पांच वर्ष के अंदर किसानों की आय को कैसे दुगना किया जाय।

11. सभी नागरिकों को निःशुल्क कम्प्युटर प्रशिक्षण कैसे दिया जाय?

12. एक नये विश्वविद्यालय की स्थापना।

13. शिक्षा प्रबंध में सुधार।

14. नये रोजगार उत्पन्न करने हेतु पर्यटन को बढावा देना आवश्यक।

15. नई तकनीक का उपयोग लाभकारी।

16. अमेरिकन समाज में नये आध्यात्मिक आदर्शों व नैतिक आदर्शों की स्थापना आवश्यक।

17. स्वास्थ्य सुरक्षा में नूतन सुधार।

18. सार्वजनिक संकट मुटापे पर नियंत्रण आवश्यक।

19. अमेरिका में 'एड्स' को कैसे नियंत्रित किया जाय?

20. अमेरिका में प्रदूषण नियंत्रण।

21. अमेरिका में सड़क दुर्घटनाओं को कैसे कम किया जाय?

22. जल प्रबंधन।

23. भूमि नियमों में सुधार।

24. प्रगति का जादुई सूत्र।

25. प्रतिवर्ष 200 बिलियन डालर बचत का जादुई सूत्र

26. बजट के घाटे को कैसे कम किया जाय?

27. कर नियमों में सुधार।

28. व्यापार के घाटे को कैसे कम किया जाय?

29. रेल व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन व सुधार।

30. 60 बिलियन डालर टैक्स कम करने का विकल्प।

31. महामहिम राष्ट्रपति द्वारा समीतियों का गठन।

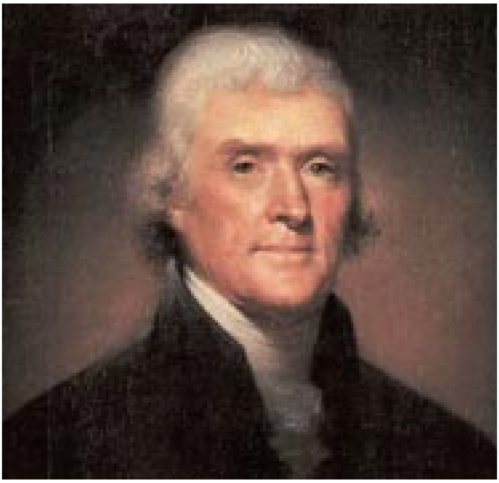

यह पुस्तक मेरे आदर्श, श्रीमान् थामस जेफर्सन अमेरिका के तृतीय राष्ट्रपति को समर्पित है- जिन्होनें "Declaration of Independence" अर्थात् "स्वतंत्रता की घोषणा" नाम की अमर कृति की रचना की।

वे महान् राष्ट्रनायक थे जिन्होनें अपनी कलम की शक्ति से अमेरिका के गौरव को बढा दिया और फ्रांस से लोउसियाना खरीद लिया। एक भी सैनिक इस ऐतिहासिक अभियान में नहीं मारा गया और अमेरिका का आकार विस्तृत हो गया।

मैनें यह पुस्तक क्यों लिखी?

मेनहट्टन के मिडटाउन में अपने घर में बैठे हुए जब मैंने 9/11 की ट्रेड सेंटर पर हृदय विदारक एवं विध्वंसक घटना को दूरदर्शन पर देखा तो अचानक मेरा मन इस पुस्तक को लिखने के लिए प्रेरित हुआ।

इस नरसंहारक घटना ने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि विश्व शांति में संसार के कई राष्ट्रों को भरपूर मदद देने के बाद भी लोग अमेरिका से घृणा क्यों करने लगे हैं? जैन धर्म का होने के नाते मैने यह चिंतन किया कि भगवान महावीर ने सदैव घृणा को प्यार में बदलने का अभ्यास किया है और विश्व को यही उपदेश दिया है। मैने भी यह दृढ़ निश्चय किया कि अमेरिका के प्रति इस घृणा को प्यार में बदलने का प्रयत्न करूंगा।

मैं हृदय से अमेरिका को प्रेम करता हूँ क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि यह राष्ट्र कितना महान और उदार सिद्धान्तों को विश्व भर में प्रतिपादित करने के लिये प्रयत्नशील है। ईश्वर ने इसे वरदान दे रखा है, और मैं जानता हूँ कि मनुष्यता की रक्षा हेतु अमेरिका संसार के लिये बहुत बड़ी आशा है। किंतु मुझे अत्यंत आश्चर्य है कि संसार के अनेक मनुष्य ही नहीं, यहां तक की कुछ अमेरिकावासी भी अमेरिका से घृणा करते हैं। यह अविश्वसनीय, पर यथार्थ है। फिर भी हमें वास्तविक और प्रायोगिक जगत में निवास करना हैं अस्तु हमारा यह दायित्व है कि इस घृणा को मिटाने में प्रयत्नशील रहें और अमेरिका के नेक इरादों की तस्वीर विश्व के सामने प्रदर्शित करें।

यह पुस्तक इसी आशय से लिखी गई है। एक आशावादी दस्तावेज है जो कि घृणा को प्यार में बदलने में सहायक सिद्ध होगा। अमेरिका को सही रूप में समझने में एवं मानवता की रक्षा के नये आयाम रचने में भी सहायक होगा।

आज अमेरिका इतिहास के चौराहे पर खड़ा है, जहाँ उसके शत्रु उसे समूल नष्ट करने पर आमादा हैं। अमेरिका को इस तूफान को शत्रु का मन और दिल

जीतकर उसके दुष्टतापूर्ण इरादों को हमेशा-हमेशा के लिये समाप्त कर देना होगा। राक्षस को साधुवृत्ति से प्यार में बदलना होगा, ना कि हिंसा और प्रतिघृणा से।

225 वर्षों से अमेरिका मनुष्यता - लोकतंत्र, मानवाधिकार, विश्वशांति का प्रबल पक्षधर रहा है। किंतु उसके शत्रुओं द्वारा अमेरिका के सद्प्रयत्नों को दुष्प्रचार से धुंधला करने के फलस्वरूप, अमेरिका के सद्विचारों को न समझ पाने के कारण ही लोग इस राष्ट्र से घृणा करने, उसे नापसंद करने के जाल में फंसते चले गये हैं।

अब समय आ गया है कि सत्य को भ्रामक प्रचारों से हटाकर स्थापित किया जाए। सत्य अपने आप में एक शक्ति है और इसका प्रभाव निःसंदेह रूप से होकर रहता है। सत्य का प्रभाव जादू की तरह सर पर चढ़कर बोलता है। हमें इस दिशा में हृदय परिवर्तन करना चाहिये ताकि लोग अमेरिका जैसे राष्ट्र के महान इरादों से प्यार करने लगें, उसके आदर्श कृत्य मानवता की रक्षार्थ किये गये बलिदानों को समझ सके।

मैंने इस पुस्तक में, हर क्षेत्र पर चिंतन कर एवं सर्वेक्षण करके लिखा है। क्योंकि मेरा प्रयत्न है कि उन तमाम तत्वों को जो समाज का निर्माण करते हैं अमेरिका को ताकतवर बनाने में सहायक होना चाहिये। हम सभी समवेत रूप से संगठित होने पर ही 'सुनहरे अमेरिका' का निर्माण कर पायेंगे।

मेरी पुस्तक कोई साहित्यिक कृति नहीं है, यह मेरा विनम्र प्रयास अमेरिका को पुनः अपना खोया हुआ गौरव दिलाने का है, जैसा कि वह 20वीं सदी की आधी शताब्दी तक गौरवान्वित रहा है।

मेरी महत्ती भावना उसी गौरव को पुर्नस्थापित करने की है।

God Bless America ईश्वर अमेरिका को आशीर्वाद प्रदान करे

"God Bless America" उद्गार है, जो लाखों उन लोगों के हृदय से निकले हैं जो अमेरिका आये, यहां बसे और सुविधापूर्ण जीवन-यापन करने लगे। यह अपने आश्चर्यजनक और अद्वितीय प्रयासों के कारण वस्तुतः ईश्वरीय वरदान प्राप्त राष्ट्र है। विज्ञान, राजनीतिक या सामाजिक कोई सा भी क्षेत्र हो वस्तुतः इस

राष्ट्र की खोज हर क्षेत्र में चमत्कारिक ही सिद्ध हुई है। विश्व में इसका कहीं मुकाबला नहीं है। ये परिणाम अतुलनीय है।

अमेरिका में अधिसंख्य लोग मध्यमवर्ग के हैं। अधिकांश नागरिक मध्यवर्त्ती परिवार से आये हैं। संसार में सबसे अधिक मध्यम वर्ग अमेरिका में निवास करता है, परन्तु जो समृद्ध है, 'सब कुछ रखते हैं', उनके और जो 'कुछ नहीं रखते' ऐसे अभाव ग्रस्त लोगों का अंतर बहुत कम है। जो अभाव ग्रस्त हैं वे भी जीवन जीने की मौलिक सुविधाओं से परिपूर्ण हैं चाहे उनके बैंक में जमा राशि भले ही कम हो। प्रत्येक अमेरिकन सुविधा और आराम के सभी साधनों जैसे कार, दूरदर्शन, फ्रीज, टेलीफोन और अवकाशों में भ्रमण की सभी सुविधाओं से परिपूर्ण है।

फिर भी अमेरिका को अभी बहुत कुछ करना है ताकि यह राष्ट्र और अधिक सुन्दर और अधिक समृद्ध, और अधिक प्रगतिशील बने। यह विचार मेरे मन में उत्पन्न हुआ है और इसीलिये ''क्रियान्विती हेतु कुछ योजनायें'' लेकर मैने यह पुस्तक लिखी है।

गत विश्वयुद्धों की प्रकृति और प्रवृत्ति से आज के हमारे शत्रुओं की प्रकृति और चाल बिल्कुल भिन्न है- अस्तु सम्पूर्ण विजय प्राप्त करने हेतु हमें पूर्णतः अपरम्परावादी (Unconventional approach) प्रयत्नों की आवश्यकता है।

जो कुछ भी मैने इस पुस्तक में लिखा है, वह मेरी 40 वर्षों की अथक खोज का परिणाम है और इस सम्बन्ध में मैं किसी भी बुद्धिजीवी से सकारात्मक बहस करने या विचारविमर्श करने को हमेशा तैयार हूँ। यदि किसी वर्ग, समाज या किसी भी विभाग के सम्बन्ध में गलतफहमी के कारण यदि कुछ उचित न लिखा गया हो तो उसके लिये विनम्र भाव से क्षमा प्रार्थी हूँ। मेरे उद्देश्य पवित्र एवं शीशे की तरह पारदर्शी हैं कि हम सब एकजुट होकर ''गोल्डन अमेरिका'' के निर्माण में जुट जायें।

मैं भाग्य में विश्वास करता हूँ । यह एक संयोग ही है कि मेरा जन्म थॉमस जेफर्सन के जन्म दिन ही पर 13 अप्रेल 1943 को 200 वर्ष बाद भारत में हुआ।

वे एक महान चिंतक थे और साथ ही महान राजनीतिज्ञ भी थे। अमेरिका की स्वतंत्रता के लिये उनकी प्रसिद्ध घोषणा "Declaration of Independence" एक मील का पत्थर सिद्ध हुई है। उन्होनें अपने देश का आकार बढाकर दुगना करने हेतु लाउसियाना क्षेत्र को फ्रांस से खरीदकर रक्तहीन क्रांति का महत् दृष्टांत विश्व के समक्ष रखा। एक भी सैनिक इस कार्य में नहीं मारा गया।

भारतीय कलैंडर के अनुसार इसी अमेरीका के इसी अविस्मरणीय दिन, भारत में भी एक ऐसी महान आत्मा भगवान राम का "चैत्र शुक्ल नवमी" को जन्म हुआ था, जिन्होनें राक्षसी और दुष्ट प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त कर जन सामान्य को स्वतंत्र व सम्माननीय जीवन जीने का अधिकार दिलवाया। "असत्य पर सत्य ने विजय प्राप्त की।"

अस्तु, आओ हम सबका कर्तव्य है और मेरा विश्वास है कि हम सब एकजुट होकर दुष्ट प्रवृत्तियों से विजय प्राप्त कर 'सुनहरे अमेरिका' की स्थापना में सहयोग करें। यह विश्व मानवता की रक्षा हेतु नितांत आवश्यक है।

आमुख (PREFACE)

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका अभी-अभी कुछ वर्षों पूर्व ही विश्व का सर्वाधिक शक्तिशाली एवं समृद्धिशाली देश बन गया। उन्नीसवीं शताब्दी में सोवियत रूस का विघटन साम्यवादी शासन का अवसान एवं उसका विकेन्द्रीकरण संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के लिये वरदान सिद्ध हुए। एक सशक्त प्रतिद्वंदी राष्ट्र के अवसान ने अमेरिका को समस्त विश्व में दैदिप्यमान सितारे के रूप में प्रस्तुत कर दिया। प्रगति, समृद्धि और शक्ति की हर दिशा में अमेरिका सर्वश्रेष्ठ व सर्वशक्तिमान घोषित कर दिया गया।

यह विश्व के नौजवानों व प्रौढ़ों का आदर्श राष्ट्र बन गया। स्वतंत्रता एवं स्वाधीनता की प्यास लिये, इसने अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के अभिनव प्रयत्न आरंभ कर दिये।

अमेरिका के लक्ष्य

समानता, स्वतंत्रता, अस्पृश्यता, सुख और सुविधाओं को भोगने व पाने का सबका समान अधिकार अपने नागरिकों को दिलाने का बीड़ा नवोदित सर्वशक्तिमान राष्ट्र ने उठाया और साम्यवाद से बराबर का लोहा लिया जिसने प्राणी के गौरव उसकी स्वाधीनता व स्वतंत्रता को लूटकर उसे बाध्यत गरीबी में जीने को धकेल दिया था।

अमेरिका की आर्थिक प्रगति, सैन्य शक्ति, व्यापार और वाणिज्य, शिक्षा पद्धति, वैज्ञानिक प्रगति आदि सभी उन्नतियों ने राष्ट्र को विश्व के सर्वोच्च शिखर पर आसीन कर दिया। विश्व को विज्ञान के क्षैत्र में अमेरिका का दिया गया योगदान निःसंदेह अद्वितीय है।

अमेरिका ही ने विश्व समुदाय को रोजमर्रा के कार्यो में सुस्त व बाधक बनने वाली वस्तुओं के स्थान पर नवीन वस्तुएँ आविष्कृत कर प्रदान की यथा बॉल पाइंट पेन, बिजली के बल्ब, टेलीफोन, दूरदर्शन, मोटरकार, वायुयान, चलचित्र आदि जिससे जनजीवन में प्रगति के आयाम बढ गये जो कार्य घंटों में पूरे नहीं होते थे मिनटों में पलक झपकते पूरे होने लगे। इसकी राजनीति और लोकतांत्रिक प्रणाली शक्ति के आधारस्तंभ सिद्ध हुए। इस राष्ट्र ने अपने नागरिकों को सोचने की स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, काम पाने का अधिकार कई नवीन प्रयोग हैं

जिन्होनें संयुक्त राष्ट्र अमेरिका को विश्व का चमकता सितारा बना दिया। जिसने मानवीय अधिकारों को प्रदान करने और विश्वभर में उसकी रक्षा करने में कहीं किंचित मात्र भी ढिलाई नहीं की। अमेरिका का सिक्का (डालर) विश्व के किसी भी देश में स्वीकृत है। क्या यह कम उपलब्धी है?

अमरिकियों की हृदयस्थली में सर्वोच्च स्थान 'ईश्वर' का है। ये ईश्वर में अटूट श्रृद्धा एवं विश्वास रखते हैं। अमेरिका का प्रत्येक नागरिक बात बात में ईश्वर अमेरिका को आशीर्वाद दे "God Bless America" कहता मिलेगा और अमेरिका की मुद्रा डॉलर पर ईश्वर आस्था के प्रतीक चित्र दिखलाई पड़ेंगे जो ईश्वरीय प्रेरणा के प्रति आस्था के प्रतीक है। अमेरिका ने अपने राष्ट्रोत्थान के लिये जो निर्देश चुने और उनसे प्रगति के जिन आयामो को छुआ। इन सिद्धांतों के साथ जहां कहीं भी अमेरिकन नागरिक गये वहां-वहां उन्होनें प्रसिद्धी प्राप्त की और नये लोगों को चमत्कृत भी किया। इसके दिशा निर्देशों से पश्चिमी जर्मनी, दक्षिण कोरिया, जापान और ताईवान को समृद्धि - प्रगतिशीलता और पूर्ण आधुनिकता प्राप्त हुई यहां तक की चीन भी इसके चरण चिन्हों का अनुसरण कर विश्व जगत में प्रगति और समृद्धि के मार्ग पर उत्तरोत्तर अग्रसर हो रहा है।

अमेरिका को अपने देश के अनेक महान नेताओं पर गर्व है। ये महापुरूष मानवता के हितार्थ पूर्ण समर्पित भावना से कार्यरत रहे। इनके अभिनव चिंतन, मानवता की रक्षा के प्रति कटिबद्धता ने केवल अमेरिका को ही नहीं प्रत्युत समस्त विश्व के राष्ट्रों को जन मन हित का नवीन आलोक प्रदान किया। महामना जार्ज वांशिग्टन, महामना अब्राहम लिंकन, पूर्ण गांधीवादी किंग मार्टिन लूथर, किंग जूनियर, महामना जेफरसन, महामना रूजवेल्ट, थामस आल्वा एडीसन, एनिस्टिन आदि ने राष्ट्र और विश्व को पूर्ण अनुशासनबद्ध, न्यायपूर्ण दिशा निर्देश प्रदान किये जो कभी भुलाये नहीं जा सकते।

स्वतंत्रता एवं मानव स्वाधीनता के रक्षक अमेरिका ने अफगानिस्तान को बिन लादेन को आतंकवादी चंगुल से मुक्त कराया। इसी प्रकार ईराक में सद्दाम हुसैन के अधिनायकवादी अत्याचारों को समाप्त कर वहां के नागरिकों को स्वतंत्र किया। फिर भी यह प्रश्न विचारणीय है कि अमेरिका द्वारा किये गये मानवता हित के ये प्रयत्न अन्य राष्ट्र के लोगों को पसंद नहीं आये, प्रत्युत उन्होनें इन प्रयत्नों व सफलताओं को घृणा की दृष्टि से ही देखा है। अधिकांश प्रशंसकों के मध्य कतिपय

राष्ट्र अमेरिका के फौजी और बंदूक के बल पर किये गये मानवहित, मानव स्वतंत्रता के इन कार्यों की आलोचना एवं निन्दा भी करते है।

अस्तु मैं यहां महात्मा गांधी की मान्यता को सामने रखता हुआ कि "पवित्र लक्ष्य की पूर्ति भी पवित्र साधनों द्वारा ही की जानी चाहिये"।अमेरिकी प्रशासन से निवेदन करूंगा कि अन्य अधिनायकवादी या मानव स्वतंत्रता तथा मानवीय अधिकारों के विरोधी राष्ट्रों को बजाय सैनिक शक्ति से दबाने के उन्हें, वैचारिक एवं बौद्धिक दलीलों से विश्व जनमत को अपने पक्ष में करते हुए समझाने का प्रयास करना चाहिये। मानव अधिकारों के विरोधी राष्ट्रों से निरंतर संवाद बनाये रखना व शनैः शनैः न्यायिक मार्ग की ओर उन्हें लाने का निरंतर अहिंसक प्रयत्न जारी रखना चाहिए। भगवान महावीर, महात्मा बुद्ध, ईसामसीह, किंग मार्टिन लूथर, महात्मा गांधी के अहिंसक दिशा निर्देशों ही में अमेरिका को अपने उद्देश्यों का मार्ग ढूंढना होगा । कलम और आत्मा की वाणी तलवार और बन्दूक से कहीं अधिक प्रभावी होती है । अमेरिका को यही मार्ग अपनाना चाहिये।

मैं पूर्ण निर्णायक मत से कह सकता हूँ कि मानव अधिकारों की रक्षा के लिये अपनाया गया हिंसक मार्ग अमेरिका को पूर्ण सफलता नहीं दिला पायेगा। हिंसा से प्राप्त सफलता स्थायी और हृदयग्राही नहीं होती। इस प्रकार प्राप्त सफलता बदले की भावना को जन्म देती है और हिंसा ही प्रतिहिंसा को जन्म देती है। अस्तु यह समस्या का स्थायी समाधान नहीं है।

अमेरिका के नागरिकों व वहां के प्रशासन को अपनी व विश्व के मानव समुदाय की स्थायी शांती, खुशी और निर्भीक जिंदगी के लिये अहिंसा के मार्गों का अनुकरण करना चाहिये।

हर समस्या के कई समाधान होते हैं- चतुर वही है जो इन समाधानों का विश्लेषण कर सही समाधान चुने तो परिणाम भी चिरस्थायी व संतोषप्रद होंगे।

मेरी कल्पना अमेरिका को "स्वर्णिम अमेरिका" के रूप में देखने की है। मैं आशा करता हूँ कि अमेरिका ने जो मानवाधिकारों की रक्षा का संकल्प लिया है उनकी पूर्ति के लिये इस पुस्तक में मेरे द्वारा लिखे गये सुझावों पर विचार व मनन करने का वह अवश्य प्रयत्न करेगा ताकि विश्व आकाश में अमेरिका के गौरव में चार चाँद लग जायें।

डा. पी.सी. लूनिया

अध्याय – 1

विश्व को अमेरिका का योगदान

एक बार मैने एक बुद्धिमान व्यक्ति से कहा था कि संसार में प्राणी को सुख सुविधा और सहूलियत दिलाने वाले जितने भी आविष्कार गत 150 (एक सौ पचास) वर्षों में हुए वे सब अमेरिका में अमेरिकन आविष्कारकों द्वारा ही हुऐ हैं। चाहे वह मोटर कार हो, हवाई जहाज हो, दूरदर्शन, चलचित्र, बॉल पाइंट पैन, सिंथेटिक कपड़े, बर्फ, सूचना प्रौद्योगिकी कुछ भी क्यों न हो इनके प्रथम आविष्कार का गौरव अमेरिका को ही जाता है।

उपर्युक्त लिखे सारे आविष्कार अमेरिका द्वारा ही आविष्कृत हुए और प्रचारित किये गये। जब मैंने मेरे परिचित विद्वान से पूछा कि वे विश्व में अन्य देशों द्वारा नवीन उन आविष्कारों को बतलायें जिन्होनें मनुष्यों को गत 150 वर्षों में नवीन सुविधायें और दैनंदिन जीवन में सुगमतायें प्रदान की हों? मुझे आश्चर्य हुआ कि वे एक भी देश का नाम नवीन आविष्कारों से गौरवान्वित हुआ नहीं बतला सके।

क्या यह अपने आप में एक सच्चाई नहीं है कि मानवता की सुविधाओं के लिये एक अमेरिका ही ऐसा देश है जिसने पूर्ण मनोयोग से यह योगदान विश्व को दिया?

अधिकांश वस्तुएं जिन्हें हम दैनिक रोजमर्रा कार्यों में प्रयोग करते हैं उनका आविष्कार कर तथा आविष्कृत वस्तुओं में उतरोत्तर सुधार कर उन्हें प्रचारित-प्रसारित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य अमेरिका ने ही किया है। यहां मैं उन नवीन आविष्कृत वस्तुओं व उनके आविष्कारकों की एक संक्षिप्त सूची प्रस्तुत कर रहा हूँः

अमेरिका में आविष्कृत वस्तुओं के यहां कुछ नाम उनके आविष्कारों के साथ दिये जा रहे हैंः

आविष्कार	आविष्कारक
हवाईजहाज (वायुयान)	राइट बन्धु
ओटोमोबाइल	हेनरी फोर्ड

दूरभाष (टेलीफोन)	ग्राहम बेल
कम्प्युटर	चार्ल्स बाबेज
इन्टरनेट (सूचनातंत्र)	अमेरिकन मिलिट्री
प्लास्टिक	अलैक्जेंडर पार्क्स
सिंथेटिक धागा व कपड़े	डयु पोंट
एटॉमिक पॉवर (अणुशक्ति)	फरेमी
बाल पाइंट पेन	पारकर
दाढ़ी बनाने की पत्ती	जीलेट
आधुनिक एसेम्बली प्लांटस योजना	हेनरी फोर्ड
चलचित्र (सिनेमा)	थॉमस ए. एडीसन
टेप रिकार्डर	थामस ए. एडीसन

आप्रवासन

विगत इतिहास की तुलना में आज विश्व के अन्य देशों की बजाय अमेरिका ही में सबसे अधिक आप्रवासी है। चाहे वह अतुल सम्पदा का सर्व प्रथम स्वामी जोहनपोकल आस्टर हो, टेलीफोन का आविष्कारक एलेक्जेंर ग्राहम बेल, हालीवुड का सर्वोच्च व्यक्ति लुइस बी मेनियर हो, विडियो गेम का आविष्कारक रूल्फबेमर हो, सब संसार में आप्रवासी ही है। लोग अन्य राष्ट्रों के बजाय अमेरिका ही में जाकर रहना पसंद करते हैं।

यांत्रिकी

यंत्र संसार में अमेरिका का बहुत बड़ा योगदान है:-

आधुनिक उन्नत प्रत्येक आविष्कार का सृजक अमेरिका ही रहा है। इन अभिनव आविष्कारों से विश्व समुदाय के सभी मनुष्यों को सुविधापूर्ण जीवनयापन के अनेक साधन प्राप्त हुए हैं। यथा चलचित्र, दूरदर्शन, वी.सी.आर, टेलीफोन, कम्प्युटर, सूचनातंत्र, वायुयान तथा अनेक और नव आविष्कृत उपकरण जन जीवन को सुविधा और आनन्द दोनों ही प्रदान करते हैं।

सर्वशक्तिमान दैदिप्यमान राष्ट्र

यद्यपि अमेरिका विश्व का सर्वशक्तिमान राष्ट्र है- किंतु इसने अपनी शक्ति और सर्वश्रेष्ठता का दुरूपयोग कभी नहीं किया। अपनी अतुलनीय सैन्य

शक्ति का वर्धन-संवर्धन अमेरिका ने अन्य राष्ट्रों के उपनिवेशवाद, अधिनायकवाद एवं मानवाधिकार विरोधी हठधर्मिताओं को परास्त कर स्वतंत्र-स्वाधीन मनुष्यता की प्रगति के लिये किया है। अमेरिका ने अपनी सैन्य शक्ति का प्रयोग नाजी जर्मनी, दक्षिण कोरिया, अफगानिस्तान और हुसैन के इराक तथा अन्य कई पीड़ित, दलित एवं आतंक से भयभीत राष्ट्रों को स्वतंत्र कराने में ही किया है। इस प्रकार इस सर्वशक्तिमान राष्ट्र अमेरिका ने अपनी शक्ति का प्रयोग अन्य राष्ट्रों को हर दृष्टिकोण से स्वतंत्रता व मानवोचित प्रगति को दिलाने के लिये ही किया है न कि अपने साम्राज्य विस्तार की दृष्टि से।

आर्थिक समृद्धि

अमेरिका विश्व पटल पर सबसे अधिक धनाढ्य देश की गिनती में भी आता है। सारे विश्व की आर्थिक स्थिति अमेरिका के 12 (ट्रिलियन) डालर पर टिकी है। यही एक ऐसा देश है जहां जाति, वर्ण, वर्ग, सम्प्रदाय, राजनीतिक, दलबन्दी की उपेक्षा कर सभी नागरिकों, आप्रवासियों, अश्वेतों को समान रूप से बिना किसी भेदभाव के जीविकोपार्जन के अवसर मुहैय्या करवाये जाते हैं और शान से सम्माननीय जीवन-यापन करने का परिवेश प्रदान किया जाता है। छोटे से छोटे कार्य को और इनके करने वालों को वहां हीन भावना से नहीं देखा जाता 'कार्य सभी महान है' यह नारा अमेरिका का ही है।

सहानुभूतिपूर्ण अमेरिका

अतुलनीय धन सदैव दयालुता और सहानुभूति या सहयोग को जन्म नहीं देता किंतु अमेरिका इसका अपवाद है। विश्व में कहीं अकाल पड़ा हो, अनावृष्टि-अतिवृष्टि, बाढ़ आदि से लोग त्रस्त हों तो अमेरिका ने बिना किसी भेदभाव के पीड़ित राष्ट्रों की खुलकर मदद की है। सन् 2000 में अमेरिका की सहायता राशि 200 (बिलियन) डालर तक पहुँच गई थी जो कि समस्त संसार के राष्ट्रों द्वारा की गई सहयोग राशि से कई गुना अधिक थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय हजारों लाखों करोड़ों डालर की मदद अमेरिका ने मित्र राष्ट्रों को दी एवं सोवियत रूस को भी काफी मात्रा में धन एवं अस्त्र-शस्त्र प्रदान किये और अपने आपको आवश्यकता में काम आने वाले मित्र के रूप में सिद्ध किया।

औषधियाँ

औषधि विज्ञान के क्षेत्र में समस्त विश्व की आँखें अमेरिका के शोध एवं आविष्कारों पर लगी रहती है। नवीन से नवीन एवं कारगर औषधियों का आविष्कार अमेरिका के ही वैज्ञानिकों ने जटिल से जटिल बीमारियों के निवारणार्थ किया है। यथा पोलियो, पीतज्वर, राजयक्ष्मा (टी.बी.), केंसर आदि के अचूक उपचार के लिये वैक्सीन, कीमोथिरेपी, सीटी स्केन, एम.आर.आई. के अतिरिक्त अन्य कई जीवनदायी वैज्ञानिक पद्धतियों और औषधियों का आविष्कार अमेरिका ही में हुआ है जिनका अनुसरण व प्रयोग कर अनेकों राष्ट्रों के अनेक रोगियों का उपचार हो रहा है।

हृदय रोग और कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियों के उपचार हेतु तो आज भी सम्पन्न व समर्थ लोग अमेरिका ही जाकर उपचार करवाते हैं।

मानवीय सफलताएँ (उपलब्धियाँ)

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने मानवीय धरातल पर मानवता की रक्षा, सुरक्षा, सुविधा और शांतिपूर्ण समृद्ध जीवन-यापन करने व विश्व के मनुष्यों को करवाने के लिये अनेक नये-नये आश्चर्यजनक आविष्कार, साहसिक अभियान यहां तक कि मानवता की रक्षा के लिये राष्ट्र की जान भी जोखिम में डालकर अनेक युद्ध भी किये हैं। अभी-अभी के ताजा युद्ध अभियानों में अफगानिस्तान तथा इराक इसके ज्वलंत उदाहरण है।

अमेरिकन नील आर्म्सस्ट्रांग ने ही सर्व प्रथम चन्द्रमा की सतह पर पैर रखा और अब वहां मानवहित की योजनाओं को क्रियान्वित करने के प्रयत्न भी नासा ही कर रही है।

ध्वनि को तोड़ना और उसकी शक्ति का निर्माण कार्यों में प्रयोग करना अमेरिका ही कर रहा है।

पनामा नहर का निर्माण किसने किया? अमेरिका ने। व्यापारिक जहाजों के आवागमन में इस नहर का अत्यधिक योगदान है जो विश्व समुदाय की समृद्धि को बढ़ा रहा है।

स्वचालित यांत्रिकी जगत

आटोमोबाइल के क्षेत्र में भी अमेरिका का प्रशंसनीय योगदान है। सारा संसार अमेरिकन हेनरी फोर्ड के नाम से परिचित है। जिन्होनें अपने अथक परिश्रम से चतुष्पदी कार का आविष्कार कर विश्व के व्यापार को समृद्ध किया। आज सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी कार के आनन्द का उपभोग कर रहा है। यह महान अमेरिका की ही देन व दिशा निर्देश है कि विश्व की हजारों बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ आटोमोबाइल के क्षेत्र में तरह तरह के आविष्कार कर अपना उत्पादन संसार के बाजार में बेचकर समृद्धि के शिखर पर पहुंच रही है। इस समृद्धि का जनक तो अमेरिका ही है।

मनोरंजन के क्षेत्र में अमेरिका का योगदान

यह तो एक अकाट्य सत्य है कि विश्व के संगीत प्रेमी अमेरिकन संगीत से प्रभावित हैं, और छायाचित्रों, चलचित्रों में हॉलीवुड विश्व का सिरमौर बना हुआ है। हॉलीवुड के निर्देशकों ने मानव और मानव जीवन के हर पहलू का सूक्ष्मतम निरीक्षण कर उसे चलचित्रों द्वारा संसार के समक्ष प्रस्तुत किया है।

स्वतंत्रता की रक्षा और सहायता

'जीओ और जीने दो' का सिद्धान्त मूर्तरूप में और सहीरूप में जिंदा है तो वह अमेरिका के संविधान और उसकी क्रियान्विती में है। विश्व में सर्वशक्तिमान राष्ट्र होते हुए भी अमेरिका क्षेत्र विस्तार, उपनिवेशवाद आदि अमानवीय विचारों से कोसों दूर है। अमेरिका ने तो अन्य राष्ट्रों को जो अधिनायकवाद की यंत्रणाओं से तस्त्र थे उन्हें मुक्त करने में अपना सब कुछ झोंकने का भी साहस किया है। समस्त विश्व को शांति और करूणा का संदेश देने वाला एकमात्र राष्ट्र अमेरिका ही है। इसीलिये तो अमेरिका 'संयुक्त राष्ट्र अमेरिका' के संगठन और 'विश्व बैंक' संगठन में अग्रणी है।

मनुष्य की प्रथम आवश्यकता उसकी "स्वतंत्रता" है। अमेरिका मनुष्य की इसी भावना का सम्मान करता है और ऐसे प्राणी को, समुदाय को, समाज को या राष्ट्र को उसकी मदद केवल उसे "स्वतंत्रता" दिलाने के लिये करता आया है। प्रथम विश्वयुद्ध एवम् द्वितीय विश्वयुद्ध में अमेरिका के योगदान कौन भूल

सकता है। उसके घोर शत्रु रूस की "स्वतंत्रता" के बचाव और सुरक्षा में सबसे आगे रहा है। द्वितीय विश्वयुद्ध में विश्व विजय के आकांक्षी क्रूर अधिनायक एडोल्फ हिटलर और उसके सहयोगी मुसोलिनी एवं तोजो की शक्ति का नाश उसके ही मित्र राष्ट्रों ने किया और मित्र राष्ट्रों में भी सबसे अधिक शक्तिशाली अमेरिका ने, अन्यथा मानवता एडोल्फ हिटलर के गैस चेम्बरों में जलकर राख हो रही थी।

युद्ध के पश्चात ऐतिहासिक घोषणा पत्र जिसका कि नाम "एटलांटिक चार्टर" विख्यात है- तत्कालीन अमेरिका के राष्ट्रपति फ्रेंकलिन रूजवेल्ट और इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल के हस्ताक्षरों व अन्य मित्र राष्ट्रों की सहमति से पारित किया गया जिसका मूल उद्देश्य अन्य राष्ट्रों में मानवता की "स्वतंत्रता" की रक्षा करना ही था और जिसका अकेला अमेरिका राष्ट्र ही है जो अक्षरशः पालन करता आ रहा है चाहे उसे कितने ही विरोधों का सामना क्यों न करना पड़े।

यह एक ऐतिहासिक महत्वपूर्ण बात है कि द्वितीय विश्वयुद्ध में भी अमेरिका साम्राज्य विस्तार या भूमि अधिग्रहण या औपनिवेशिक महत्वाकांक्षा के कारण युद्ध में नहीं उतरा था। यहाँ भी उसका एकमात्र लक्ष्य मानवता की स्वतंत्रता की रक्षा करना ही था। उसका मूल उद्देश्य लोकतंत्र तथा मानवाधिकारों को सुरक्षा प्रदान करना ही था।

जब विंस्टन चर्चिल और फ्रेंकलिन रूजवेल्ट एटलांटिक महासागर पर एटलांटिक चार्टर को अंतिम रूप देने उपस्थित हुए तो चर्चिल अपने अन्य उपनिवेशों को तो मुक्त करने के लिये तैयार हो गये किंतु अपने सबसे बड़े उपनिवेश भारत को पूर्ण स्वतंत्रता नहीं देने पर अड़ गये जबकि अपनी पूर्ण स्वतंत्रता की आशा में महात्मा गांधी के कहने पर भारतीय कांग्रेस ने द्वितीय विश्वयुद्ध में शासक की भरपूर मदद की थी पर चर्चिल मुकर गये। ये फ्रेंकलिन रूजवेल्ट ही थे जिनके दृढ़ प्रतिवाद पर ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल को भारत को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करने के लिये सहमत होना पड़ा। उसी ऐतिहासिक "एटलांटिक चार्टर" का संक्षिप्त प्रारूप यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

एटलांटिक चार्टर

ऐतिहासिक "एटलांटिक चार्टर" ब्रिटिश प्रधानमंत्री विस्टन चर्चिल एवं संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के राष्ट्रपति फ्रेंकलिन रूजवेल्ट की सम्मिलित सहमति द्वारा दिनांक 14 अगस्त 1941 मध्य एटलांटिक महासागर पर पारित किया गया।

"सभी मनुष्यों के मानवाधिकारों का सम्मान करते हुए और उनके अपनी सरकार चुनने, जिसके तहत वे अपनी संप्रभुता, स्वतंत्रता और मानवाधिकारों का उपयोग कर सके जिससे उन्हें शक्तिपूर्वक दबाकर अलग रखा गया था उनसे छीन लिया गया।"

उपर्युक्त "एटलांटिक चार्टर" एक महत्वपूर्ण दस्तावेज या यों कहें कि घोषणापत्र है जो युद्ध के उद्देश्यों उसके सिद्धातों पर प्रकाश डालता है। यह घोषणापत्र "उपनिवेशवाद", "साम्राजय विस्तारवाद", "मानवाधिकार हननवाद" का खुला विरोध करता है जो दो महान एवम् शक्तिशाली राष्ट्राध्यक्षों की सहमति व हस्ताक्षरों से पारित हुआ।

1942 के अक्टूबर माह का भाषण, अमेरिकी प्रेसिडेंट रूजवेल्ट के शक्तिशाली तत्व को उजागर करती है। दूसरे ही दिन माननीय रूजवेल्ट ने प्रेस को पुनः आश्वस्त किया कि "एटलांटिक घोषणा पत्र" विश्व के समस्त राष्ट्रों को अपने ही लोगों से लोकप्रिय सरकार चुनने का अधिकार प्रदान करता है। यह मानव जगत की अभूतपूर्व विजय है।

यह अमेरिका का ही प्रयास है कि आज पृथ्वी के अधिकांश राष्ट्र उपनिवेशवाद की यातना से मुक्त होकर स्वतंत्रता की सांस ले रहे हैं।

यह एकमात्र अमेरिका ही का प्रयत्न था कि इस घोषणा पत्र के बाद "संयुक्त राष्ट्र संघ" का गठन हुआ जो आज 58 वर्षों से विश्व राष्ट्रों के हितार्थ प्रयत्नरत है और जहाँ तक बन पड़ा है विश्व राष्ट्रों को युद्ध की विभीषिका से दूर ही रखा। यह अमेरिका ही है जिसने हजारों सैनिक उच्चाधिकारियों को कोरियन पैनिनसुला में भेजकर "संयुक्त राष्ट्र संघ" के सचिव द्वारा सुझावों को मनवाने का प्रयत्न किया तथा ऐसा ही युद्ध के इच्छुक अन्य राष्ट्रों को भी रोकने में करता आ रहा है।

1962 में पुनश्चः अमेरिकन सैनिक मध्यस्थता ने ही "भारत चीन" युद्ध को युद्ध विराम दिलवाया। भारत और अफ्रीका को निरंतर P.L. 480 के नाम से दी जाने वाली खाद्य सामग्री (गेहूँ) व औषधियों ने लाखों करोड़ों की प्राणरक्षा की है। 1960 के दुर्भिक्ष में तो भारत के विशिष्ट भागों में P.L.480 की सामग्रियों से ही मनुष्यों को जीवनदान मिला।

यह अमेरिका की ही कूटनीति थी कि जिसने कट्टर साम्यवादी स्टालिन की महत्वाकांक्षा, जो सम्पूर्ण यूरोप एवं विश्व के अनेक भागों को जीतकर साम्यवादी लोहे की दीवार में घेर लेने की थी, उसे ध्वस्त कर दिया। इस शीतयुद्ध में अमेरिका विजयी ही नहीं विश्व का सर्वशक्तिमान राष्ट्र बनकर उभरा है। रूस के पराभव के बाद कोई राष्ट्र विश्वपटल पर नहीं है जो अमेरिका को चुनौती देने की सामर्थ्य रखता है।

क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि समाजवाद के नाम पर फैलने वाला साम्यवाद, जिसने अपने ही देश में तीस लाख आदमियों को मौत के घाट उतार दिया और सारे नागरिकों को लौह दीवार में कैद कर लिया, बाहरी दुनियाँ से उनका सम्पर्क ही काट दिया। यदि ऐसा नृशंस शासन विश्व में फैलता तो क्या होता? गुलाग नाम के नागरिकों के मृत्यु केन्द्र जो रूस में यत्र-तत्र स्थापित किये गये थे यदि विश्व में भी स्थापित होते तो स्वतंत्र मानव एवम् मानवता का कितना ह्रास होता। कोई समाज सुधारक सिद्धान्त या मानवता को प्रगति दिलाने वाला सिद्धान्त बन्दूक या तलवार की नोक से नहीं मनवाया जाता, यदि मनवाया जाता है तो वह मानवता की सुरक्षा नहीं वरन हत्या है।

स्टालिन और उसके संयुक्त सोवियत संघ ने मानवता की नृशंस हत्या की, परिणामतः आज शासन व्यवस्था उसी के नागरिकों के हृदय में अविश्वसनीय हो गई और सोवियत संघ खंड-खंड होकर बिखर गया। चीन के राष्ट्रनायक माओत्सेतुंग ने भी अपने नागरिकों के साथ यही किया। यहाँ भी तुंग की नृशंस राष्ट्रनीति जिसको सुन्दर नाम दिया गया ''सांस्कृतिक क्रांति'' ने तीस लाख नागरिकों को मौत के मुंह में धकेल दिया। क्या ये समाजवादी समाज सुधारक या साम्यवादी अधिनायक, नाजी हिटलर, मुसोलिनी से कम अन्यायी है।

यह अमेरिका ही था जिसने मनुष्यता की सुरक्षा की आशा जगाई। अपने राष्ट्रों में मानव अधिकारों को खो देने वाले, अपनी नागरिक स्वतंत्रता को खो देने

वाले लाखों नागरिक स्वेच्छा से अमेरिका में आकर बस गये और अमेरिका ने उन्हें अपने देश की नागरिकता प्रदान कर स्वतंत्रता से उन्मुक्त वातावरण में जीने के अधिकार प्रदान किये। आज ये अन्य राष्ट्रों से आकर बसे हुए नागरिक अमेरिका के ध्वज, संविधान और राष्ट्र के प्रति अपनी जान की बाजी लगाने को भी तत्पर है। अपनी अंतिम सांस तक ये अमेरिका के मानवतावादी सिद्धान्तों, मानव अधिकारों की सुरक्षा के लिये अमेरिका के ध्वज तले बलिदान होने को तत्पर है।

अमेरिका में आज 98 प्रतिशत ऐसे नागरिक हैं जो विश्व के भिन्न-भिन्न 100 राष्ट्रों से आकर यहां बस गये हैं और अपने छोड़े हुए वतन से कई गुणा अधिक सुरक्षित धर्मांधंता मानते हैं। न यहां धर्मांधंत्ता है और न ही वादों-प्रतिवादों की कट्टरता जिनकी जकड़न में सदियों से मानवता कैद रही, उनका मुक्तिदाता अमेरिका है, केवल अमेरिका। इस राष्ट्र की संवैधानिक राष्ट्र हित जो मानव अधिकारों की सुरक्षा का लौहकबन्ध है सभी अन्य राष्ट्रों के लिये अनुकरणीय एवमं अनुगमनीय होना चाहिये, तभी सारा संसार संकुचित धर्मवृत्ति, संकुचित राजनीति, संकुचित वर्ग भेद, वर्णभेद, जाति भेद के दमघोंटू वातावरण से मुक्त हो सकेगा। यह अमेरिका ही है जिसने भावना प्रधान जीवन जीने का संदेश विश्व को दिया।

अन्य राष्ट्रों में कोई विदेशी आकर बसता है तो आजीवन विदेशी ही बना रहता है। द्वितीय श्रेणी के नागरिक के रूप में उसका उतना सम्मान अथवा सामाजिक मान्यता नहीं मिलती जितनी प्रथम श्रेणी के नागरिक को मिलती है। अमेरिका आये हुए प्रवासी को भुजायें फैलाकर गले लगाता है और उसे अपने सहयोग, मृदुव्यवहार, आत्मीयता से विदेशी होने का एहसास तक नहीं होने देता।

राष्ट्र में आर्थिक प्रतियोगिता के कारण, साम्राज्य विस्तार की नीति के कारण, धर्मांधता के कारण जहाँ भी युद्ध होने की संभावना होती है, अमेरिका पहला राष्ट्र है जो दोनों राष्ट्रों के मध्य साहस से खड़ा होकर - साम, दाम, दण्ड, भेद किसी भी नीति द्वारा उन्हें अपने झगड़े या मसले शांति वार्ताओं द्वारा सुलझाने को बाध्य करता है।

अन्य राष्ट्रों से जब कभी अमानवीय अत्याचारों से दबे लोगों की पुकार अमेरिका के कानों में पड़ी है तो उसने संयुक्त राष्ट्रसंघ के माध्यम से या संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की सीनेट के माध्यम से ऐसे लोगों को विपुल सहायता प्रदान की है और उस राष्ट्र की निरंकुश, स्वेच्छाचारी अधिनायकवादी शासक या शासन मण्डली के घुटने टिकाये हैं। अफगानिस्तान और इराक तो इसके ताजा ज्वलंत उदाहरण हैं।

अमेरिका विश्व समुदाय में शांति स्थापना के लिये, लोकतंत्र की सुरक्षा के लिये तथा मानवाधिकारों की रक्षा करते हुए मनुष्य को मुक्त, स्वाभिमानी और प्रगतिशील जीवन देने का प्रबल पक्षधर है। इन सिद्धान्तों की रक्षा सुरक्षा के लिये यह अपने शक्तिशाली राष्ट्र की शक्ति को किसी भी हद तक झोंक सकता है।

संसार के सभी स्वतंत्र वृत्ति के लोग, लोकतंत्र को चाहने वाले लोग, मानवाधिकारों के पक्षपाती लोग इन्हीं सब कारणों से अमेरिका को चाहते हैं और इस राष्ट्र के स्थायित्व की कामना करते हैं।

अध्याय -2
''लोग अमेरिका को क्यों चाहते हैं''

लोगों में अमेरिका के प्रति चाहत का कारण

विश्व शांति, लोकतंत्र और मानवाधिकार सुरक्षा में अमेरिका का योगदान अद्वितीय है। इस राष्ट्र ने अपने वैज्ञानिकों के अथक परिश्रम द्वारा विश्व को भौतिक सुख-सुविधा के अनेक साधन प्रदान किये हैं यथा कार, दूरदर्शन, वायुयान, बिजली के बल्ब, चलचित्र (सिनेमा) दूरभाष (टेलीफोन) और क्या-क्या नहीं दिया जिसके कारण विश्वसमुदाय को व्यापार की प्रगति में, शिक्षा की उन्नति में तथा आपातकाल के समय जनसुरक्षा तथा तीव्रगति से सहायता में बहुत कुछ मदद मिली। मानवाधिकार की सुरक्षा, लोकतंत्र की सुदृढ़ता के लिये तो अमेरिका विश्व के लिये मार्ग दिखलाने वाला प्रकाशस्तंभ है। अनगिनत कारण हैं जिसके चलते विश्व के अनेक राष्ट्र अमेरिका को चाहते हैं, उसे प्यार करते हैं। कतिपय उल्लेखनीय उपलब्धियों का मैं नीचे संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत करता हूँ :

1. लोग जानते हैं कि यह अमेरिका की ही महाशक्ति थी जिसने हिटलर-मुसोलिनी जैसे अधिनायकों की बर्बर नीति से, जिसके तले मानवता दम तोड़ रही थी, उससे उसकी सुरक्षा की।

2. लोग जानते हैं कि भूकंप, अनावृष्टि, अतिवृष्टि की भयंकर त्रासदी के समय त्वरित सहायता अमेरिका ही से प्राप्त होती है। पी.एल. 480 तो त्रासदी के समय बभुक्षितों- दुर्घटनाग्रस्त लोगों के लिये ईश्वरीय वरदान की तरह अनाज-औषधियाँ और अन्य आवश्यक सामग्रियाँ लेकर आता है और जीवन प्रदान करता है।

3. यह अमेरिका की ही विश्वमानव हितार्थ रचनात्मकता एवं शोधधर्मिता है कि करोड़ों डालर का अमेरिका अकेला निवेशक बनकर भिन्न-भिन्न प्रकार की औषधियों पर रिसर्च कर प्रकाश में लाता है और उन्हें जटिल रोगों के निवारण के योग्य बनाता है। यह 12 ट्रिलियन अमेरिका के कोष की ही सामर्थ्य है कि विश्व के अन्य राष्ट्रों पर बोझ डाले बिना ही वह यह सारा व्यय स्वयं वहन कर मानवता का हित करता है।

4. विश्व पटल पर अनेक छोटे बड़े राष्ट्र इस बात से आश्वस्त हैं कि उनकी स्वायत्तता, मानवाधिकार और राष्ट्र की सीमाएं अमेरिका के कारण सुरक्षित है । कोई भी अन्य राष्ट्र यदि उन पर आक्रमण कर उन्हें गुलाम बनाने का प्रयत्न करेगा तो अमेरिका की सैन्य शक्ति उसका बचाव अवश्य करेगी। समस्त विश्व जानता है कि इराक और इरान के जबड़ों के मध्य चीखते कुवैत की रक्षा अमेरिका ही ने की थी।

5. 'स्लावोविच' की अधिनायक बर्बर प्रवृति के चलते जब मुस्लिम युगोस्लाविया में आतंकित किये जा रहे थे तथा नित्य नृशंस हत्याएं हो रही थी तब सारे विश्व ने चुप्पी साध रखी थी। किसी भी राष्ट्र ने बर्बर स्लावोविच का विरोध नहीं किया। एकमात्र अमेरिका ही था जिसने साहस के साथ स्लावोविच का मुकाबला कर उसे परास्त किया और उस पर मानवाधिकारहंता - मानव स्वतंत्रताहंता का आरोप लगाकर यू.एन.ओ. की विश्व सुरक्षा परिषद को सौंप दिया। अमेरिका ने यह कार्य युगोस्लाविया से कुछ हड़पने के लालच से नहीं किया था। यह तो उसके शाश्वत अटल सिद्धान्तों की पुकार थी जो मानवता की रक्षा के लिये निस्वार्थ भावना से उसे करनी थी।

6. सारा विश्व जानता है कि अमेरिका ने पर्यटन को बढ़ावा देकर अनेक राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में मदद की है और निरंतर कर रहा है। पर्यटन के कारोबार में लाखों को रोजगार दिलाने वाला विश्व के राष्ट्रों में अग्रणी है जो करोड़ों डालर पर्यटन के प्रसार-प्रचार पर व्यय करता है।

7. किसी राष्ट्र पर आक्रमण या वहां पर सैन्य कार्यवाही अमेरिका साम्राज्य प्रसार की भावना से नहीं करता। उपनिवेशवाद का वह कट्टर विरोधी है। वह अपनी सैन्य शक्ति का अन्य राष्ट्रों में प्रयोग वहां के नागरिकों को बर्बरताओं से अत्याचारों से बचाने के लिये करता है। एक इंच भी भूमि का अधिग्रहण उसने उन राष्ट्रों में नहीं किया जहाँ उसकी सैन्य शक्ति के कारण वह मुक्त कराया या अधिनायक के निरंकुश शासन से मुक्त हुआ। द्वितीय महायुद्ध में जर्मनी, इटली, जापान इत्यादि तथा वर्तमान में इराक, अफगानिस्तान इसके ज्वलंत उदाहरण है।

8. अमेरिका सदैव ही शिक्षा और कला के संवर्धन में अग्रिणी रहा है। उसने विशाल और सुप्रबंधित विश्वविद्यालय स्थापित किये और समस्त विश्व के छात्रों को खुले हृदय से आव्हान किया। चीन माओवादी व साम्यवादी होते हुए भी अपने हजारों छात्रों को शिक्षा प्राप्त करने हेतु अमेरिका भेजता है। भारतीय छात्र भी अमेरिका में शिक्षा ग्रहण कर सम्माननीय नौकरियाँ पाने में सफल होते हैं। अमेरिका लाखों छात्रों को अमेरिकन छात्रवृतियाँ देकर उनकी योग्यता बढ़ाने में खुले हृदय से सहयोग करता है।

9. संसार देख चुका है कि अमेरिका ही संसार में एकमात्र देश है जहां का शासनतंत्र और वहां के राजनैतिक सिद्धांन्त, वहाँ का संविधान मानवाधिकारों एवं मानवता के लिये समर्पित है। इतनी बड़ी सैन्य शक्ति के होते हुए भी वहां तख्तापलट या शासन प्रणाली को जबरन हिलाने का साहस कोई भी नहीं कर पाता है – न सेना – न विरोधी दल। यही कारण है कि विश्व समुदाय अपनी मुद्राओं को डालर में बदलकर अमेरिकन बैंकों में रखने ही में अपने धन की सुरक्षा समझता है। 225 वर्षों के स्थायी लोकतांत्रिक सिद्धान्तों की ताकत ने विश्व को अमेरिका की शक्ति और स्थायित्व को मानने के लिये मजबूर कर दिया है।

10. विश्व के अनेक राष्ट्रों के मुकाबले अमेरिका में पत्रकारिता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बहुत व्यापक एवं सशक्त है। लोकतंत्र का यह मजबूत आधार है। अमेरिका में पत्रकारिता की स्वतंत्रता पर या प्रचारतंत्र के अन्य साधनों पर शासन का अनचाहा दबाव कहीं भी नही हैं। यही कारण है कि 'न्युयार्क टाइम्स' और समाचार सप्ताह (न्यूजवीक) अखबार व पत्रिका अमेरिका में बहुत ही विश्वसनीय और लोकप्रिय है। अमेरिकी चैनल सी.एन.एन. तो अपनी निष्पक्ष और तेज खबरों के कारण विश्व प्रसिद्ध है। यहां तक की मुस्लिम देश भी सी.एन.एन की खबरों पर पूर्ण विश्वास करते हैं।

11. हर नस्ल के, हर वर्ण के, हर रंग व विश्व के किसी राष्ट्र के अप्रवासी यहां इस राष्ट्र में अपनी अस्मिता, अपना सम्मान बनाये रखते हुए जीविकोपार्जन के अतुल साधनों का उपभोग कर सकते हैं। यह असंदिग्ध तथ्य है कि हर कार्य को 'महान कार्य' मानने वाला अमेरिका हर इंसान को उसमें छुपी सम्भावनाओं को पूरा सम्मान देता है।

12. अमेरिकन सिनेमा जो चार शताब्दी से विश्व को मनोरंजन, स्वस्थ साहित्य और जीवन के लिये दिशा निर्देश प्रदान कर रहा है, ऐसा विश्व के अन्य चलचित्रों में देखने को नहीं मिलता। संसार के सभी हिस्सों में अमेरिकन फिल्में बड़े चाव से देखी जाती हैं। युवा पीढ़ी को माइकल जेक्सन व ब्रिटनी स्पीयर्स का संगीत तो पागल बनाये हुए है। विश्व के युवा हृदयों को स्पंदित करने का माद्दा अमेरिकन संगीत में निहित है।

13. दूरदर्शन हो या संचार तंत्र हो, अंतरिक्ष हो या कि ग्रह मण्डल हो, पृथ्वी में सुदूर स्थित भाग हो या सागर की अतल गहराई हो, अमेरिकन विज्ञान ने आधुनिकतम तकनीक अपनाकर विश्व को नया मार्ग दिखलाया है।

14. वर्तमान में अमेरिका अंतरिक्ष अभियान और शोध विशेषतः गृहमंडल शोध और भविष्यवाणी करने में सर्वोपरि है - उसका वस्तुतः इस क्षेत्र में भी योगदान सबसे अधिक है।

अध्याय – 3
27 सूत्रीय एक्शन प्लॉन

अमेरिका की विश्वहित और विश्वशांति की योजनाओं को तभी सही माना जाएगा जब विश्व के बुद्धिजीवी एवं राजनीतिज्ञ उसकी वास्तविक योजनाओं को जो कि सही नीतियों पर आधारित हैं और निष्पक्ष भाव से उनकी त्वरित क्रियान्विती होती है, इस क्रियान्विती और सही नीतियों का आंकलन बुद्धिजीवियों को निष्पक्ष भाव से करना चाहिये।

यदि अमेरिका भी अपनी योजनाओं को सही तरीके से क्रियान्वित करे तो उसकी वार्षिक आय तीन ट्रिलियन डालर से 5 ट्रिलियन डालर मात्र 5 वर्ष ही में हो सकती है। 5 वर्ष में व्यय होगा 30 5 150 बिलियन डालर जो कि वर्धित आय से 3 प्रतिशत कम होगा। अस्तु अपने कोष की वृद्धि के लिये निम्नलिखित सुझाव अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं :

1. आतंकवादी समूह अमेरिका से घृणा क्यों करते हैं? उनका हृदय परिवर्तन किस प्रकार किया जा सकता है? इसके लिये सर्वोत्तम उपाय है विचारों का निरंतर आदान-प्रदान। संवादहीनता से बन्दूक उठती है और बन्दूक किसी समस्या का समाधान नहीं होता। आखिर किस विरोधाभासिता के कारण आतंकवाद पनप रहा है, यह पता लगाना नितान्त आवश्यक है। आतंकियों के हृदय और मस्तिष्क का परिवर्तन करूणा, सहानुभूति, अहिंसा और वैचारिक क्रांति के द्वारा किया जाना चाहिये।

   कुल व्यय – 3.4 बिलियन डालर

2. मध्यपूर्व में शांति स्थापना को स्थायित्व देने के लिये यह आवश्यक है कि पहले इराक में लोकतंत्र व शांति स्थापित की जाये। इसमें अनुमानतः कुल व्यय

   1 बिलियन डालर

3. **विदेशों से आयातित तेल पर आधारित नहीं रहना**
   अमेरिका को विदेशों, जैसे मध्यपूर्व एशिया के देश और वेनेजुएला, वोलेटाइल (मध्यपूर्व) आदि तेल के आयात पर आधारित रहने के बजाय

स्वयं अपने तेल स्त्रोतों की खोज करनी चाहिये। तेल पर आत्मनिर्भर होना अमेरिका के लिये नितांत आवश्यक है । श्री रोज पैरोल की अध्यक्षता में एक 'राष्ट्रीय उर्जा परिषद' का गठन करना भी अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगा।

कुल व्यय – 3 बिलियन डालर
विदेशों से आयात से कुल बचत – 20 बिलियन डालर

4. **सुरक्षा का सुदृढ़ीकरण**

सुरक्षा के वर्तमान ढंग में भारी परिवर्तन की आवश्यकता है। अमेरिका को अपनी सैन्य शक्ति में संचार और सूचना का तीव्रगामी प्रचार व प्रसार करने वाली यांत्रिकी का और अधिक फैलाव करना चाहिये। गुप्तचर विभाग को भी आधुनिक यंत्रों से सुसज्जित व सुसंगठित करना अत्यन्त आवश्यक है।

कुल व्यय – एक बिलियन डालर

5. **ई- संचालन (E-Governence)**

वर्तमान युग में कम्प्युटर की उपलब्धियों को और उसकी त्वरित कार्य प्राणली को देखते हुए सैन्य अथवा प्रशासनिक क्रिया कलापों का रिकार्ड कम्प्युटर में संग्रहित व संचालित होना चाहिए। संवाद संचार ई–मेल द्वारा किये जाने पर शीघ्रगामी परिणाम होंगे साथ ही अपेक्षित कार्यवाही में भी विलम्ब नहीं होगा। 90 प्रतिशत कागज की बचत अलग से होगी। यह इलेक्ट्रॉनिक युग है।

6. **दस लाख अमेरिकन्स को प्रतिवर्ष रोजगारोन्मुखी आधुनिकतम प्रणालियों में कैसे प्रशिक्षित किया जाये?**

आधुनिकतम 1000 रोजगारोंन्मुख पद्धतियाँ एवं तकनीक प्रतिवर्ष दस लाख अमेरिकन्स को प्रशिक्षित व योग्य बना सकती हैं। अस्तु आधुनिकतम पद्धतियों के अधिक से अधिक प्रशिक्षण केन्द्र खोले जायें तथा नौजवानों को अधिक से अधिक प्रशिक्षण लेने हेतु प्रोत्साहित किया जाय।

कुल व्यय – 5 बिलियन डालर
जी.एन.पी. में 500 बिलियन डालर की निश्चित वृद्धि

7. **पाँच वर्ष में किसान वर्ग की आमदनी द्विगुणित कैसे की जाए?**

इसके लिये हमारा 'एक्शन प्लान' कई ऐसे जरीये और योजनायें प्रस्तुत करता है जिसके द्वारा किसान वर्ग की आमदनी की क्षमता दुगनी की जा सकती है।

कुल व्यय - 1.5 बिलियन डालर
कुल बचत - 5 बिलियन डालर

8. **सभी लोगों को मुफ्त कम्प्यूटर शिक्षा कैसे दी जाये?**

वर्तमान इलेक्ट्रॉनिक युग में अमेरिका को अग्रणी देश का सम्मान इस योजना से मिल सकता है। वैसे अमेरिका में कम्प्युटर प्रशिक्षित नागरिक बहुत है किंतु अभी भी इस क्षेत्र में बहुत कुछ करना शेष है।

कुल व्यय - 1 बिलियन डालर

9. **नि:शुल्क विश्वविद्यालयों की स्थापना**

यह बहुत ही महत्वाकांक्षी योजना है जिसके दूरगामी परिणाम बहुत ही प्रभावी और लाभदायक हो सकते हैं। अमेरिकन सोसायटी में शिक्षा के नये आयाम विशाल क्षेत्र में स्थापित हो सकते हैं।

कुल व्यय 1 बिलियन डालर

10. **शिक्षा पद्धति में सुधार एवं संशोधन**

किसी भी सभ्य समाज के निर्माण में शिक्षा प्रथम आवश्यकता है। सही अर्थ में शिक्षित समाज ही सभ्य समाज का रूप धारण कर सकता है। अमेरिका में भी शिक्षा में कई प्रकार के सुधार और संशोधनों की नितांत आवश्यकता है, इस हेतु श्रीमान् विलियम बैनेट की अध्यक्षता में तुरंत एक समिति का गठन किया जाना चाहिए।

कुल व्यय - एक बिलियन डालर

11. **पर्यटन को बढ़ावा रोजगार में वृद्धि करता है**

पर्यटन में निरंतर विकास और पर्यटकों को आकर्षित करने की योजनायें अमेरिका राजस्व में 30 बिलियन डालर की वृद्धि कर सकता है और 3 लाख अतिरिक्त रोजगार प्रदान कर सकता है। नि:सन्देह यह योजना

अमेरिका के राजस्व कोष में अतुलनीय वृद्धि व अमेरिकन नागरिकों को अत्यधिक नये रोजगार प्रदान कर सकती है।

कुल व्यय – 1 बिलियन डालर
कुल अतिरिक्त आय – 30 बिलियन डालर

12. **नूतन और आधुनिकतम तकनीकी से लाभ**

यदि अमेरिका प्रशासन अपने नागरिकों की आधुनिक भौतिक सुविधापूर्ण जीवन शैली को स्थायित्व देना चाहता है तो उसे नवीनतम और आधुनिकतम तकनीकी के विस्तार पर प्रकाश डालना होगा। इस पर विशेष ध्यान देने से अमेरिका के 12 ट्रीलियन डालर की राजकीय सम्पत्ति कई गुना अधिक बढ़कर विश्व में अपना परचम अत्यधिक धनाढ्य व सम्पन्न देश के रूप में खड़ा कर सकती है।

कुल व्यय – 1 बिलियन डालर
आमदनी की वृद्धि 200 बिलियन जी.एन.पी. में

13. **दूरदर्शन का एक नया चेनल जिसका नाम हो 'हेपीनेस' (प्रसन्नता) के द्वारा नैतिकता तथा आध्यात्मिकता के सिद्धान्तों और उनके मूल्यांकन का अनवरत प्रसारण**

जीवन में वास्तविक प्रसन्नता का आधार केवल भौतिक उन्नति ही नहीं है। यह उन्नति आवश्यक है, परन्तु यह सब कुछ नहीं है। उन्नति के आयाम आगे भी हैं। 'हेपिनेस' चेनल के द्वारा मानव के प्रसन्नता प्राप्ति के मूलभूत आधार क्या है? नैतिकता, सादगी, आध्यात्मिक चिंतन आदि बातों का चौबीसों घंटे इस चैनल द्वारा प्रसारण होना चाहिये। सुखी सम्पन्न समाज ईश्वर और आत्मा के बजाय विकृतियों की ओर दौड़ने लगता है। उसे सही दिशा निर्देश आध्यात्म और नैतिकता के सिद्धान्त ही दे सकते हैं। प्राणी को भटकाव से बचा सकते हैं। ड्रग्स, जुआ खेलना, कामुकता, नशाखोरी, एड्स आदि भयानक मानव भक्षी दिशाओं में जाने से रोकने के लिये यह नितांत आवश्यक है कि दूरदर्शन के 'हेपिनैस' चैनल द्वारा शाकाहार का महत्व, योग और ध्यान, स्वाध्याय, निष्काम कर्म, समाज

सेवा, जीवन जीने की कला, कला एवम् साहित्य आदि विषयों के महत्व पर तथा जीवन में इनकी उपयोगिता पर निरंतर प्रकाश डाला जाना चाहिए।

कुल व्यय – 1 बिलियन डालर

14. यद्यपि अमेरिका में स्वास्थ्य रक्षा पर 1.3 ट्रीलियन डालर वार्षिक व्यय किया जाता है फिर भी परिणाम आशानुकूल नहीं है। इसका मुख्य कारण है कि रोग उपचार के जो नये–नये शोध हुए हैं, नई–नई पद्धतियाँ प्रचलित हुई हैं, उन्हें पूर्णरूपेण अमेरिकन चिकित्सा जगत में प्रोत्साहित नहीं किया गया। जबकि यह करना अत्यंत आवश्यक है यथा – होम्योपैथी, प्राकृतिक चिकित्सा, रंग चिकित्सा (रंगों द्वारा उपचार) ध्यान योग द्वारा चिकित्सा, योगासन और स्टेम सेल इत्यादि। इन्हें चिकित्सा क्षेत्र में प्रोत्साहन देने पर,

कुल व्यय – 2 बिलियन डालर

कल बचत – 50 बिलियन डालर

15. **मोटापे पर नियंत्रण**

मोटापे की समस्या अमेरिका में अधिकांश लोगों पर हावी है। यह एक बहुत बड़ी राष्ट्रव्यापी स्वास्थ्य त्रासदी है। लाखों अमेरिकन इससे प्रभावित हैं। पूरी सावधानी और तत्परता से राष्ट्रीय स्तर पर इस समस्या को अमेरिका से समाप्त की आवश्यकता है।

कुल व्यय – 1 बिलियन डालर

कुल बचत – 35 बिलियन डालर

16. **जानलेवा 'एड्स' जैसी भयानक बिमारी को कैसे नियंत्रित करें?**

वर्तमान युग में एड्स का रोग भयानक त्रासदी बन गया है। एशिया और अफ्रीका के अधिकांश क्षेत्रों में इस कालस्वरूप बीमारी ने अपने पंजे फैला रखे हैं। जानलेवा तथा समाज में संक्रमित होने वाली यह बीमारी अमेरिका में न फैले इसके लिये 'एक्शन प्लान' को शीघ्र ही देश में लागू किया जाना चाहिये। एक्शन प्लान के सुझाव इस रोग का दूर तक निराकरण करने में सक्षम है।

कुल व्यय – 1 बिलियन डालर

कुल बचत – 10 बिलियन डालर

17. **यह 'एक्शन प्लान'** आबादी बढ़ने के कारणों का गहराई से पता लगाता है और इसके नियंत्रण हेतु अनेक उपयोगी एवं कारगर सुझाव प्रस्तुत करता है।

कुल व्यय - 1 बिलियन डालर

18. **सड़क दुर्घटनाओं को कैसे कम किया जाय**

सड़क दुर्घटनाओं की बढ़ती संख्या अमेरिकन प्रशासन के लिये एक बहुत बड़ी चुनौती है। इस 'एक्शन प्लान' में अनेक अचूक सुझाव व नियम प्रस्तुत किये गये हैं जिनसे सड़क दुर्घटनाओं की संख्या न्यूनतम की जा सकती है।

कुल व्यय - एक बिलियन डालर

19. **जल प्रबन्धन**

पृथ्वी के 3/4 हिस्से में जल है फिर भी शुद्ध, स्वच्छ एवं रोग रहित जल का नितांत अभाव है। 'एक्शन प्लान' के सुझावों को यदि लागु किया गया तो शुद्ध एवं स्वच्छ जल का यह अभाव दूर किया जा सकता है। शुद्ध एवं स्वच्छ जल पर ही नागरिकों का स्वस्थ रहना निर्भर है।

कुल व्यय - एक बिलियन डालर

20. **भुमि सुधार के कानूनों में संशोधन आवश्यक**

अमेरिका में भिन्न-भिन्न क्षेत्रों और आवासीय क्षेत्रों में भूमि की अलग-अलग कीमतें है। कहीं बहुत कीमतें है तो कहीं कम। यह उपयुक्त नहीं है। भूमि क्रय-विक्रय की एक राष्ट्रीय नीति अत्यन्त आवश्यक है ताकि नागरिकों को अपनी कल्पना साकार करने में सहायता मिल सके। भवन एवं भूमि के नियम राष्ट्र में सब जगह समान होने चाहिये।

कुल व्यय - 100 मिलियन डालर

21. **समृद्धि व प्रगति के लिये जादुई योजना**

आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में ब्याज का स्तर (मूल्य) बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। आर्थिक स्थिति को स्थायित्व ब्याज की दर ही से प्राप्त होता है। आगामी बीस वर्षों के लिये सभी प्रकार के निवेश (फेडरल फंडस) संग्रह संगठनों को ब्याज दर कम करने के निर्देश दिये जाने चाहिये। इस

प्रकार फेडरल और राज्य सरकारें 50 बिलियन डालर (ब्याज भुगतान) प्रतिवर्ष बचाने में सक्षम हो सकेंगी।

कुल व्यय - 00 (शून्य)

कुल बचत - 50 बिलियन डालर

22. प्रतिवर्ष 200 बिलयन डालर बचाने का चमत्कारिक सूत्र

अमरीकी सरकार और कार्पोरेशन्स अनुमानतः 235 बिलियन डालर प्रतिवर्ष वर्ग प्रभाव और लम्बित पड़े भूमि के मुकदमों पर खर्च करते हैं। अस्तु एक नया कानून पास किया जाना चाहिये और इस SHED के अन्तर्गत एक मिलियन से अधिक मुकदमों पर खर्च नहीं होना चाहिये। इस प्रकार अमेरिका की आर्थिक स्थिति में 200 बिलियन डालर का इजाफ़ा निश्चित रूप से होगा।

23. बजट घाटे की कैसे आपूर्ति की जाये?

प्रतिवर्ष अमेरिकन बजट में घाटे की वृद्धि हो रही है। इस घाटे की रोक व बजट को स्थायित्व प्रदान करने के लिये तुरंत निर्णय लिया जाना चाहिये। हमारी योजना (प्लॉन) ऐसे सरल और लाभकारी उपाय प्रस्तुत करती है जिनकी क्रियान्विति से 5 वर्ष के अन्दर केन्द्र (फेडरल) तथा राज्य सरकारों के घाटे को समाप्त किया जा सकता है और बजट को स्थायित्व प्रदान किया जा सकता है।

कुल बचत - 400 बिलियन डालर

24. कर पॉलिसी में सुधार आवश्यक

राष्ट्रीय जी.एन.पी. में कुल 100 बिलियन डालर की वृद्धि

कुल व्यय - कुछ नहीं

25. व्यापार में घाटे को कैसे कम किया जाये?

व्यापार में लाभ के अवमूल्यन को रोकने हेतु स्थायी सुधार आवश्यक हैं। अमेरिकन डालर बचाने व व्यापारिक घाटे को रोकने हेतु सुधारात्मक नवीन नीतियों को लागु किया जाना चाहिये।

कुल व्यय - कुछ नहीं।

प्राप्ति - अमेरिकन डालर का स्थिरीकरण

26. **अमेरिका में रेल यातायात साधनों का नवीनीकरण और सुधार आवश्यक?**

यातायात के साधनों में रेल अमेरिका में अत्यंत अधिक प्रभावी व वस्तुओं के मुल्य निर्धारण में सहायक है। अस्तु रेल के साधनों में अभिवृद्धि, नवीनीकरण, अत्याधुनिक तकनीकी आदि को लागु करने की आवश्यकता है ताकि रेल से होने वाली आय का पूर्ण दोहन किया जा सके और राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि में वृद्धि की जा सके।

कुल व्यय – एक बिलियन डालर

27. **विकल्प योजना 60 बिलियन डालर कर (टेक्स) निरस्त करने की?**

इस योजना से बचे धन को राष्ट्रीय हितकर योजनाओं में व्यय किया जाय जो नागरिकों के लिये अत्यन्त उपयोगी और हितकारी होंगे। बदले में यह योजना निश्चित ही अमेरिकन अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव डालेगी।

एक्शन प्लॉन
(क्रियान्विती की योजना)
कुल व्यय/बचत- एक्शन प्लान लागू करने पर

क्र.	विवरण	डालर में व्यय	आमदनी/बचत डालर में
4	आतंकवादी क्यों अमेरिका से घृणा करते हैं। उनके हृदय कैसे बदले जाएँ कि वे अमेरिका को चाहने लगे।	3.4 बिलियन	- -
5	इराक में शांति प्रगति और स्थायित्व हेतु।	1 बिलियन	- -
6	विदेशी तेल के आयात के विकल्प शोधों पर	3 बिलियन डालर	आयात का 20 बिलियन
7	सुरक्षा का सशक्तिकरण	1 बिलियन डालर	- -
8	ई गवर्नेन्स	1 बिलियन डालर	- -
9	10 लाख अमेरिकन को नये रोजगार व उद्योगों में दक्ष करने हेतु।	5 बिलियन	जी.एन.पी. में 500 बिलियन डालर की वृद्धि
10	किसानों की आय को दुगना करने हेतु	1.5 बिलियन	5 बिलियन
11	सभी नागरिकों को निःशुल्क (फ्री में) कम्प्युटर प्रशिक्षण	1 बिलियन	- -
शिक्षा			
12	निःशुल्क अध्ययन हेतु वर्चुअल विश्वविद्यालयों की स्थापना	1 बिलियन	- -
13	शिक्षा व्यवस्था में सुधार	1 बिलियन	- -
14	रोजगार बढाने के लिये पर्यटन को बढ़ावा	1 बिलियन	30 बिलियन

15	नई तकनीक से लाभ	1 बिलियन	200 बिलियन जी.एन.पी. में वृद्धि
16	अमरीकी समाज में नैतिक व आध्यात्मिक आदर्शों की स्थापना हेतु	1 बिलियन	-
17	स्वास्थ्य सुरक्षा हेतु	2 बिलियन	50 बिलियन
18	मुटापे पर नियंत्रण	1 बिलियन	35 बिलियन बचत की कीमत पर

स्वास्थ्य

19	'एडस' का निवारण	1 बिलियन	10 बिलियन स्वास्थ्य की कीमत पर
20	प्रदूषण नियंत्रण	1 बिलियन	-
21	अमेरिका में सड़क दुर्घटनाओं पर नियंत्रण	1 बिलियन	-
22	जल प्रबंधन	1 बिलियन	-
23	भुमि जोन सुधार	100 बिलियन	-
24	समृद्धि का जादुई सूत्र	कुछ नहीं	50 बिलियन ब्याज की बचत
25	200 बिलियन डालर प्रतिवर्ष बचाने का जादुई फार्मूला	कुछ नही	200 बिलियन की बचत
26	बजट के घाटे को कम करना	कुछ नहीं	400 बिलियन बजट घाटे में कमी
27	कर कानूनों में सुधार	कुछ नहीं	अतिरिक्त जी.एन.पी. 100 बिलियन
28	व्यापार के घाटे में कमी कैसे की जाए?	कुछ नहीं	अमेरिकन डालर का संतुलित होना।
29	रेल व्यवसथा में पूर्ण सुधार	1 बिलियन	-
30	60 प्रतिशत बिलियन डालर टेक्स खत्म करने हेतु।	-	-

अध्याय – 4

आतंकवादी क्यों अमेरिका से घृणा करते हैं?
बदलाव कैसे लाया जाये कि वह अमेरिका को चाहने लगें?

अभी–अभी अमेरिका को अफगानिस्तान और इराक में युद्धरत होना पड़ा। इससे पूर्व वियतनाम में भी दीर्घावधि तक अमेरिका को युद्धरत रहना पड़ा जिसका परिणाम नकारात्मक रहा। इन युद्धों और अमेरिका द्वारा इन युद्ध संचालनों को विश्व के अनेक देशों ने उचित करार नहीं दिया जबकि अमेरिका ने ये युद्ध विश्व समाज के कंटक आतंकवाद को समाप्त करने तथा विश्व में शांति स्थापित करने के लिये ही लड़े थे। अमेरिका को फिर भी आवश्यकता है कि वह ऐसे प्रयास करे कि जो घृणा लोगों के मन में इन युद्धों के चलते बढ़ी है, उसे किसी प्रकार समाप्त किया जाये।

विश्व में इस घृणा का मूल कारण आतंकवादी हैं। अमेरिका वर्तमान में आतंकवाद का सामना सारे विश्व में कर रहा है। अनुमानतः मध्यपूर्व एशिया, यूरोप और लेटिन अमेरिका तथा विश्व के अन्य देश और वहां की 80 प्रतिशत जनता अमेरिका के क्रियाकलापों और संकल्पों को सही रूप से न समझ पाने के कारण ही अमेरिका की निंदा कर रही है और उससे घृणा करती है। अमेरिका की पॉलिसी और विश्व राजनीति पर अमेरिकी सरकार द्वारा की गई सन्धि को अधिकांश देशों की जनता सही नजरिये से समझ नहीं पाई और यही अमेरिका के प्रति घृणा का तथा नापंसदगी का मूल कारण है। इसी नासमझ और विरोधी चिंतन के कारण तमाम उन दुर्घटनाओं को भी अमेरिका के साथ जोड़ दिया जाता है जिसका दूर–दूर तक कोई सम्बन्ध अमेरिकी सरकार से रहा ही नहीं है तथा अमेरिका इन नरसंहारों के प्रति कतई उत्तरदायी नहीं है। यह भ्रामक प्रचार है कि विश्व में घटित किसी भी संहारक घटना का सम्बन्ध सीधे अमेरिका से जोड़कर उसे विश्व मंच पर बदनाम करने का प्रयास किया जाता है। यह लोगों के मन में उपजी अमेरिका के प्रति घृणा का मूल कारण है।

किंतु यदि हम गत 80 वर्षों की घटनाओं का गहराई से अध्ययन करें तो प्रतीत होगा कि अमेरिका के प्रति विश्व जन समुदाय के आक्रोश और घृणा का

कारण क्या है? यह घृणा और आक्रोश जन मन में स्वतः उत्पन्न नहीं हुआ प्रत्युत स्टालिन और माओवादी साम्यवादी दलों ने यह घृणा, जन मन में बाध्यतः पैदा की है। अमेरिका के प्रति लोगों के दिलों में आक्रोश और घृणा पैदा करने के लिये ये दोनों सरकारें लाखों बिलियन डालर व्यय किया करती थी। शीतयुद्ध का यह प्रचार-प्रसार भी एक हिस्सा था। प्रश्न यह है कि साम्यवादी सरकारें क्यों अमेरिका की नीतियों और उसके मूल्यों से घृणा करती थी। क्यों?

उत्तर बहुत साधारण है। लेनिन, स्टालिन और उनके अनुयायी समाजवाद के नाम पर सारे विश्व को अपने फौलादी शिंकजे में जकड़ना चाहते थे। समस्त विश्व पर समाजवाद के नाम पर वे अपना अधिनायकवाद थोपना चाहते थे। समस्त विश्व के सौ देशों में उन्होनें साम्यवादी दल के केन्द्र (शाखा में) स्थापित किये और इनका सीधा नियंत्रण मास्को (रूस की राजधानी) के हाथों में रखा गया।

इसी संदर्भ में द्वितीय विश्वयुद्ध में अमेरिका के द्वारा जापान पर एटम बम गिराने की सहमति मित्र राष्ट्र होने के नाते नाटो रूस की भी थी। किंतु बम गिरा दिये जाने के बाद रूस ने अपना रूख बदल लिया और इस बम द्वारा हुए नरसंहार तथा जापान की तबाही का जिम्मेदार केवल अमेरिका को बतलाते हुए आतंकवादियों की अमेरिका के प्रति घृणा और आक्रोश को खूब उकसा दिया। रूस अमेरिका की आणविक शक्ति के समक्ष स्वयं को कमजोर मानता था, इसीलिये उसने सैन्यबल के आधार पर कभी सीधे अमेरिका से संघर्ष नहीं किया। अमेरिका की सैन्य शक्ति निःसंदेह रूस से कई गुना अधिक थी और आणविक शक्ति तो रूस को नेस्तनाबूद करने की क्षमता रखती थी। अस्तु रूस ने अपनी कूटनीति और चालाकियां आतंकवाद को शह देने में लगा दी तथा इन आतंकवादियों के दिल में अमेरिका के प्रति कूट-कूट कर घृणा भर दी।

रूस की यह कूट नीति विश्व के अन्य देशों तक ही सीमित नहीं रही प्रत्युत लेनिन स्टालिन नीति ने अमेरिका ही में करोड़ों डालर खर्च कर अमेरिका की नीतियों के विरूद्ध लोगों को भड़काकर खड़ा कर दिया। वियतनाम युद्ध का विरोध अमेरिका में ही होने लगा और अमेरिकी सरकार की नीतियों के खिलाफ कई अमेरिकी नागरिक संगठन आवाज उठाने लगे। यह सब साम्यवादी देशों की **'फूट डालो और राज करो'** की नीति का परिणाम था।

साम्यवादी नेताओं ने साम्यवादी देशों का नेतृत्व अन्य देशों पर लादने हेतु 'साम्यवाद' को ही सर्वश्रेष्ठ और सर्वशक्तिमान सिद्ध करने के भरसक प्रयत्न किए थे। यहां तक की उन्होनें 'ईश्वर' और 'ईश्वर की सत्ता' की श्रेष्ठता और शक्ति को ही नकार दिया। **'हम ईश्वर पर विश्वास नहीं करते'** इस उद्घोषणा के साथ उन्होनें उन देशों को हतोत्साहित करने का प्रयास किया जो ईश्वर पर विश्वास करते है।

अमेरिका दृढ़ता से ईश्वर की सत्ता में विश्वास करता है जिसका प्रमाण है कि अमेरिकन सिक्कों व डालर पर लिखा होता है कि 'हम ईश्वर में विश्वास करते हैं'। साम्यवादी तो मनुष्य के मन मस्तिष्क को शून्य (Washart) कर देना चाहते हैं और यह वे तभी कर सकते हैं जब सदियों से संस्कारित मनुष्य के मन मस्तिष्क से ईश्वर को निकालकर फेंक दिया जाये। 'ईश्वर' के स्थान पर ये साम्यवादी अधिनायकवादी नेता स्वयं को स्थापित करने का भरपूर प्रयत्न करते हैं । इनके नेतृत्व में रहने वाले केवल आदेशों को मानने वाले होने चाहिये, किसी भी शंका समाधान के लिये उन्हें प्रश्न करने का अधिकार नहीं है। लोग साम्यवादी नेतृत्व की पूजा ईश्वर के अनुरूप करना शुरू करते हैं। ईश्वर गौण हो जाता है, नेता ईश्वर बन जाता है। जनसामान्य अथवा साम्यवादी नेतृत्व के आधीन समाज ईश्वर की शक्ति तथा श्रेष्ठता पर प्रश्न कर ही नहीं सकता। उसका नाम तक जुबान पर नहीं ला सकता परिणामत: आने वाली पीढियाँ ईश्वर शून्य तथा नेता ही को ईश्वर मानने के भावों से दबी होती है।

विगत 80 वर्षों से अमेरिका इन भ्रामक प्रचारों का सामना शिद्दत से कर रहा है क्योंकि अन्ततोगत्वा सत्य तो सत्य ही हैं। सत्य स्वयं अपने आप में इतना प्रभावी गतिशील व तेजस्वी है कि ये भ्रामक प्रचार और धन से आकर्षित करने वाली कूटनीतियाँ उसे आछन्न नहीं कर सकती। वर्तमान में रूस का विघटन इसका ज्वलंत प्रमाण है। अमेरिका ऐसे साम्यवादी देशों की जनता के मस्तिष्क से भी इन भ्रामक प्रचारों के प्रभाव को मिटाकर रहेगा।

सत्य (वास्तविकता)

साम्यवादियों ने समस्त विश्व में यह भ्रामक प्रचार किया कि अमेरिका साम्राज्यवादी एवम् विस्तारवादी (इम्पेरियलिस्ट विस्तारवादी) नीति का नियामक

है किंतु वास्तविकता कुछ और है। द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी के हिटलर की विश्वविजय नीति वास्तव में विस्तारवादी नीति थी जिसे मित्र राष्ट्रों ने एक साथ एक जुट होकर रोका । स्वयं को कमजोर पाकर रूस भी उस समय मित्र राष्ट्रों के साथ हो गया। उसे भय था कि हिटलर कहीं आल्पस पार न कर जाये। हिटलर के पतन के बाद विश्व को अपनी मुट्ठी में लेने की महत्वाकांक्षा स्टालिन और चीन के माओत्सेतुंग में उत्पन्न हुई। माओ की षड़यंत्रकारी नीति उत्तर कोरिया की मदद से दक्षिण कोरिया तथा दक्षिण पूर्व एशिया को लील जाने की बनी। 1962 में चीन का भारत पर आक्रमण और इराक का कुवैत पर आक्रमण उनकी विस्तारवादी नीतियों का ही दुष्परिणाम था। सऊदी अरेबिया के भी कुछ हिस्सों पर इन कुत्सित विस्तारवादियों की नज़र थी। ये कुछ दृष्टांत हैं इन साम्यवादी नीतियों में निहित विस्तारवाद के। साम्यवादी अधिनायकवादियों के कुछ कारनामें विश्वविदित हैं जिन्हें अमेरिका अपने समृद्ध राजकोष और प्रबल सैन्य शक्ति तथा नैतिक आधार पर निरस्त करने में सफल होगा।

वर्तमान के दृश्य पटल पर हमने देखा है कि हिटलर की विश्वविजय की महत्वाकांक्षा को अमेरिका ने अपनी आर्थिक समृद्धता और सैन्य शक्ति के द्वारा कैसे रोक दिया? यदि ऐसा न होता तो विश्व की जनता हिटलर के अधिनायकत्व में लोकतंत्र की खुली श्वासं लेने के बजाय दम तोड़ती नजर आती। गेस्टापों की पैनी दृष्टि उसकी हर गतिविधि पर हावी रहकर उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व को निगल जाती। गुलाग केम्स की नृशंसता में मनुष्यता जलकर राख हो जाती।

यहाँ तक की द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद स्टालिन की विश्व अधिनायकत्व की भावना को, जिसके चलते पूर्वी यूरोप के अनेक राष्ट्र स्टालिन की फौलादी जकड़न में जकड़ लिये गये थे अमेरिका ने धैर्यपूर्वक 40 वर्षो तक किये गये शीतयुद्ध के द्वारा अंततः इस पर विजय प्राप्त की और पूर्वी यूरोप और विश्व के अनेक राष्ट्रों को स्वतंत्रता से जीने का परिवेश दिया। आज अमेरिका के इन्हीं प्रयासों और संघर्षों के कारण ये राष्ट्र स्वतंत्रता और समृद्धि का जीवन जी रहे हैं।

आज इसी बात से रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि यदि अमेरिका इन अधिनायकों, विश्वविजय के महत्वाकांक्षियों, ईश्वर से भी अधिक अपने को सर्वशक्तिमान सिद्ध करने वाले नास्तिकों, इन विस्तारवादियों के समक्ष खड़ा न होता तो दुनियाँ का नक्शा क्या होता? माओ ने जहां अपने एक ही दृष्टिपात में लाखों भोलेभाले नौजवानों

को मौत के घाट उतार दिया और हिटलर के गेस्टापों के क्रूर दमन ने लाखों लोगों को गैस चेम्बर में राख बना दिया। स्टालिन के गुलाग केम्प की मनुष्यों पर की गई यातनाओं से कौन परिचित नहीं है? इन यातनाओं की कल्पना मात्र से रूह काँप जाती है। इसके विपरीत विश्वशांति, बन्धुत्व, स्वतंत्र व्यक्तित्व, लोकतंत्र, वास्तविक प्रसन्नता और जीवन में लोगों की अस्मिता, मान-सम्मान, आगे बढ़ने के स्त्रोत, मानव एवं कार्य की पूजा की अमेरिकन नीतियों से विश्व मानव का मानस प्रभावित है और वह अमेरिका को प्यार करता है।

एक और भ्रामक विचार मनुष्यों में प्रचारित किया गया कि अमेरिका ईराक का पतन कर वहां के तेल भण्डारों पर अपना एकाधिपत्य स्थापित करना चाहता है। किंतु वास्तविकता इस भ्रामक प्रचार के बिल्कुल विपरीत है। इराक पतन के कुछ ही वर्ष पूर्व अमेरिका ने कुवैत के अक्षय तेल कूपों को सद्दाम की ग्रिप (मुट्ठी) से आजाद करवाया किंतु इसके बदले में न तो कुवैत की एक इंच भूमि का अधिगृहण किया और न ही तेल कूपों पर अपना अधिकार ही घोषित किया। प्रत्युत समस्त तेल भण्डार अपनी सैन्य शक्ति के सद्दाम के ईरादों को निरस्त कर कुवैत को ही लौटा दिया। क्या यह अमेरिका की महानता नहीं है? सद्दाम कुवैत के तेलकूपों पर आधिपत्य कर उससे अर्जित धन द्वारा हिटलर और स्टालिन की तरह ही मध्यपूर्व एशिया पर अपना शासन तेल की वितरण प्रणाली हाथ में लेकर करने का आकांक्षी था। सद्दाम भी अधिनायकवादी था। उसने अपने लाखों विरोधियों को मौत के घाट उतार दिया। इसी आतंकपूर्ण डिक्टेटरशिप का अमेरिका ने डटकर विरोध किया व सद्दाम का पतन किया और इराक के समस्त तेल स्त्रोतों को संयुक्त राष्ट्र सभा को हस्तान्तरित कर दिया। इराक के तेल साम्राज्य पर अमेरिका की दृष्टि अधिकार करने की कभी नहीं रही।

अमेरिका प्रतिपल, प्रतिक्षण अधिनायक प्रवृत्ति का विरोधी रहा है। जहाँ कहीं भी मानव अधिकारों का हनन हुआ अमेरिका वहीं अपनी समस्त सैन्य और अर्थ शक्ति के साथ खड़ा हुआ है और आगे भी होगा।

द्वितीय विश्वयुद्ध में भी युरोप की स्वतंत्रता के लिये अमेरिका हिटलर की अधिनायक वृत्ती के विरूद्ध खड़ा हुआ और अंततः जर्मनी, फ्रांस व इटली को स्वतंत्रता दिलवाकर उनकी एक-एक इंच भूमि उन्हें वापस लौटा दी। किसी भी देश से अमेरिका ने अपनी की गई मदद के बदले में कुछ नहीं चाहा प्रत्युत 1946 में

अमेरिका ने 20 बिलियन डालर जिनका आज मूल्य 200 बिलियन डालर है दूसरे देशों की स्वतंत्रता के लिये खर्च किया खासतौर से जर्मनी के पुनर्निर्माण के लिये जिसने अमेरिका के ही विरूद्ध युद्ध छेड़ा था। इसी प्रकार युद्ध विभीषिका से नष्ट हुए यूरोप के भी पुर्ननिर्माण और प्रगतिशील प्रजातंत्र के लिये भरपूर सहायता मुहैय्या करवाई, वह भी बिना किसी निजी स्वार्थ के।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि अफगानिस्तान को तालिबानी अलकायदा से स्वतंत्रता दिलवाने में जो विध्वंस हुआ उसके नवनिर्माण और लोकतंत्र की स्थापना के लिये तथा आर्थिक स्थिरता के लिये लाखों डालर खर्च कर रहा है। इसी प्रकार इराक के भी आधुनिक तरीके के नवनिर्माण और लोकतंत्र की स्थापना के लिये अमेरिका करोड़ों डालर का व्यय वहन कर रहा है।

सबसे अधिक विचारणीय प्रश्न है कि अमेरिका के प्रति जो भ्रामक प्रचार साम्यवादी राष्ट्रों के द्वारा किये गये और उनके चलते मनुष्यों के मन में जो घृणा और आक्रोश अमेरिका के प्रति उत्पन्न हुआ है उसे कैसे मिटाया जाय? इसका एक ही उपाय है कि सत्य को, वास्तविकता को, भ्रामक प्रचार के दूसरे पहलुओं को लोगों के समक्ष रखा जाय ताकि लोग अमेरिका के मानवाधिकार की रक्षा के, लोकतंत्र की रक्षा के मानव स्वतंत्रता और स्थायी प्रसन्नता की रक्षा के इरादों को समझ सके, और अमेरिका से प्यार कर सके। अमेरिका के आदर्श है :

1. स्वतंत्रता,

2. न्याय और,

3. प्रसन्नता

अमेरिका के मूल सिद्धांत है। इनकी वकालत तथा इनकी रक्षा के लिये यह सदैव तत्पर है ताकि विश्व जनमत उन्मुक्त जीवन का आनन्द ले सके।

मैं अमेरिका के प्रति उत्पन्न घृणा और आक्रोश को प्रेम और सम्मान में बदलने के लिये कुछ सुझाव प्रस्तुत करना चाहूँगा।

1. अनुमानतः 20 अर्न्तराष्ट्रीय सेटेलाईट दूरदर्शन चैनल विश्व की मुख्य भाषाओं में स्थापित कर अमेरिका के मूल सिद्धान्तों, लोकतंत्र के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को उजागर करके उसका प्रचार किया जाए। अमेरिका

का उपर्युक्त मानवाधिकार रक्षा में कितना योगदान रहा है इसे भी उजागर किया जाये।

2. अमेरिकन सिद्धान्त मूल्यों के प्रचार-प्रसार हेतु विश्व की मुख्य-मुख्य भाषाओं में अनुमानतः 100 आकाशवाणी केन्द्र स्थापित किये जाएं।

3. इसी प्रकार उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अनुमानतः 100 पत्रिकाओं का प्रकाशन भी विश्व की मुख्य-मुख्य भाषाओं में किया जाये।

4. अमेरिका के वास्तविक मन्तव्य और उसके सस्ते उद्देश्य को बतलाने हेतु गांवों में, जिलों में, प्रान्तों में, शहरों में और कस्बों में कई जगह सेमीनार व आम सभाएं आदि आयोजित की जाए।

5. अमेरिकन उद्देश्यों को बतलाने के लिये वहां के समस्त कांस्युलेटस/दूतावासों में अलग से प्रबंधन द्वारा सभाएं और सेमीनार समय-समय पर आयोजित की जाए।

6. प्रतिवर्ष 5000 प्रेस रिपोर्टर्स को आमंत्रित कर यह दिखलाया जाये कि अमेरिका के मूल निवासी और अप्रवासी किस प्रकार मिल-जुलकर बन्धुत्व भावना से एक दूसरे की सहायता करते रहते है। किस प्रकार स्वतंत्रता, न्याय और प्रसन्नता पाने के उपक्रम अमेरिका में किये जा रहे हैं? इन प्रेस संवाददाताओं को इस प्रगति का चश्मदीद गवाह बनाया जाए।

उपर्युक्त तमाम प्रयास अमेरिका के प्रति किये गये भ्रामक प्रचारों को समाप्त कर सकते हैं और अमेरिका मानव प्रगति के लिये क्या चाहता है, इसके लिये वह कितना प्रयत्नशील है, इसे विश्व जन-मन के सामने रख सकते हैं। एक बार विश्व अमेरिका की वास्तविक तस्वीर को समझ जायेगा तो स्वतः ही आतंकवाद, अधिनायकवाद, मानव स्वतंत्रता, हननवाद के प्रति उसके मन में घृणा उत्पन्न हो जाएगी । वह स्वतः आतंकवाद का विरोधी हो उठेगा और अमेरिका की मानव हितकारी नीतियों का रक्षा कवच बन जाएगा। आतंकवाद के खिलाफ रक्षापंक्ती का वह भी एक जबर्दस्त हिस्सा बनकर अमेरिका के पक्ष में खड़ा होने को तैयार हो जाएगा।

अपने सद्उद्देश्य की प्राप्ति के लिये प्रत्येक देश में अमेरिका को निःशुल्क दूरभाष सेवाओं का जाल सा बिछा देना चाहिए ताकि जहां कहीं भी आतंकवादी गतिविधियों का सुराग मिले, चाहे वह किसी भी देश के विरूद्ध हो, अमेरिका को तुरंत सूचना प्राप्त हो सके। इसी प्रयत्न को आगे बढ़ाने के लिये उन लोगों को ग्रीन कार्ड भी वितरित किये जाने चाहिये जो अमेरिका की आतंकवाद के खिलाफ लड़ी जाने वाली लड़ाई में मदद करना चाहते है। 100 मिलियन डालर का एक अलग ही कोष स्थापित किया जाना चाहिये जो आतंकवाद के विरूद्ध की जाने वाली साहसिक कार्यवाही या सूचना पर लोगों को पुरस्कृत करने में व्यय हो। यह पुरस्कार 1000 डालर से लेकर 100000 डालर तक नगद दिया जाना चाहिये।

इन तमाम व्यवस्थाओं में कुल व्यय अनुमानतः 3.4 बिलियन डालर का होगा।

यह व्यय निश्चित अमेरिका के प्रति घृणा और आक्रोश पैदा करने के भ्रामक प्रचारों का पर्दाफाश कर अमेरिका के मानव प्रेम, विश्व बन्धुत्व, लोकतंत्र प्रियता को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने में सक्षम होगा। आतंकवाद की समस्या का समाधान तथा उस पर विजय पाई जा सकती है।

अमेरिका के प्रति पुनः सत्य स्थापित करने की उपर्युक्त योजनाओं का ब्यौरेवार व्यय का लेखाः

1.	विश्व की मुख्य-2 भाषाओं में 20 अन्तर्राष्ट्रीय दूरदर्शन चेनल की शुरूआत	1000/- मिलियन डालर
2.	विश्व की मुख्य-2 भाषाओं में 100 नये आकाशवाणी केन्द्र	300 मिलियन डालर
3.	100 नई पत्रिकाओं और समाचार पत्रों का प्रकाशन	100 मिलियन डालर
4.	गांवों/शहरों/महानगरों में राष्ट्रीय स्तर पर विचार विमर्श हेतु समितियाँ का गठन सम्मेलन आदि	1000 मिलियन डालर

5.	5000 प्रेस संवाददाता तथा दूरदर्शन प्रतिनिधियों को अमेरिका का आमंत्रण	500 मिलियन डालर
6.	अन्य फुटकर खर्च	500 मिलियन डालर
		कुल व्यय 3.4 बिलियन डालर

उपर्युक्त किया गया व्यय निःसन्देह रूप से आतंकवादियों के हृदय बदलने में समर्थ होगा और आतंकवाद की समस्या का भी हल निकलेगा।

कुल व्यय - 3.4 बिलियन डालर

अध्याय – 5

ईराक में शांती, स्थायित्व, प्रगति एवं समृद्धि स्थापित की जा रही है।

यद्यपि अमेरिका इराक को स्वतंत्रता दिला चुका है और सद्दाम की तानाशाही को समाप्त कर चुका है फिर भी इराक में यह संघर्ष अभी समाप्त नहीं हुआ है। अमेरिका के बहादुर सिपाहियों की नित्य हत्याएं हो रही हैं।

इस भीषण समस्या से उबरने और इराक की जनता को स्वतंत्रता के फल का पूरा रसास्वादन करवाने के लिये कुछ सुझाव यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं। निम्नलिखित प्रस्तावों की क्रियान्विती शीघ्र–अतिशीघ्र की जानी चाहिये। इन्हें प्राथमिकता देना अनिवार्य है।

1. ईराकी लोगों का दिल जीतना होगा

1. इराकी लोगों का हृदय और मस्तिष्क जीतना अत्यंत आवश्यक है तभी वे इराक के आतंकवादियों और समाज कंटकों की पहचान करवायेंगे और उनकी योजनाओं को निरस्त करवा सकते हैं। ये बाथ दल के सदस्य साम्यवादी दलों और साम्यवादी विचारधारा से भरे हुए हैं – इन्हें सद्दाम जैसे निरंकुश अधिनायक की आवश्यकता थी। अतः सद्दाम को मोहरा बनाकर ये अपना अधिनायकवादी D मकसद हल करना चाहते थे। गत 25 वर्षों से ये अपने इस उद्देश्य में सफल भी हो रहे थे। सद्दाम के माध्यम से इराक को लूटने का कार्य आसानी से किया जा रहा था। अतः ऐसे व्यक्तियों, ऐसे समुहों को जो समाज के कंटक है, चिन्हित इराक की जनता की सहायता ही से किया जा सकता है यदि अमेरिका उनका हृदय जीतने में सफल हो जाता है।

2. इराक में दूरदर्शन के उन चैनल्स से छुटकारा पाना अत्यंन्त आवश्यक है जो आतंकवाद का दुष्प्रचार कर रहे हैं यथा अलजजीरा, सी.एन.एन. और बी.बी.सी.। इन तीन चैनल के प्रतिनिधियों को राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर देश में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जाना चाहिये।

3. **शैक्षणिक क्षेत्र और मनोरंजन के क्षेत्र में दूरदर्शन के पाँच नये चैनल शुरू कर** देने **चाहिये। यही एकमात्र आधुनिक युग का सशक्त माध्यम है, जिसके द्वारा ईराकी जनमत को बदला जा सकता है तथा अमेरिका के मानवतावादी नेक इरादों से अवगत कराया जा सकता है। उन्हें उनके वास्तविक हित के प्रति सजग** भी **किया जा सकता है। अमेरिका ने द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी और जापान को हिटलर व मुसौलिनी की तानाशाही से मुक्त करवाया।**

युद्ध विभीषिका में त्रस्त जनता अमेरिका से घृणा करने लगी थी। उस युद्ध में एटम बम द्वारा भयानक नरसंहार के फलस्वरूप जनमानस में घृणा की भावना घर कर गई थी। परन्तु युद्ध त्रस्त जनता को धीरे–धीरे अमेरिका के नेक इरादों का मान होने लगा ।साथ–साथ अपनी स्वंतत्रता का आनन्द लेते हुए अमेरिका को पसन्द करने लगे। परन्तु वामपंथी माध्यम जापानी जनता में अमेरिका के विरूद्ध ज़हर उगलने में जुटा रहता है। खेदजनक बात यह भी है कि बी.बी.सी. लन्दन भी उनके इस दुष्चक्र में सम्मिलित हैं। **एटमबम ने उन्हें झकझोर दिया था किंतु शनैः शनैः उन्हें अमेरिका को नेक इरादों का भान होने लगा और अपनी स्वतंत्रता का आनंद लेते हुए वे अमेरिका को पसंद करने लगे किन्तु वामपंथी माध्यम फिर से जापानी जनता में अमेरिका के विरूद्ध जहर उगलने में व्यस्त है और खेद का विषय है कि बी.बी.सी. लंदन भी उनके इस दुष्चक्र में शामिल है।**

4. **नवनिर्मित इराक के प्रशासन, दूरदर्शन और आकाशवाणी को सद्दाम के द्वारा मनुष्यों पर किये गये जैविक तथा रासायनिक प्रयोगों को** निरंतर **उजागर** करते रहना **चाहिये। इन अमानवीय प्रयोगों** भी **को उजागर** करते रहना होगा। **ये नरसंहार ठीक हिटलर के समय में 'गैस चेम्बर' में किये गये नरसंहारों के** ही **समान थे।** इनका प्रयोग **सद्दाम ने देश** में **उसके विरोधी नादान लोगों को समाप्त करने के लिये किया थे। इन अमानवीय कृत्यों को नवीन इराक द्वारा उजागर किया जाना चाहिये। यह प्रचार ही**

अपने आप में इतना प्रभावी होगा कि लोगों में उत्पन्न हुई घृणा स्वतः सद्दाम शासन के शेष कानूनों को समाप्त कर देगी।

5. सद्दाम और उसकी बाथ पार्टी के नेताओं को आतंकवादी तथा षडयंत्रकारी घोषित किया जाना चाहिये जिन्होनें अपने ही देश के बन्धुओं पर ऐसे अत्याचार किये थे।

2. आर्थिक सहयोग कार्यक्रम

1. जैसे ही ईराक में सामाजिक व राजनीतिक स्थिरता स्थापित हो, अमेरिका को तुरंत 500 बिलियन डालर का विशेष 'आर्थिक सहयोग पैकेज' वहाँ पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये घोषित करना चाहिये। यह योजना ईराक को आर्थिक रूप से अत्यधिक समृद्धि प्रदान करेगी।

2. तेल उत्पादन और उसके व्यवसाय पर सर्वप्रथम ध्यान दिया जाना चाहिये। ताकि इसके रेवेन्यु में वृद्धि होने से राजकोष में वृद्धि हो और यह धन ईराक के पुर्ननिर्माण में लगाया जा सके।

3. बाहर के निवेशकों को ईराक में होटल्स तथा पर्यटन सुविधाओं को स्थापित करने के लिये आमंत्रित करना चाहिये। इससे आर्थिक समृद्धि में विशेष वृद्धि होगी।

4. बगदाद जाने के लिये अधिक से अधिक विदेशी एयर कम्पनियों को आने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिये। आगामी 5 वर्षो के लिये वायुयान के उतरने व व्यापार करने पर टेक्स आदि बहुत कम लगाये जाने चाहिये और इन्हें तेल भी बहुत कम कीमत पर बेचा जाना चाहिये ताकि कार्गो जगत में ईराक जाने व पैसा कमाने के लिये होड़ मच जाये।

5. तीन वर्षो में 20 बिलियन डालर का फंड इकट्ठा करने के लिये जापान, कोरिया, ताइवान, दक्षिण अरेबिया और अन्य देशों के साथ एक 'ऐड इराक क्लब' की स्थापना की जानी चाहिये।

6. ईराक की कृषि क्षेत्र में हरित क्रांति के लिये अमेरिका को अपने कृषि वैज्ञानिक जिन्हें आधुनिक कृषि सम्बन्धी तकनीक का अच्छा ज्ञान हो,

भेजना चाहिये। कम से कम ईराक के 100 किसानों को कृषि की नई तकनीक का प्रशिक्षण दिया जाकर कृषि की उन्नति के लिये जिस किसी सामग्री की कमी हो उसे पूरा किया जाना चाहिये।

7. सभी लिये गये विदेशी कर्जों को समाप्त कर दिया जाना चाहिये। ये कर्ज अन्य देशों ने सद्दाम की सत्ता को दिये थे। अब जब न वह सत्ता रही, न सद्दाम रहे तो इन कर्जों को चुकाने का कोई औचित्य नहीं है। सभी कर्ज देने वाले देशों को इस कर्ज के बोझ से मुक्ति के लिये निवेदन किया जाना चाहिए। यह सहयोग केवल अमेरिका से ही नहीं प्रत्युत अन्य राष्ट्रों से भी मांगा जाना चाहिये।

8. एक '**विशेष देश निष्कासित पुर्नवास कोष**' स्थापित किया जाना चाहिये जो इराक के बेघरबार, उजड़े, युद्ध की विभिषिका में सब कुछ खोये हुए लोगों को पुनर्स्थापित करने के लिये अन्य समस्त सुविधायें प्रदान करें। यह इराकी मदद प्राप्त किये हुए लोग निश्चित रूप से लोकतंत्र की महानता का प्रचार करेंगे और उसकी स्थापना में अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

3. राजनीतिक और सामरिक व्यूह रचना

1. सीरिया और इरान की सीमाओं को सील किया जाये। यह बहुत घातक स्थिति पैदा करेगी जब तक ये देश इराक में शांति भंग करने के लिये आतंकवादी गतिविधियों का संचालन करते रहेंगे। इन सीमाओं को अवैध तरीके से पार करने वालों पर **'देखते ही गोली मारने'** के आदेश लागु किये जाने चाहिये। अधिकांशतः आतंकवादी और इनके सहयोगी इराक में अशांति स्थापित करने व नवीन लोकतांत्रिक शासन के प्रति घृणा का प्रचार करते हैं।

2. सभी ईरान के द्वारा भेजे गये धर्म गुरूओं का पूरी सख्ती से निरीक्षण किया जाना चाहिये तथा उनकी गतिविधियों पर पैनी नजर रखी जानी चाहिए। मैं पहले भी यह बतला चुका हूँ कि ईराक बाथ पार्टी के शासन के पतन व लोकतंत्र के स्थापन के मध्य में आतंकवादी अत्यन्त बाधक सिद्ध हो

सकते हैं अतः इनकी गतिविधियों पर पूरा ध्यान रखा जाना चाहिये और यदि कोई धर्म प्रचारक धर्म के नाम पर हिंसा – अशांति तथा लोकतंत्र के प्रति घृणा का प्रचार करता है तो उसे तुरंत गिरफ्तार कर सैनिक न्यायालय में उचित कार्यवाही के लिये पेश कर दण्डित किया जाना चाहिये।

3. पड़ौसी देशों जैसे पाकिस्तान, भारत और बांग्लादेश को सीमाओं पर शांति के लिये अधिक चौकस रहने के लिये निवेदन किया जाना चाहिए।

4. फ्रांस और जर्मनी जैसे देशों के साथ फिर से अच्छे स्नेह पूर्ण सम्बन्ध, स्थायी शांति और प्रगति के लिये स्थापित किये जाने चाहिये। भूतकाल में जो कुछ गलतफहमियां हुई उन्हें भुला देना होगा – जो बीत गया सो बीत गया, नीति अपनानी होगी ।

5. इराक में विशेष साधन और सुविधायें तथा सुरक्षा उन लोगों को दी जानी चाहिये जो इराक में शांती चाहते हैं और आतंकवादी गतिविधियों को ट्रेप कर सकते हैं। इसके लिये 100 बिलियन डालर का एक सहायता कोष भी रखा जाना चाहिये उन शांति और प्रगतिप्रिय नागरिकों के लिये अर्थात उन्हें पुरस्कृत करने के लिये जो तहेदिल से आतंकवादी और तानाशाही के विरूद्ध हैं और ऐसी गतिविधियों का पर्दाफाश कर आतंकवादियों को पकड़वा सकते हैं। यह निवेश निःसंदेह इराक को बचाने में सहायक होगा साथ ही अमेरिकी लोगों की भी जिन्दगी बचाने में मदद करेगा। जो लोग ऐसी सहायता करते हैं उन्हें पूर्ण सुरक्षा प्रदान की जानी चाहिये। व्यक्तिगत रूप से ऐसे लोगों को 'ग्रीन कार्ड' की सुविधा भी प्रदान करने का प्रावधान हो ।

6. एक राष्ट्रव्यापी टोल फ्री संचार व्यवस्था की स्थापना की जानी चाहिये जिसमें 800 टेलीफोन नम्बर कार्यरत हों ताकि लोग बड़ी सरलता और शीघ्रता से ईराकी व अमरीकी प्रशासन को सम्भावित आतंकवादी गतिविधियों के लिये सूचना दे सकें।

7. इराक में हुए इस संघर्ष के विगत कुछ महिनों में मुस्लिम और गैर मुस्लिम समुदाय के लोग मारे गये हैं, बेघर–बार हो गये हैं। अस्तु देश में अराजकता की स्थिति होना स्वाभाविक है। इस अराजकता के विध्वंस से देश को

बचाने के लिये 'राष्ट्रीय आपातकाल' की घोषणा अत्यन्त आवश्यक है। इसे नियंत्रित करने के लिये कठोर और न्यायपूर्ण कदम उठाने की नितांत आवश्यकता है।

4. संधियाँ

अमेरिका को जापान में की गई संधि के अनुरूप 20 वर्षीय शांति और मित्रता की संधि करनी चाहिये जिसमें इराक में सुरक्षा और शांतिस्थापन का दायित्व अमेरिका को दी जाने की मान्यता हो। इराकियों को संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के राष्ट्रपति द्वारा पूर्ण आश्वासन दिया जाना चाहिये कि वे अमेरिकन सैन्य शक्ति के द्वारा अन्य किसी विदेशी आक्रामक स्थिति तथा सद्दाम हुसैन की कूटनीतियों से उनकी सुरक्षा करेगी।

यह गारंटी और विश्वास इराकियों के भयभीत और आतंकित दिलों को जीतने में बहुत सहायक होगी जिन्हें अभी भी भय है कि सद्दाम के सहायक पुनः इराक पर तानाशाही शासन की स्थापना कर सकते हैं। आतंकवाद का यह साधारण भय भी उन्हें सद्दाम नीतियों के विरूद्ध आचरण करने से रोक सकता है। अस्तु यह केटेगोरिकल गांरटी और उसके अनुरूप कार्य इराकी जनता को इस भय और आतंक से मुक्ति दिला सकता है और वे नवीन राष्ट्र की संरचना में सहायक हो सकते हैं।

5. कतार से अत्यन्त सावधान रहने की नितांत आवश्यकता है

इराक की स्थिति को बहुत ही उदार हृदयता से तथा बहुत ही सावधानी से नियंत्रित करने की आवश्यकता है जिसका प्रभाव न केवल मध्यपूर्व एशिया में होगा प्रत्युत समस्त विश्व की शांति में सहायक होगा।

कुल व्यय – 1 बिलियन डालर

अध्याय – 6

विदेशी तेल के आयात पर निर्भरता का विकल्प

विगत 9/11 की घटना के बाद यह अत्यधिक असुरक्षित स्थिति है कि अमेरिका विदेशी तेल आयात पर निर्भर रहे। खासतौर से मध्यपूर्व से होने वाले आयात पर। अमेरिका को अपने देश की तेल आपूर्ति के लिये आत्मनिर्भर होना होगा। उसे विदेशी तेल आयात पर निर्भर नहीं रहना चाहिये।

मैं यहां कुछ सुझाव अमेरिका को तेल आपूर्ति के लिये आत्मनिर्भर होने के लिये दे रहा हूँ जिससे वह अपने देशवासियों की तेल आवश्यकता की पूर्ति स्वतंत्र रूप से अपने ही स्त्रोतों द्वारा कर सके।

1. रोस पैरोट (Ross Perot) की अध्यक्षता में शीघ्र ही एक प्रेसीडेंशियल कमीशन को गठित किया जाना चाहिये जो विदेशी उर्जा के स्थान पर स्वदेश के उर्जा स्त्रोतों का विकल्प रूप में सुझाव दे कर उर्जा स्त्रोत की स्वदेशी तकनीक बता सके।

2. वर्तमान में अमेरिका आतंकवाद के विरूद्ध युद्धरत है। ऐसी परिस्थिति में तेल कूपों की खुदाई और नये स्त्रोतों की खोज शीघ्र ही अलास्का क्षेत्र में शुरू कर देनी चाहिये।

3. एक तीन बिलियन डालर का कोष लगाकर 500 भिन्न–भिन्न आविष्कारकों को नये–नये उर्जा स्त्रोतों की खोज के लिये लगा देना चाहिये जो आर्थिक दृष्टि से उपयुक्त उर्जा के स्त्रोतों के विकल्प ढूंढ सके यथा समुद्री धारा, शीत फ्यूजन, वायु ऊर्जा, हाइड्रोजन उर्जा तथा अन्य विकल्पों का अनुसंधान करें।

4. यह कमीशन स्ट्रीम लाइन वितरण प्रणाली के सुधार के भी सुझाव देगा। अमेरिका के विभिन्न राज्यों में 18 प्रकार की गैसोलिन की पूर्ति की जा रही है जो निरर्थक और अपव्यय का कारण है।

5. इस कमीशन को 3 बिलियन डालर के फंड का उपयोग करने का अधिकार प्राप्त हो। यह राशि इस क्षेत्र में कार्यरत सही–सही उद्यमियों को प्रोत्साहन हेतु दी जाए।

6. पेट्रोल आदि की कार व संयंत्रों में उर्जा खपत के राष्ट्रीय स्तर पर नए मापदण्डों की कठोर नीति तुरन्त लागु की जाए।

7. उर्जा के अपव्यय पर रोकथाम करना आवश्यक है। इसके लिए आयोग ठोस सुझाव दे जिनको क्रियान्वित किया जाए।

अध्याय – 7

सशक्त सुरक्षा प्रणाली

विश्व में आज अमेरिका ही सर्वश्रेष्ठ शक्तिशाली (सुपर पावर) राष्ट्र है जो कहीं भी किसी भी राष्ट्र में शांति तथा लोकतंत्र की स्थापना के लिये तत्पर रहता है तथा अपनी सैन्य व आर्थिक शक्ति के द्वारा विश्व में शांतिस्थापन के प्रयास करता है। अस्तु उसे अपनी इस शक्ति और समृद्धि को बढ़ने के लिये तथा मजबूत राष्ट्र होने के लिये नये–नये उपाय करने चाहिये।

यह एकमात्र अमेरिका की सशक्त सैन्य शक्ति व आर्थिक समृद्धि का ही प्रभाव था कि उसने द्वितीय विश्वयुद्ध में हिटलर और मुसोलिनी की तानाशाही और अधिनायक प्रवृत्ति को परास्त कर विश्व शांति स्थापित की। अमेरिका का मुख्य उद्देश्य विश्व में शांति तथा लोकतंत्र की महत्ता को स्थापित करना है ताकि प्रत्येक राष्ट्र प्रगति कर सके व समृद्ध हो सके।

अस्तु अमेरिका के लिये यह पहली आवश्यकता है कि वह अपनी सैन्य तथा आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाये रखने के लिये निरंतर नये–नये उपाय करें ताकि विश्व शांति के लक्ष्य को पाने में उसे सफलता मिलती रहे। कुछ सुझाव नीचे दिये जा रहे हैं:

1. समस्त सैन्य खरीददारी (प्रोक्योअरमेंन्टस) अधिक कीमती और मूल्यवान हों तथा उनके क्रियाकलाप पूर्णरूपेण पारदर्शी हों।

2. S D I अंतरिक्ष आधारित सुरक्षा योजना अमेरिका ही के लिये नहीं प्रत्युत समस्त विश्व के लिए समस्यायें उत्पन्न कर सकता है। अमेरिका को इस अंतरिक्ष आधारित सुरक्षा प्रणाली को शीघ्र ही युद्धस्तर पर कार्यरत (डिप्लाय) करना चाहिये। 'स्टारवार' बहुत ही भ्रांतिपूर्ण युद्ध प्रणाली है। यहां अहिंसक युद्ध होते हुए भी आक्रमण को मध्य में ही समाप्त कर बहुत नुकसान पहुँचाता है। उत्तरी कोरिया, इरान और मुस्लिम देशों की धमकियों को ध्यान में रखते हुए और उनके द्वारा सामुहिक हत्याओं के हथियारों के आविष्कारों को देखते हुए 'स्टारवार' सिस्टम को और शक्तिशाली बनाने के उपायों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

3. अमेरिकन राष्ट्रपति को तत्काल घोषणा करनी चाहिये कि ईरान, तथा उत्तरी कोरिया को परमाणु हथियार बनाने की अनुमति नहीं दी जायेगी। इस प्रकार की किसी भी योजना को कहीं भी स्वीकार नहीं किया जायेगा।

4. अमेरिकन सैनिकों को बड़े पैमाने पर वीडियो वार गेम्स का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये। इससे उन्हें आधुनिकतम हथियारों का प्रयोग तथा उनकी तकनीक की जानकारी प्राप्त होगी। कम्प्युटर आधारित इन्टरएक्टिव तकनीक का विकास किया जाना चाहिये ताकि नये सैनिक आज की आधुनिकतम युद्ध प्रणालियों और हथियारों की जानकारी तथा उनका प्रयोग समझ सकें तथा सीख सकें। यह सब कुछ अत्यधिक खर्चीला प्रयास है किंतु आज के दूषित आतंककारी वातावरण का सामना करने के लिये अत्यंत आवश्यक भी है। अमेरिकी सैनिकों में एक नवीन शक्ति का संचार इन आधुनिक हथियारों ही से सम्भव है। एक सामान्य सैनिक भी अपने आपको सर्वश्रेष्ठ सिद्ध कर सकता है।

5. अमेरिकी सैनिक अफसरों व सैनिकों को आज के नित्य परिवर्तित राजनैतिक परिवेश में विदेशी भाषाओं का प्रशिक्षण अवश्य मिलना चाहिये। यथा अरेबिक, रशियन, कोरियन, स्पेनिश, भारतीय, जापानी, जर्मनी, फ्रेंच, चाइनीज इत्यादि भाषाओं को सीखना अत्यंत आवश्यक है। भाषा सिखलाने के जो विशिष्ट तरीके हैं उन्हें प्रयोग में लाना चाहिये ताकि वे जल्दी से जल्दी नई भाषाओं को सीख सकें। सशस्त्र सैनिकों को एक सप्ताह के प्रशिक्षण से ही नई भाषा का ज्ञान मिल सकता है। अपनी सैनिक प्रशिक्षण अवधि में कम से कम एक विदेशी भाषा सीखना अनिवार्य कर दिया जाना चाहिये।

6. इसी प्रकार अमेरिकन सैनिकों को विभिन्न राष्ट्रों के रहन–सहन, रीति–रिवाज, वेशभूषा, सभ्यता संस्कृति का सामान्य ज्ञान अवश्य होना चाहिये। जहाँ भी उन्हें लड़ना हो वहां ये सामान्य जानकारियाँ बहुत लाभप्रद और युद्ध जीतने में सहायक हो सकती हैं। ये स्थानीय रीति–रिवाजों, रहन–सहन, भाषा, धार्मिक कर्म आदि का ज्ञान अमेरिकन सैनिकों को युद्धकाल में बहुत सहायक हो सकता है। किसी युद्ध को मनोवैज्ञानिक स्तर पर जीतने के ये बहुत ही उपयोगी माध्यम है।

7. यह अत्यंत खेद का विषय है कि आदर्शों व सिद्धान्तों पर लड़े गये युद्धों में विश्व में शांति व लोकतंत्र की स्थापना के लिए सैनिकों को प्रचारतंत्र की तानाशाहियों से मिलीभगत के कारण बदनाम होना पड़ा। उन्हें आक्रामक और साम्राज्य विस्तारक कहा गया। अमेरिकन सैनिकों ने अपना जीवन मानवाधिकार सुरक्षा, स्वतंत्रता, तानाशाही, विरूद्धता के लिये समर्पित कर दिया फिर भी प्रचारतंत्र और स्वतंत्र किये गये राष्ट्र के लोगों ने उनकी प्रशंसा भय और आतंक के कारण नहीं की। उन्हें आक्रामक तथा आमदनी के प्राकृतिक स्त्रोतों को हड़पने वाला सिद्ध किया गया। जबकि इन भ्रामक धारणाओं के विपरीत अमेरिका ने द्वितीय विश्वयुद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद भी जर्मनी, जापान, कोरिया, अफगानिस्तान और ईराक की एक इंच भूमि का भी अधिग्रहण नहीं किया। अस्तु मीडिया (प्रचारतंत्र) के द्वारा इस प्रकार के भ्रामक और भयानक विचारों को बदलने का निरंतर प्रयास किया जाना चाहिये।

8. यह बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रशंसनीय बात है कि अमेरिका भारत के साथ लम्बे समय तक के लिये सैन्य संधि करना चाहता है जैसा कि दोनों राष्ट्र जो कि लोकतंत्र के सशक्त दृष्टांत है। दोनों आपस में मिलकर विश्वशांति, लोकतंत्र, मानवाधिकार आदि आदर्श सिद्धान्तों की रक्षा, प्रचार और प्रसार करें तो वह विश्व के हित में ही होगा।

अमेरिका को आतंकवाद से लड़ने के लिये, भारत की सीमा सुरक्षा के लिये, जो कि पड़ौसी देश पाकिस्तान से मिलती है मदद करनी चाहिये। पाकिस्तान आतंकवाद की कोई गतिविधि भारत में सीधे तौर पर नहीं चलाता किंतु उसका देश आतंकवादियों की सुरक्षित शरणस्थली है और बिनलादेन जैसे आतंककारी के छुपने की जगह है। उसका संगठन 'अलकायदा' भी यहीं है। इस आतंकवादी संगठन ने ही अमेरिका में 11 सितम्बर को अमेरिका में ट्रेड सेंटर टावर्स उड़ाने का कृत्य किया था। ऐसे संगठनों का दमन करना अमेरिका के लिये महत्वपूर्ण और अत्यंत आवश्यक है ताकि विश्व शांति और लोकतंत्र को सुरक्षित रखा जा सके। न केवल अमेरिका प्रत्युत विश्व के अन्य लोकतांत्रिक शांतिप्रिय देशों के लिये भी यह अत्यन्त आवश्यक है।

अमेरिकन सैन्यतंत्र को मानवीय खुफियातंत्र (जासूसी) को अधिक पैमाने पर बढ़ावा देना चाहिये। जिमी कार्टर के शासनकाल में कम्प्युटरारज्ड नेटवर्क खुफियागिरी के लिये स्थापित किया गया था जो कि बहुत छोटे पैमाने पर मशीन आधारित तंत्र है। यह आर्टिफिशियल जासूसी मनुष्य के दिमाग का मुकाबला नहीं कर सकती। मनुष्य का मस्तिष्क घटना और परिवेश के अनुसार स्वतः संचालित होता है। वह किसी बटन, बैट्री, या विद्युत पर आश्रित नहीं होता। अतः आधिक से अधिक व्यय मानवीय सी.आई.डी. संगठनों को बढ़ने और उन्हें सुसंगठित करने पर किया जाना चाहिये।

कुल व्यय – 1 बिलियन डालर

अध्याय – 8

ईगवर्न्हेंन्स सिस्टम द्वारा नौकरशाही ज्यादतियों से छुटकारा पाना

अमेरिका का संगठन का बजट (लेखा) बहुत ही बड़ा है। इस बजट की क्रियान्विती में अनेक बिलियन डालर महज कागजी कार्यवाही में व्यर्थ ही नष्ट हो जाते हैं। उदाहरणार्थ नये ड्रग्स के एप्रूवल के लिए एफ.डी.ए. कई वर्ष व्यतीत कर देती है और यह सारा समय व्यर्थ की कागजबाजी में ही नष्ट होता है। समय और कागज दोनों की ही बड़े पैमाने पर बर्बादी होती है। यह अपव्यय राष्ट्रीय आय का अपव्यय है, नागरिक के प्रशासन को दिये योगदान का अपव्यय है। यह अमेरिका नौकरशाही (ब्यूरौक्रेसी) का अपना निराला ढंग है।

1. राष्ट्र में एक नया टास्कफोर्स स्थापित किया जाना चाहिये जो लाल फीताशाही में व्यर्थ ही में काम में लिये जाने वाले कागज की मात्रा को 98 प्रतिशत कम करके दिखला सके। इस अपव्यय से राष्ट्र को बचा सके साथ ही एक नया संगठन इस बात के लिये स्थापित हो जो प्रशासन की कार्यवाही और सूचना को कम्प्युटर के नेटवर्क द्वारा तुरंत प्रसारित कर सके। बीस वर्ष पहले इस प्रकार का प्रयोग किया गया था जो बहुत ही सफल हुआ था किन्तु नई तकनीकों के आने से इसकी क्रियाशीलता में ढिलाई होने लगी। अतः एक नये कमीशन की स्थापना भी, अत्यन्त आवश्यक है, जिसे नई तकनीक, सूचना एवम् प्रसारण का भली-भांति ज्ञान हो।

2. प्रत्येक प्रार्थना पत्र (एप्लीकेशन) के अध्ययन और उस पर लिये जाने वाले निर्णय का एक निश्चित समय निर्धारित किया जाना चाहिये। निर्णय और अंतिम आदेश का यह विलम्ब बहुत ही हानिकारक और मानसिक तनाव उत्पन्न करने वाला होता है। राजकीय कार्य की यह शिथिलता और विलम्ब सारे समाज को प्रभावित करती है और आर्थिक हानि तो करती ही है। इस प्रकार के लालफीताशाही अर्थात फाइलबाजी और कागजबाजी करने वाले कर्मचारियों को अनुशासनात्मक कार्यवाही द्वारा और आर्थिक दण्ड द्वारा दण्डित किया जाना चाहिये।

3. सरकार के विभिन्न विभागों में नौकरी पाने के इच्छुक आवेदकों से सरकार जिन–जिन डाक्युमेंटस को आवश्यक समझती है उनकी सूचना इन्टरनेट के द्वारा भी दी जानी चाहिये। निर्देश और नौकरी के लिये प्रपत्र भी इन्टरनेट पर सूचिबद्ध होने चाहिये। इन्टरनेट सरकारी तंत्र की औपचारिकताओं और तरीके की स्थायी सूचना है जिसे इन्टरनेट पर बार–बार देखकर सरकारी कार्यप्रणाली को समझा जा सकता है। सारे फार्म्स (प्रपत्र) भी इन्टरनेट पर प्राप्त होने चाहिये ताकि उन्हें सावधानी से भरा जा सके और सुरक्षित भी रखा जा सके।

4. वर्तमान में सारी सरकारें निजी वेबसाइट रखती हैं इन तमाम वेबसाइटस का जुड़ाव एक 'कामन साइट आफ अमेरिका' से होना चाहिये जो सीधा केन्द्र से जुड़ा हो। इस प्रकार प्रान्तीय और केन्द्रीय सूचनाओं के लिये जो हजारों टन कागज व्यर्थ नष्ट होता है उसे बचाया जा सकता है। इस प्रकार यह एक वृहद सूचना तंत्र इन्टरनेट पर स्थापित किया जा सकता है।

5. यह अत्यन्त आवश्यक है कि समस्त सरकारी क्रय–विक्रय का ब्यौरा एक ही वेबसाइट पर अंकित होना चाहिये। यह केन्द्रीकरण लोगों को सरकार के भिन्न–भिन्न विभागों में चक्कर लगाने और परेशान होने से बचा सकता है। नागरिक को एक ही वेबसाइट से पता लग जायेगा कि क्रय या विक्रय, केन्द्र सरकार की आवश्यकता है या स्थानीय प्रशासन की। यह पद्धति सभी लोगों को जो क्रय–विक्रय करते हैं उन्हें भागीदार बनाने में सक्षम रहेगी और इससे लोगों की जानकारी का क्षेत्र भी बढ़ेगा। यह सुरक्षित ढंग भी होगा।

6. इस आधुनिक युग में यह आवश्यक है कि सारे ही सरकारी क्रय–विक्रय के भुगतान चाहे वे केन्द्र के हों प्रान्त के हों या स्थानीय प्रशासन के हों क्रेडिट कार्ड के द्वारा ही किये जाएं और सरकार क्रेडिट कार्ड देने वाली कम्पनियों से यह करार करवाये कि वह एक प्रतिशत से अधिक कमीशन वसूल नहीं करेगी।

7. समस्त सरकारी कर्मचारियों को कम्प्युटर प्रशिक्षण लेना अनिवार्य होगा। इस प्रशिक्षण का विशेष प्रबंध सरकार द्वारा, सरकारी तंत्र की समस्त नवीनतम प्रशासनिक जानकारी साहित्य के द्वारा दी जानी चाहिये। यह लिटरेचर (साहित्य) सरकार द्वारा प्रदत्त होगा।

8. यह वास्तव में आश्चर्यजनक बात है कि अमेरिका में कांग्रेस और सीनेट के सदस्यों के चुनाव अभी भी परंपरागत प्राचीन तरीकों से होते है जिसमें समय भी अधिक खर्च होता है और जनशक्ति (कर्मचारी) भी अधिक लगती है जबकि बिजली की मशीन यही घंटों का काम मिन्टों में पूरा कर देती है और इसकी विश्वसनीयता भी सब जगह सिद्ध हो चुकी है। अस्तु देश में होने वाले प्रांतस्तरीय, जिलास्तरीय, केन्द्रस्तरीय, कांग्रेस, सीनेट, या विधानसभा चुनाव इलैक्ट्रॉनिक मशीन के द्वारा ही सम्पन्न कराये जाने चाहिये। जबकि भारत जैसा प्रगतिशील देश, जो कि अभी पूर्ण तथा उन्नत नहीं है, वही अपने आम चुनाव इलेक्ट्रॉनिक मशीन के द्वारा सफलतापूर्वक करवा रहा है। इस देश की आबादी अमेरिका की आबादी से कई गुना अधिक है । अतः अमेरिका जैसा समृद्ध देश इलेक्ट्रॉनिक मशीन से राष्ट्रव्यापी चुनाव कराने की चुनौती स्वीकार कर सारी चुनावी कार्यप्रणाली से एक वर्ष ही में मुक्त हो सकता है।

9. इसी प्रकार भूमि सम्बन्धी सभी सूचनायें कम्प्यूटराईज्ड होनी चाहिये। इन्टरनेट पर समस्त सूचनायें यदि आम नागरिक को सहज ही प्राप्त हो तो वह जमीन खरीदने, बेचने, हस्तान्तरण करने के कार्य आसानी से कर सकता है तथा इससे समय की भी बहुत बचत हो सकती है।

10. इसी प्रकार न्यायिक प्रणाली की भी सारी सूचनायें कम्प्युटराइज्ड होना अत्यन्त आवश्यक है। यह समय और पैसे की बचत करता है। नागरिक को सूचनार्थ विभिन्न कार्यालयों के चक्कर नहीं काटने पड़ेगे। यह बहुत चौंका देने वाली बात है कि भारत के जयपुर जैसे शहर में सारी कोर्ट कार्यवाही वृहद दूरदर्शन स्क्रीन द्वारा जेल में बैठे अपराधियों को दिखला दी जाती है और वे इन्टरनेट पर भी ये सारी सूचनायें प्राप्त कर लेते हैं। जब जयपुर में यह सम्भव है तो अमेरिका जैसे विकसित देश में क्यों नहीं। इससे खतरों से भी छुटकारा मिलता है और समय तथा पैसों की बचत तो होती ही है? किंतु 9/11 की भयानक दुर्घटना को देखते हुए वीडियो प्रोसीसिंग के होने वाले खतरों का भी ध्यान रखना जरूरी है और उनकी रोकथाम का पहले से उपाय करना अत्यन्त आवश्यक है।

अध्याय – 9

प्रतिवर्ष 1 करोड़ व्यक्तियों को किस प्रकार कुशलता से प्रशिक्षण देकर रोजगार दिलवाया जाए

बेरोजगारी का स्तर अमेरिका में 5.6 प्रतिशत पर है यद्यपि चीन की तुलना में अमेरिका का GDP Growth बहुत कम है। एशियन देशों की तुलना में यह बहुत कम है । इस समस्या से निपटने के लिए मैं कुछ सुझाव प्रस्तुत कर रहा हूँ। ये सुझाव निम्न हैः

इक्कीसवीं सदी के आधुनिकतम युग में तकनीकी, आर्थिक और प्रायोगिक प्रशिक्षणों का होना अमेरिकन्स के लिये अत्यन्त आवश्यक है। प्रशिक्षणार्थियों को तत्काल आविष्कृत आधुनिकतम कम्प्युटर्स के द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षण प्रशासन के सैंकड़ों क्षेत्रों में प्रदान किया जाये ताकि वे राष्ट्र के प्रत्येक कोने की प्रकृति और समस्याओं को समझ सकें और उनके निराकरण की भरपूर कोशिश कर सकें। अमेरिका के विकास और प्रगति के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है। इसलिये इन समस्त कार्य क्षेत्रों की जानकारी हजारों डी.वी.डी. कार्यक्रमों में विकसित की जानी चाहिये। इन हजारों विषयों की जानकारी कर्मचारी को उसके कार्य में दक्षता प्रदान करेगी।

प्रत्येक विषय पर विश्व में नये-नये क्या शोध हो रहे हैं, भिन्न-भिन्न देश इन विषयों की कितनी गहराई और सूक्ष्मता में पहुँच गये हैं, यह सारी जानकारी अमेरिका की युवाशक्ति को दी जानी चाहिये। इससे प्रत्येक कार्यरत नौजवान अपने जन्मस्थान, अपने राष्ट्र और अपने नागरिक बन्धुओं के लिये नवीन से नवीन योजना बनाने में सक्षम होगा।

अमेरिका के विद्यालय भवन पढ़ाई का समय समाप्त होने के बाद प्रातः या सायं इस कार्य के लिये उपयोग में लिये जाने चाहिये। प्रशिक्षण कक्षाएं निःशुल्क लगाई जानी चाहिये। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी भिन्न-भिन्न योग्यतायें हांसिल करे। अध्यापक और वालेंटियर इन कक्षाओं का प्रबंध करें। अध्यापक प्रशिक्षित होने चाहिये और अपने का विषय का ज्ञान उन्हें गहराई से होना चाहिये। यह प्रशिक्षण छात्रों को इन्टरनेट पर अपने रूचिकर विषय से जोड़ने में सक्षम करेगा।

जहाँ पर शिक्षण मूल्यवान और ज्ञान की प्यास जगाने वाला हो वहीं प्रशिक्षणार्थियों से सही परिणाम प्राप्त हो सकते है। जैसे कहीं पेंटिंग का प्रशिक्षण दिया जा रहा है तो इसका सम्पूर्ण विस्तृत ज्ञान विद्यार्थी को मिलना चाहिए। पेंटिंग में काम आने वाले उपकरण, कागज की भिन्न क्वालिटी, रंग और उनका प्रभाव, रंग मिश्रण, प्राचीन समय से आज तक खोज किये गये रंग बनाने के ढंग आदि सभी जानकारी डी.वी.डी. द्वारा या शिक्षण द्वारा विद्यार्थी को मिलना चाहिये। ये सारे डी.वी.डी. प्रोग्राम अपने-अपने विषय के एक्सपटर्स द्वारा तैयार किये जाने चाहिये जिन्हें अपने विषय व क्षेत्र की सम्पूर्ण जानकारी हो।

जो कार्यरत है (जॉब कर रहे हैं) उन्हें अपना ज्ञान और आधुनिक सिस्टम्स में होशियार बनाने के लिये सरकार की तरफ से प्रभावी छात्रवृतियाँ दी जानी चाहिये ताकि छात्रों को प्रोत्साहन मिल सके तथा वे अपनी पूरी लगन से अपने कार्य को अंजाम दे सके। 2 या 5 डालर में से डी.वी.डी. कार्यक्रम बाजार में भी हर जगह उपलबध कराये जाने चाहिये। पूरे देश में कहीं भी ये डी.वी.डी. कार्यक्रम प्रशिक्षणार्थियों या ज्ञानार्थियों को सहज ही प्राप्त हो जाने चाहिये।

आधुनिक युग में शिक्षा को मनोरंजक बनाना प्राथमिकता है। छात्र को बोरियत न हो प्रत्युत प्रशिक्षण इतना रोचक हो कि विद्यार्थी की जिज्ञासा अर्थात ज्ञान प्राप्त करने की प्यास निरंतर बढती रहे। इस प्रकार के परामर्श और निर्देशन की कला हालीवुड के फिल्म डायरेक्टर्स से भी सीखी जा सकती है कि शिक्षण को रोचक कैसे बनाया जाए? मनोरंजक कैसे बनाया जाए? एक प्रसिद्धी प्राप्त निर्देशक स्टीवेन स्पीलबर्ग किस प्रकार मानवीय भावनाओं की गहराई से जानकारी प्राप्त कर पर्दे पर उतारता है। यह परिश्रम, यह अध्ययन की सूक्ष्मता और रचनात्मकता नये पाठ्यक्रम के सिखलाने में होनी चाहिये। इन शैक्षणिक डी.वी.डी. कार्यक्रमों में यह रोचकता अवश्य होनी चाहिये।

यद्यपि यह नये ज्ञान को युवाओं में बढ़ाने में मित्रतापूर्ण व्यवहार के समान होगी। प्रशिक्षार्थी सहज भाव से किसी तनाव के बिना अध्ययन में लगा रह सकेगा। डी.वी.डी. में ये शिक्षण कार्यक्रम इस प्रकार तैयार किये जायें कि सामान्य जन में इनका प्रचार-प्रसार विश्वप्रसिद्ध, टाइटेनिक, स्टारवार, जुरासिक पार्क आदि फिल्मों के समान हो।

डी.वी.डी. आधारित ये रोचक शिक्षा के कार्यक्रम देश के कोने-कोने में सहज ही प्राप्त होने चाहिये ताकि लोग अपने घर में बैठे-बैठे बहुत कुछ सीखकर नौकरी पा सकें और बेरोजगारी समाप्त हो सके।

बेरोजगारी कम करने और नौकरी के नये-नये क्षेत्र बनाने हेतु यहाँ मेरे कुछ सुझाव प्रस्तुत हैः

1. डी.वी.डी. द्वारा शैक्षणिक कार्यक्रमों की 100000 (एक लाख) कक्षायें सम्पूर्ण देश में, ग्रामीण क्षेत्र से लेकर शहरी क्षेत्र तक लगनी चाहिये। ये कार्यक्रम विद्यालयों में विद्यालय के दैनिक शिक्षण कार्यक्रम के बाद सायंकालीन कक्षाओं के रूप में संचालित किये जाने चाहिये। यदि इन कार्यक्रमों को अन्य खाली आवासों या सार्वजनिक स्थानों में भी सुविधा मिले तो चलाया जाना चाहिये।

2. रोजगार, कृषि, उद्योग, व्यापार, लघु उद्योग आदि विषयों पर करीब 1000 (एक हजार) श्रेष्ठतम कार्यक्रम संपादित किये जाने चाहिये।

    1. उद्योगों को चलाने वालों को ये कार्यक्रम अपने उद्योग परिसर में अपने कर्मचारियों और परिचितों तथा पारिवारिक आश्रित लोगों के मध्य कम से कम 10 प्रतिशत के अनुपात से दी जाने की अनुमति दी जानी चाहिए । इसमें तकनीकी प्रशिक्षण अनिवार्यतः 10 प्रतिशत लोगों को दिया जाना चाहिये।

    2. डी.वी.डी. कार्यक्रमों के संचालन के प्रशिक्षण हेतु 10,000 तकनीकी लोगों की भर्ती की जानी चाहिये जो नये प्रशिक्षणार्थियों को इन कार्यक्रमों का संचालन करना सिखा सके। ये प्रशिक्षक छात्रों में कौन सा छात्र किस क्षेत्र में होशियार हो सकता है, उसका टैलेंट (अभिरूचि) किस क्षेत्र में उसे जल्दी आगे बढ़ा सकता है। इसका पता लगाकर छात्र को सही दिशा निर्देश देंगे। ये विद्यार्थी अपने टेलेंट से सीखे गये कार्य के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों की भी जानकारी हांसिल कर सकते हैं ताकि उस विषय से सम्बन्धित छात्रों का दिशा निर्देश कर सकें।

3. ये प्रशिक्षक समूह प्रशिक्षार्थयों की योग्यतानुसार उन्हें तकनीकी प्रशिक्षण की उच्चकांक्षाओं में भेज सकते हैं तथा उन्हें अपने क्षेत्र में केरियर बनाने और रोजगार प्राप्त करने का रास्ता भी दिखला सकते हैं।

4. कार्यक्रम की मूल भावना लोगों को, जो बेरोजगार या अर्ध बेरोजगार हैं, उन्हें अपने क्षेत्र का तकनीकी ज्ञान देने की है ताकि वे रोजगार पा सकें या स्वयं का रोजगार ही चला सके।

3. रोजगार की समस्त जानकारियाँ और सूचनायें विडियो में समाहित होनी चाहिये। वीडियो द्वारा तकनीक का प्रशिक्षण समय बचाने वाला होगा। इससे उन्हें तकनीक के लिये प्रायोगिक ज्ञान शीघ्र और सटीक प्राप्त होगा।

4. छात्रों के लिये 1000 प्रायोगिक प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किये जाने चाहिये ताकि अपनी तीन माह की प्राथमिक ट्रेनिंग के बाद वे इन केन्द्रों में आ सकें। उन्हें प्रायोगिक प्रशिक्षण देना अत्यन्त आवश्यक है। इसे प्राथमिकता दी जानी चाहिये।

5. अमेरिका की परिस्थितियाँ-स्थितियाँ-संभावनायें और परिवेश की जरूरत को देखते हुए किस स्थान पर किस व्यवस्था की आवश्यकता है इसके लिये वैज्ञानिकों और सकल व्यापारियों की सम्मिलित समीतियाँ गठित की जाय जो इन प्रशिक्षार्थियों या सीखे हुए तकनीकी लोगों को सही जगह पर उपयोग में ला सकें।

सारे देश में दूरदर्शन (टी.वी.) के कार्यक्रम राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के आयोजित हों।

सारे राष्ट्र में चौबीसों घंटे 1000 विभिन्न रोजगार सम्बन्धी कार्यक्रमों का प्रसारण अनिवार्यतः होना चाहिये। टी.वी. (दूरदर्शन) के इन चैनलों पर लोग इन नये रोजगार कार्यक्रमों की तकनीक को समझ कर अपनी रूचि का कार्य चुन सकते हैं। अपने केरियर और व्यक्तित्व को निखारने के लिये कौन सा कार्य उपर्युक्त होगा यह जानकारी इन चैनल से युवाओं को प्राप्त हो सकेगी तभी वे अपने लिये उपयुक्त रास्ता चुन सकेंगे।

5. कोई भी व्यक्ति अपने जीवन-यापन के लिये अपनी रूचि का कार्य चुनता है तो उसमें उसे शीघ्रता से सफलता प्राप्त हो सकती है और उसका मस्तिष्क अपने कार्य की प्रगति के लिये नई-नई संरचनायें कर सकता है। किंतु अरूचि से सीखे कार्य में असफलतायें तो होंगी ही, जीवन भी व्यर्थ नष्ट हो जायेगा। अस्तु प्रशिक्षण का यह सर्वोत्तम तरीका है कि प्राणी को उसकी रूचि के अनुसार ही कार्य मिले।

उपर्युक्त योजना का अनुमानित व्यय

	योजना	अनुमानित व्यय
1.	1000 डीवीडी बनाने और उन्नत करने का कुल खर्चा	1 बिलियन (एक बिलियन प्रत्येक के अनुसार)
2.	24 घंटा दूरदर्शन पर प्रशिक्षणार्थ चैनल चलाने का कुल व्यय	500 मिलियन डालर
3.	अतिरिक्त समय में कार्य करने वाले प्रशिक्षकों का वेतन (10,000 विशेष विभाग 2000 प्रतिमाह प्रत्येक को बारह माह	2.4 बिलियन डालर
4.	संचालन तथा प्रशासकीय व्यय	100 मिलियन डालर
5.	एक हजार पाठ्यक्रमों के विश्वविद्यालयों पर	1 बिलियन डालर
	कुल व्यय	5 बिलियन डालर

एक वर्ष में कितनी संख्या में छात्र प्रशिक्षित होंगे

= 15 विद्यार्थी प्रत्येक कक्षा में तीन माह के लिये।
x 2 कक्षायें प्रतिदिन दो घंटे के लिये
x 4 दल कक्षाओं के एक वर्ष में
= 60 विद्यार्थी एक वर्ष में प्रशिक्षित
x 100, 000 कक्षा के कमरे
= 12 मिलियन छात्र प्रतिवर्ष प्रशिक्षित

इस प्रकार प्रत्येक प्रशिक्षार्थी पर मात्र 500 डालर खर्च हैं, जो कि सामान्य मासिक व्यय है। यह व्यय अमेरिकन सरकार कर सकती है और अमेरिकन बेरोजगार नागरिकों को उनकी रूचि के रोजगार चुनने और उसमें दक्षता (होशियारी) हांसिल

करवा सकती है। अपनी ट्रेंनिंग समाप्त करने के बाद अपनी रूचि के अनुसार किसी भी कारखाने या उद्योगो में वे प्रशिक्षित, तकनीशियन, एपेरेंटिस, प्रोबेशनर्स सिद्ध हो सकते है। उनकी इच्छा के अनुरूप अपने रूचि के अनुसार चुने हुए क्षेत्र में वे अपने ज्ञान का सदुपयोग कर अपने कार्य की प्रगति देश हित में कर सकते हैं।

करोड़ों अमेरिकन्स और अन्य देशवासी भी इन डी.वी.डी. कार्यक्रमों को उचित कीमत में खरीद कर घर बैठे ज्ञानार्जन कर सकते हैं। उनका घर ही उनके लिये विश्वविद्यालय हो सकता है। सम्पूर्ण योजना का पाठ्यक्रम इस दूरदर्शन विश्वविद्यालय द्वारा घर पर ही प्राप्त हो सकता है। समस्त विश्व में कहीं भी कोई भी इन 1000 विषयों की जानकारी विस्तार से प्राप्त कर सकता है। यह वर्च्युअल विश्वविद्यालय योजना हर किसी को विषय के बारे में खोज का सुविधाजनक रास्ता प्रदान करेगा। उन्हें विश्व के सिद्धहस्त सफल वैज्ञानिकों, तकनीशियनों का मार्गदर्शन घर बैठे प्राप्त हो सकेगा।

वर्तमान में अमेरिकन सरकार जनता से प्राप्त करों (Tax) के धन का ऐसी जगह उपयोग कर रही है जिसका प्रतिफल R उसे कुछ नहीं मिलता। जबकि इस योजना द्वारा जिसमें कि 5 बिलियन डालर का सामान्य निवेश 20 बिलियन डालर का प्रतिवर्ष अतिरिक्त धन राजस्व के रूप में सरकार को मुहैय्या करवा सकता है। बेरोजगारी की समस्या जिसमें कि बेरोजगार भत्ते पर सरकार को अपार धनराशि व्यय करनी पड़ती है, सरकार व्यय के इस बोझ से भी मुक्त हो सकती है। अतः यह कार्यक्रम अमेरिकन सरकार को तुरंत युद्धस्तर पर लागु कर देना चाहिए जिससे सामान्य से सामान्य अमेरिकन नागरिक भी लाभान्वित हो सके।

सम्पूर्ण विश्व अमेरिकन सरकार की इस योजना की प्रशंसा करेगा क्योंकि उसे घर बैठे 1000 विभिन्न रोजगार क्षेत्रों की बारीकियों का ज्ञान मुफ्त में मिल जायेगा।

कुल व्यय - 5 बिलियन डालर

प्राप्ती - 500 बिलियन जी.एन.पी. में बढ़ोतरी

अध्याय - 10
किसानों की आय को 5 वर्ष में दुगना कैसे किया जाय?

यह बहुत ही खेद का विषय है कि विश्वभर में अकालग्रस्त राष्ट्रों में अमेरिका का पी.एल.-480 पर्याप्त मात्रा में गेहूँ व दालें आदि वितरण कर अकाल से जूझने में पूरा सहयोग करता है। उसी अमेरिका के किसान पर्याप्त आमदनी के अभाव में सामान्य सुविधाओं में जीवन-यापन करते है। इस स्थिति का निराकरण करने के लिये मैं कुछ सुझाव इस एक्शन प्लान में प्रस्तुत कर रहा हूँ जिससे किसान अपनी आमदनी दुगुनी करने में सक्षम हो सकेंगे । साथ ही उनके उत्पादन में भी चाहे वह फलों का हो, धान का हो या जड़ी-बूटियों का हों क्वालिटी और क्वांटिटी (गुणात्मक ओर संख्यात्मक) दोनों ही पक्षों में इजाफा होगा और अमेरिकन नागरिकों को भी पर्याप्त मात्रा में श्रेष्ठ उत्पादन प्राप्त हो सकेगा। बहुत से अमेरिकन किसान दिवालिया हो चुके हैं। अस्तु यह सरकार का दायित्व है कि वह उन्हीं के क्षेत्र में आय के नये साधन या नौकरियाँ उन्हें मुहैय्या करवाएं।

यदि इस पुस्तक में दिये गये एक्शन प्लान के सुझावों को क्रियान्वित किया जाय तो निश्चय ही 2 लाख नये कार्य या उद्योग चालू हो सकते हैं और किसानों की आय में 75 से 150 प्रतिशत तक आगामी 5 वर्षों में वृद्धि हो सकती है। यह वृद्धि सरकार के राजस्व में भी पर्याप्त वृद्धि कर सकती है।

1. बीज और इनको बोने की नई तकनीक जो नये प्रकार के 400 से अधिक फल, सब्जियाँ, जड़ी-बुटियां, बाँस, धान आदि उगाने में किसान को दक्षता दिलवाये। विश्व के उन्नत कृषि क्षेत्रों से मंगवाकर किसानों को सिखलाई जानी चाहिये। यह आयातित सामग्री किसानों को निःशुल्क दी जानी चाहिये।

2. एक दूरदर्शन चैनल केवल कृषि सम्बन्धी आधुनिकतम सूचनाओं, नये प्रयोगों, नई तकनीक के सम्बन्ध में जानकारी देने के लिये चौबीसों घंटे सम्पूर्ण राष्ट्र विशेषतः ग्रामीण क्षेत्रों में प्रसारित होना चाहिये।

3. एम.बी.ए. प्रशिक्षार्थियों या उत्तीर्ण नौजवानों को नये उत्पादों की मार्केटिंग

के लिये लगाया जाना चाहिये। सम्पूर्ण विश्व में ये अमेरिकन उत्पादों का प्रचार-प्रसार कर विक्रय को बढ़ाने का प्रयास करेंगे।

4. उपभोक्ता के पास वेगन, ट्रक या माल ढोने के अन्य साधन वातानुकूलित-स्वच्छ व अच्छे रख रखाव के होने चाहिये ताकि व्यापारी व उपभोक्ता तक ताजा माल पहुँच सके। बड़े-बड़े कोल्डस्टोरेज भी और यातायात (माल ढोने वाले) साधनों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये।

5. कृषि जानकारी के साथ-साथ अमेरिका में विशाल नक्शे, विश्व में विभिन्न राष्ट्रों की कृषि स्थिति दर्शाने के लिये संचालित हों। विभिन्न फसलों के लिये कौन सा क्षेत्र उपयुक्त है, इसकी सम्पूण जानकारी राष्ट्रव्यापी कम्प्युटर के द्वारा किसानों को दी जानी चाहिये । एक अतिरिक्त परिचय पत्र विभिन्न फसलों का हो और उसका जुड़ाव (Link) राष्ट्रव्यापी परिचय फार्म के साथ होना चाहिये।

6. सम्पूर्ण जानकारी दूरदर्शन द्वारा देश के किसानों को प्राप्त होती रहनी चाहिये। विशाल वेब पोर्टल से किसान अपने परिचयपत्र का नम्बर जोड़ कर यह जानकारी हांसिल कर सके कि उसके क्षेत्र में कौनसी फसल अच्छा उत्पाद दे सकती है और उस बीज व खाद को वह कहाँ से प्राप्त कर सकता है।

7. अनुमानतः 1000 डेमो फार्म (प्रर्दशन खेत) स्थापित किये जाने चाहिये और इन पर एन.जी.ओ. की मदद से किसान यह जानकारी प्राप्त कर सकें कि किन बीजों की उत्पादन क्षमता कैसी है? इनकी अन्य तात्कालिक सूचनायें भी उन्हें वहां से प्राप्त होनी चाहिये।

8. नवीनतम फलों, धानों, सब्जियों को कैसे उगाया जाए, उनका रख-रखाव कैसे किया जाय, किस प्रकार का खाद दिया जाय, इस समस्त जानकारी के लिये विभिन्न प्रकार के 400 डी.वी.डी. कार्यक्रम तैयार किये जाने चाहिये।

9. सामान्य जन एवं किसानों में नवीन जागरण हेतु कृषि अनुसंधानकर्ताओं, कृषि विशेषज्ञों, कृषि अध्यापकों व छात्रों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में डी.वी.डी.

के साथ सांध्यकालीन कक्षाओं का आयोजन कर निःशुल्क प्रशिक्षण देना चाहिये।

10. 400 कृषि शोधकर्ता स्नातकों को सरकार से पूर्ण प्रोत्साहन, सुविधा व आर्थिक सहायता प्रदान की जाये कि वे फलों, जड़ी-बूटियों, सब्जियों व धान की उन्नत फसलें जिनकी 400 से अधिक किस्में हों कि खोज करें व उनका प्रचार-प्रसार व प्रशिक्षण करें।

11. अर्न्तराष्ट्रीय स्तर के सलाहकार इस कार्य की खोज में लगाये जाने चाहिये कि किस प्रकार अमेरिकन किसानों को समृद्ध किया जाये? उनकी जीवन शैली को उन्नत किया जाये। इस एक्शन प्लान की योजना को किस प्रकार क्रियान्वित किया जाये कि किसान के जीवन स्तर में वर्तमान से 150 प्रतिशत अधिक इजाफा हो।

क्र.सं.	योजना	व्यय डालर में
1.	दूरदर्शन के निरंतर चलने वाले चेनल	200 मिलियन डालर
2.	किसानों के लिये वेबसाइट	50 मिलियन डालर
3.	400 नये प्रकार के फल, सब्जी जड़ी बुटियाँ उगाने, पनपाने के 400 डी.वी.डी. आधुनिकतम तकनीक और खोज के साथ कार्यक्रम।	200 मिलियन डालर
4.	1000 कृषी डेमो फार्म	900 मिलियन डालर
5.	प्रशासनिक व अन्य व्यय	50 मिलियन डालर
6.	400 शोधकर्ताओं के लिये छात्रवृत्ति	50 मिलियन डालर
	कुल व्यय	**1.5 बिलियन डालर**

अमेरिका वर्तमान में किसानों की सब्सिडी (आर्थिक छूट) पर 18 बिलियन डालर व्यय कर रहा है जबकि यह 1.5 बिलियन डालर का खर्च किसानों की आमदनी बढ़ाता हुआ उन्हें आत्मनिर्भर करने में सक्षम होगा।

कृषि उत्पाद को बढ़ाने व गुणात्मक रूप से श्रेष्ठ करने के सामान्य व्यय के नये तकनीकी प्रयोग

मशीन, खाद, पानी से भी बढ़कर पाया गया है कि पौधों पर भी पशुओं व

मनुष्यों की तरह भावनात्मक मधुरता का प्रभाव पड़ता है। पौधा भी आपके द्वारा उसे शनैः शनैः सहलाने से वैसी ही प्रसन्नता प्राप्त करता है जैसे अन्य पशु-पक्षी। लाजवंती का पौधा इस का ज्वलंत प्रमाण है। इसी प्रकार मधुर संगीत की भावनात्मक लयबद्धता से गायों, भैंसों का दूध बढ़ाया जा सकता है तो पौधों की उत्पाद क्षमता व उनकी गुणवत्ता क्यों नहीं बढाई जा सकती है? भारत में 1986 में डा. टी.एन. सिंह (प्रोफेसर बोटेनी, अन्नामलाई विश्वविद्यालय) ने वैज्ञानिक तरीके से इस बात को सिद्ध कर दिया है कि मधुर संगीत के द्वारा पौधों की वृद्धि शीघ्र होती है और वे पुष्ट भी होते है। डा. सिंह ने पौधों के मध्य वीणा (भारतीय तंत्र वाद्य गिटार की तरह) वादन कर यह सिद्ध किया। एक माह तक उन्होनें नर्सरी में नित्य 25 मिनट तक वीणा वादन किया और उनकी इन स्वर तरंगों ने पौधों में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि की।

प्रो. सिंह ने दूसरा प्रयोग चैन्नई और पांडीचेरी में किया। उन्होनें चारूकेशी नामक कर्नाटकी संगीत के मधुर राग को लाउडस्पीकर (ध्वनी विस्तारक) लगाकर उत्पाद की क्यारियों में गायन किया। परिणामस्वरूप पाया गया कि चावल के गुच्छों में चावल की मात्रा पहले से अधिक हो गई। 25 से 60 प्रतिशत तक की वृद्धि क्या चौंका देने वाली सफलता नहीं है? सुपारी और नारियल की उपजाऊ क्षमता व वृद्धि भी संगीत के द्वारा शीघ्र होती देखी गई है।

इसी प्रकार दक्षिण भारतीय नृत्य कला के भरतनाट्यम नृत्य का बिना घुंघरू के नृत्य का निरंतर संचालन नर्सरी के एक पौधे के समक्ष किया गया। पाया गया कि भरतनाट्यम के लयबद्ध पदचाप की ध्वनि से पौधे की वृद्धि नर्सरी के अन्य पौधों की अपेक्षा शीघ्र और समय से पहले ही हो गई। डा. सिंह के इन प्रयोगों से प्रेरित होकर मि. जार्ज ई. स्मिथ, जो अमेरिका की इलीनाइज विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हैं । उन्होंने भी नर्सरी के पौधों पर संगीत के प्रयोग किये और पाया कि संगीत प्रभावित पौधों की शाखायें नर्सरी के अन्य पौधों की अपेक्षा अधिक मोटी, मजबूत और हरेपन से आच्छादित हैं ।

इसी प्रकार एक नई तकनीक जिसका नाम है 'फोटो सोनिक्स' जो ध्वनि कला, ध्वनि प्रभाव और ध्वनि प्रेषण का अध्ययन कर रही है। इन अध्ययनों और शोधों द्वारा सिद्ध हो रहा है कि पौधों पर, फसलों पर ध्वनि का आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ता है।

भारतीय बंगाली वैज्ञानिक सर जगदीशचन्द्र बसु तो यह अठारवीं सदी में ही सिद्ध कर चुके हैं और पौधों की संवेदन ग्राह्यता को अमेरिका में दिखला चुके हैं।

हमारा सुझाव है कि सरकार इस ध्वनि और संगीत के पौधों पर प्रभाव के क्षेत्र में शोधकर्ताओं को सुविधायें, छात्रवृत्तियाँ और पुरस्कार देकर प्रोत्साहित करे। यह खर्च निश्चित रूप से अमेरिका में क्रांतिकारी हरितक्रांती का आरंभ करेगा और परिणाम आशातीत होंगे।

कुल व्यय - 1.5 बिलियन डालर
कुल बचत - 5 बिलियन डालर

अध्याय – 11

अमेरिका में सभी को मुफ्त कम्प्यूटर प्रशिक्षण कैसे दिया जाय?

इक्कीसवीं शताब्दी की गतिशीलता में यह अत्यन्त आवश्यक है कि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक कम्प्यूटर में सिद्धहस्त न भी हो तो उसके संचालन की सामान्य जानकारी तो उसे अवश्य होनी चाहिये। अमेरिका ही में 30 मिलियन नागरिक कम्प्यूटर का संचालन नहीं जानते। अस्तु सम्पूर्ण राष्ट्र में कम्प्यूटर का सामान्य संचालन ज्ञान व प्रशिक्षण दूरदर्शन के विशेष चैनल द्वारा लोगों को घर बैठे निःशुल्क दिया जाना चाहिये। कम्प्युटर का साहित्य भी दूरदर्शन द्वारा प्रसारित किया जाना चाहिये। शुरूआत करने वाले नागरिकों को एक के बाद एक अग्रिम कम्प्युटर पाठ्यक्रम में बढ़ावा दिया जाना चाहिये। अग्रिम पाठ्यक्रम C++, जावा, एस ए पी आदि सिखलाये जाने चाहिये। नैपस्टर की तर्ज पर पीयर टू पीयर (P to P) सीखने की सुविधा दी जानी चाहिये।

ये चैनल कार्यक्रम अत्यन्त रोचकता लिये हुए होने चाहिये ताकि सीखने वाला मनोरंजन तरीके से गेम्स की तरह इन्हें सीख सके। कम्प्युटर के ये इन्टरनेट चैनल घर बैठे जहाँ भी सीखने वाले हों सीख सकें, ऐसी सुविधा होनी चाहिये।

सरकार एक प्रकार से कम्प्युटर प्रशिक्षण की एक वर्च्युअल युनिवर्सिटी स्थापित कर दे।

इन कार्यक्रमों को केन्द्र सरकार की तरफ से पूरा अनुदान प्राप्त होना चाहिये।

यही नहीं चैनल के ये कम्प्युटर प्रशिक्षण संसार में कहीं भी दूरदर्शन द्वारा सीखे जा सकें, ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिये। इससे अमेरिका की साख भी बढ़ेगी और कम्प्युटर का क्षेत्र भी विस्तृत होगा।

इस चैनल के द्वारा संसार के सर्वश्रेष्ठ कम्प्युटर विशेषज्ञ अपना आई.टी. ज्ञान प्रसारित करेंगे।

कम्प्युटर प्रशिक्षण के रोचक और सार्थक उपयोग की जानकारी हेतु सिलीकोन वेली, कैलिफोर्निया में स्थापित दूरदर्शन परामर्शदाता संगठन जैसे (T I E) टाई, इन्डसवैली इन्टरप्राइजेज ग्रुप जहां कि कम्प्युटर शिक्षण के सर्वश्रेष्ठ विद्वान रहते हैं

जैसे भारतीय अजीम प्रेम जी, नारायणमूर्ति, साबिर भाटिया, सुहास पटेल, कँवल रेखी व अन्य से भी सहायता ली जा सकती है।

प्रस्तावित चैनल चलाने के लिये कोष हेतु राजकीय सहायता के अलावा अमेरिकी व विदेशी N.G.O. को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

कुल व्यय – 1 बिलियन डालर

अध्याय – 12
समस्त राष्ट्र में (वर्च्यूअल यूनीवर्सिटी) की स्थापना

अमेरिका में प्रतिवर्ष कॉलेज एज्यूकेशन अत्यधिक मंहगी होती जा रही है। एक सामान्य अथवा मध्यवृत्ति परिवारों के लिये अपनी संतानों को महाविद्यालय स्तरीय शिक्षा (कॉलेज एज्युकेशन) दिलाना बहुत कठिन होता जा रहा है जबकि राष्ट्र स्तर पर सर्वे करने से यह पाया गया है कि सैकेण्डरी या हायर सैकेण्डरी तक शिक्षण ग्रहण करने वाले युवाओं से उन छात्रों को रोजगार तथा नौकरी के अवसर अधिक प्रदान हैं जिन्होनें महाविद्यालय में स्नातक अथवा स्नातकोत्तर शिक्षण प्राप्त कर डिग्रियां हांसिल कर ली है।

सैकेण्डरी एज्यूकेशन से कालेज एज्युकेशन तक की इस आर्थिक बाधा को मिटाने के लिये सभी जिज्ञासु, ज्ञान पिपासु, छात्रों के लिये वर्च्युअल युनीवर्सिटी की स्थापना सरकार द्वारा की जानी चाहिये और यह सुविधा केन्द्र से लेकर प्रांत व प्रांत से लेकर सुदूर कन्ट्री साइड (ग्रामीण) तक के छात्रों को उपलब्ध होनी चाहिये। इसके लिये 3 बिलियन डालर का व्यय सरकार को वहन करना होगा। इसके संचालन हेतु देश के शिक्षाविद अपने-अपने विषय के मास्टरमांइड लोगों का दल, जिन्हें सरकार पूर्ण स्वायत्तता देकर कार्य करने हेतु गठित करे। इनकी शैक्षणिक योजनाओं में किसी प्रकार की प्रशासनिक दखलंदाजी नहीं होनी चाहिये।

सरकार को वर्च्युअल युनिवर्सिटी से किसी प्रकार के राजस्व या आर्थिक लाभ की आशा नहीं करनी चाहिये। यह वर्च्युअल युनिवर्सिटी 500 से भी अधिक विभिन्न क्षेत्रों (एवेन्यु) में शिक्षण की सुविधा उपलब्ध करवायेगी। 5,000 प्रोफेसर पूर्णकालिक (फुलटाइम) सेवायें इस शिक्षण हेतु देंगे एवम् 10,000 प्रोफेसर तथा विषय के एक्सपर्ट अंशकालिक (पार्टटाइम) सेवायें देंगे। विषयों सम्बन्धी सारा साहित्य वार्तालाप कक्षों (चॉटरूम) में उपलब्ध होगा ताकि प्रतिभागी छात्र विषयों पर खुलकर चर्चा कर सके। जिन छात्रों या लोगों ने इस युनिवर्सिटी के कार्यक्रमों के माध्यम से अपने विषय में योग्यता हांसिल कर ली है उन्हें डिग्रियां और प्रमाण-पत्र आदि देने का अधिकार गठित समिति के पास होना चाहिये। इन प्रमाण-पत्रों व डिग्रियों की मान्यता भी विश्वभर में की जानी चाहिये।

अनुमानतः 2000 प्रोफेसर विदेशों में भी नियुक्त किये जाने चाहिये जो वर्च्युअल युनिवर्सिटी के विषयों का अध्यापन छात्रों को घर बैठे करवाये। इन्टरनेट सुविधा भी उपलब्ध कराई जानी चाहिये। यह विश्वविद्यालय भी विश्वभर में अन्य विश्वविद्यालयों की संरचना के अनुरूप ही चलेगा। (पीयर टु पीयर) शिक्षण नेपस्टर की तरह उपलब्ध कराने हेतु इन्टरनेट व्यवस्था सुचारू रूप से लागु की जानी चाहिये?

यह वर्च्युअल युनिवर्सिटी द्वारा समस्त संचार में प्रसारित-प्रचारित विभिन्न विषयों का अध्यापन कार्य निश्चित रूप से अमेरिका का सम्मान संसार के विद्वत्जनों की नजरों में बढ़ाने में सफल होगा।

कुल व्यय - 1 बिलियन डालर

अध्याय – 13
शिक्षण पद्धति में सुधार

निश्चय ही अमेरिका में किशोर एवम् नौजवान छात्रों को हाईस्कूल से लेकर स्नातकोत्तर कक्षाओं में पाठ्यक्रमों के द्वारा उत्तम शिक्षण प्राप्त होता है। उनका आई. क्यू. निश्चित ही विश्व के अन्य छात्रों की तुलना में अधिक होता है फिर भी केवल यह पुस्तकीय सर्वोत्तम ज्ञान ही युवाओं के निर्माण हेतु पर्याप्त नहीं है। संस्कार, नैतिकता, अतिभौतिकवाद से छुटकारा, आध्यात्म योग, ध्यान, सादगी, मानवीय संवेदना । अन्य और भी ऐसे कई विषय है जिनका अमेरिकन शिक्षण क्षेत्र में सम्मिलित किया जाना उसके विश्व शांति, मानवाधिकार रक्षा, लोकतंत्र की सुरक्षा के लिये पहली आवश्यकता है। अस्तु हाईस्कूल से महाविद्यालय तक के शिक्षण पाठ्यक्रमों में निम्नलिखित विषयों को सम्मिलित किया जाना चाहिये:

1. **ध्यान योग :** आधुनिक युग में मानव समुदाय तनाव की स्थिति में जी रहा है। तनाव के कई कारण है। इस तनाव के कारण ही मनुष्यों को कई प्रकार की बीमारियों का सामना करना पड़ता है। अमेरिका जैसे विकसित देश में ही केंसर-साईकिक-ब्रेन डिस्ट्रेस जैसे बीमारियों के अनेक रोगी हैं। यह तनाव ही अमेरिका में लोगों को ड्रग एडिक्ट किये जा रहा है। अमेरिका में ड्रग्स की खपत इतनी अधिक क्यों है? तनाव इसका एकमात्र कारण है और ध्यान M ही इसका एकमात्र उपचार है। ध्यान योग की कक्षायें पाठ्यक्रम में विभाजित क्रम के अनुसार हाईस्कूल से कॉलेज स्तर तक की कक्षाओं में उन्हें प्रशिक्षकों द्वारा दी जानी चाहिये।

   इस प्रशिक्षण से 'ध्यान' छात्रों का स्वभाव बन जाएगा बजाय 'ड्रग एडिक्ट' होने के । वे 'मेडीटेशन एडिक्ट' होगें जो उनके जीवन को सार्थक बनाने में सफल होगा।

2. **संगीत :** प्राणीमात्र का जीवन संगीतमय है। यहाँ तक की पौधे भी संगीत से जीवनी शक्ति पाते है।

संगीत जीवन को तनाव मुक्त करता है। संगीत जीवन को मनोरंजन प्रदान कर समस्याओं से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है। संगीत शरीर के स्नायु मंडल में शिथिलीकरण कर नवीन उर्जा का संचार करता है। अस्तु ऐसे अद्वितीय उर्जा के स्त्रोत को शिक्षा से अलग कैसे रखा जा सकता है।

'बिठोवन' और 'मोजार्ट' के संगीत से कौन परिचित नहीं है जिनका संगीत मानव संवेदनाओं को उभारने में अद्वितीय है।

संगीत मस्तिष्क को स्वस्थता प्रदान करता है और स्वस्थ मस्तिष्क से ही शरीर भी स्वस्थ रह सकता है। अस्तु यदि अमेरिकन्स को आत्मिक और आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ तथा तनाव रहित जीना है तो शिक्षण में संगीत का पर्याप्त समावेश किया जाना चाहिये।

कोलाहल और शोरगुल का संगीत छोड़कर बिठोवन-मोजार्ट-भारत के संगीत का शिक्षण में समावेश नई पीढ़ी को शांत व उदारमना बनाने में सहायक होगा।

3. **पोषक आहार का शिक्षण :** वर्तमान में अमेरिकन युवाओं में फास्टफूड-डिब्बाबंद-पकी पकाई सब्जियाँ आदि खाने की प्रवृत्ति अधिक बढ़ रही है जो शनैः शनैः स्वाद के मोह में फंसाकर रोगों की ओर धकेलती जा रही है। मोटापे (ओबेसिटी) का सीधा सम्बन्ध है कि हम क्या खाते हैं और पचाने के लिये कितना शारीरिक श्रम करते हैं? विद्यालयों में पोषक तत्वों की जानकारी, ताजा फलों, पत्तीदार सब्जियों और खाद्य सामग्री का महत्व, शाकाहार और मांसाहार के शरीर तथा मस्तिष्क पर प्रभाव आदि विषयों की जानकारी कक्षाओं में खूब दी जानी चाहिये। यह प्रशिक्षण किशोर छात्रों के मनोविज्ञान में वृद्धि करेगा और वे बजाय जंक तथा फास्टफूड खाने के पोषक और ताजा खाद्य पदार्थ खाने के आदी बनेंगे। संतुलित पोषक आहार ही युवा पीढ़ी को स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मस्तिष्क प्रदान करेगा।

4. **देशभक्ति एवम् नैतृत्व क्षमता :** किसी भी राष्ट्र की युवा शक्ति में देशभक्ति का ज़ज्बा व नेतृत्व करने की क्षमता होनी ही चाहिये। राष्ट्र के प्रौढ़ व वृद्ध चिंतन कर सकते हैं किंतु उसके राष्ट्र हितकारी चिंतन की

क्रियान्विती तो युवा शक्ति द्वारा ही होती है। युवा शक्ति ही नया इतिहास रचती है पुरानी अनावश्यक सड़ी-गली परंपराओं को तोड़ती है।

पाठ्यक्रमों में आरम्भ से लेकर अंतिम कक्षाओं तक देशभक्ति की घुट्टी अच्छे आदर्श चरित्रवान शिक्षकों द्वारा पिलाई जानी चाहिये। नींव मजबूत होगी तभी महल कई तूफानों से जूझ सकता है। 9/11 की घटना के बाद तो युवा विद्यार्थियों में शिक्षण के द्वारा देशभक्ति और नेतृत्व शक्ति को सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये ताकि हम अपने छुपे हुए दुश्मनों को परास्त कर सकें।

5. **इन्टरएक्टिव शिक्षण :** इस 21वीं सदी में अमेरिकन विद्यालयों, महाविद्यालयों में 'हेप्पीनेस टी.वी.' और 'वर्च्युअल यूनिवर्सिटी' के 500 पाठ्यक्रमों के द्वारा सारे राष्ट्र के छात्रों को आधुनिकतम तकनीक का ज्ञान दिया जाना चाहिये। इलेक्ट्रॉनिक बोर्ड की भूमिका इसमें अत्यन्त महत्वपूर्ण है अतः उसका प्रयोग विशदरूप में होना चाहिये।

विश्व में किसी भी क्षेत्र में कोई भी उपयोगी आविष्कार हुआ हो तो इन्टरनेट द्वारा उसकी जानकारी तुरंत छात्रों को दी जानी चाहिये।

इतिहास और भूगोल जैसे विषयों का ज्ञान वास्तविक दृश्यों को दिखलाते हुए इन्टरएक्टिव डी.वी.डी. के द्वारा छात्रों को दिया जाना चाहिये। यह रोचक भी होगा और छात्रों द्वारा शीघ्र ग्रहणशील भी होगा।

6. **साहित्य :** इस इलेक्ट्रॉनिक युग में सारा ज्ञान मशीन आधारित और सहज प्राप्य हो गया है। सूचना प्राप्ति की दृष्टि से तो यह क्रांतिकारी कदम है किंतु दूसरी तरफ छात्रों की पढ़नें व लिखने की प्रवृत्ति प्रायः लुप्त होती जा रही है। छात्र की अभिव्यक्ति की क्षमता नष्ट हो रही है अस्तु विद्यालयों-महाविद्यालयों में वाद-विवाद प्रतियोगिता, कविता पाठ, पत्रवाचन प्रवृत्तियाँ निरंतर जारी रहनी चाहिये। इससे छात्रों की वाक् शक्ति और लेखन शक्ति का क्षरण होने से बच जायेगा। चर्चिल की वक्तृता शक्ति ही जनता पर प्रभावी थी। रूजवेल्ट की ओजस्वी वाणी का

अमेरिका कायल था। अतः ये दैविक गुण लुप्त नहीं होने चाहिये। छात्रों को इनका अभ्यास यदा-कदा कराते रहना चाहिये।

7. **चैनल :** सीसेम स्ट्रीट दूरदर्शन की तरह 24 घंटे शिक्षण कार्यक्रम प्रसारित किये जाने चाहिये जिनमें विभिन्न व नवीनतम विषयों को भरा गया हो।

8. **प्रतियोगिताएं :** स्कूल से लेकर कॉलेज स्तर तक निरंतर प्रतियोगितायें होनी चाहिये और विजेता एवं योग्य विद्यार्थियों को मेडल प्रदान किये जाने चाहिये। साथ ही प्रमाण-पत्र व पुरस्कारों से भी उन्हें नवाजा जाना चाहिये। ये सब छात्रों को प्रेरित और उत्साहित करने के लिये अत्यन्त आवश्यक है।

100 मिलियन डालर का बजट प्रतियोगिताओं के आयोजन, पारितोषिक वितरण आदि के लिये रखा जाना चाहिये।

कुल व्यय - 1 बिलियन डालर

अध्याय – 14

रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिये पर्यटन को बढ़ावा अनिवार्य

पर्यटन के लिये अमेरिका निःसंदेह एक आकर्षक सुन्दर और प्राकृतिक दृश्यों, ईमारतों आदि की दृष्टि से पर्यटकों को मोहित करने वाला राष्ट्र है। किंतु आश्चर्य है कि अमेरिकन सरकार का केन्द्रीय प्रशासन इस बृहत् आय के स्त्रोतों के प्रति उदासीन है। यहां तक की देश में केन्द्रीय स्तर पर पर्यटन विभाग ही नहीं है।

यात्रा से कहीं अधिक पर्यटन महत्वपूर्ण है , पर्यटन से यातायात, खाद्य पदार्थ और उनका वितरण, दुकानें, मनोरंजन, सुरूचिपूर्ण क्षेत्रीय विशेषताओं आदि के प्रदर्शन, क्रय-विक्रय की अनेक संभावनायें पर्यटन से जुड़ी हुई है।

अस्तु यदि इस दिशा में सक्रिय योजना क्रियान्वित की जाय तो आगामी 5 वर्षों में पर्यटकों की आगमन संख्या 100 प्रतिशत बढ़ाई जा सकती है जिससे 3 लाख नये रोजगार के क्षेत्र विकसित हो सकते हैं तथा राजस्व में भी अप्रत्याशित रूप से वृद्धि हो सकती है।

संघीय शासन को इससे राजकोष वृद्धि के आशातीत अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

एक्शन प्लान

1. एक स्वायत्तशासी समिति, एन.जी.ओ. और पर्यटन व्यापार के पूर्ण जानकार व्यापारियों से मिलकर बनाई जाये जो छः विभिन्न प्रकार के दूरदर्शन चैनल पर अंग्रेजी, चाईनीज, जर्मन, फ्रेंच ओर जापानी भाषा में हों। ये चैनल, पर्यटन की प्रगति व इस व्यापार को आगे बढ़ाने में तथा अमेरिका का सम्बन्ध पूरे विश्व से जोड़ने में सहायक होंगे। इनसे बड़ी सफलता हांसिल की जा सकती है। ये चैनल अमेरिका की सकारात्मक मित्रतापूर्ण तस्वीर को विश्व के सामने प्रस्तुत करेंगे व उसे विश्व के साथ जोड़ने में सहायक होंगे। इनसे बड़ी सफलता हांसिल की जा सकती है।

2. पर्यटन के प्रचुर प्रचार हेतु कस्टम के नियमों को और अप्रवासी नियम (इमीग्रेशन रूल) को जो जटिल है उन्हें सरल बनाने की नितांत आवश्यकता

है ताकि सुदूर देशों से आये पर्यटकों को घंटों लाइन में खड़ा न रहना पड़े, वे मेहमान हैं, उनका स्वागत होना चाहिये। उन्हें अपनत्व महसूस होना चाहिये।

उनका सामान ढोने के लिये जो ट्रालियाँ 2 डालर वसूल करती हैं, इसे रोककर यह सेवा मुफ्त दी जानी चाहिये। बड़े-बड़े हवाई अड्डों पर यह मुफ्त सेवा शुरू कर देनी चाहिये।

पर्यटन की सूचनाओं से परिपूर्ण, सूचना केन्द्र अमेरिका के प्रत्येक बड़े-बड़े हवाई अड्डों पर खोल दिये जाने चाहिये जिन पर अमेरिका के शहरों की बसावट, रमणीक व ऐतिहासिक स्थलों की पुस्तकें व नक्शे पूरी जानकारी देते हुए छपे हुए हों और पर्यटकों को मुफ्त या बहुत कम कीमत पर प्राप्त होनी चाहिये। पुलिस की भी पूरी सतर्कता पर्यटकों की सुरक्षा तथा आवश्यक निर्देश देने हेतु होनी चाहिये। करीब 200 पर्यटक स्थलों पर पर्यटकों की सुरक्षा व्यवस्था किया जाना अत्यन्त आवश्यक है।

पर्यटक की सभी सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए नये-नये होटल्स का निर्माण पर्यटन स्थलों के आसपास कराया जाना चाहिये। इससे केन्द्र सरकार का राजस्व खूब बढ़ेगा।

3. नये होटल के निर्माण को नई कर नीति के साथ प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। कम से कम 200 मुख्य पर्यटन स्थलों पर ध्वनि और प्रकाश (Light and Sound)के आकर्षक कार्यक्रम प्रसारित किये जाने चाहिये ताकि पर्यटकों को इन स्थलों का एक अनोखा ही आनन्द प्राप्त हो सके।

अमेरिकन दूतावासों में वीजा प्रक्रिया

दुनियाँ भर में अमरीकी दूतावासों में वीजा लेने वालों की लम्बी-लम्बी कतारें दिखलाई पड़ती है। अमेरिका संसार के लिये आकर्षण का केन्द्र है। अस्तु वीजा दी जाने वाली प्रक्रिया अत्यन्त सरल और सुगम होनी चाहिये। कार्य को जल्दी अंजाम देने के लिये कर्मचारियों की संख्या भी दुगनी कर दी जानी चाहिये।

15 सूत्रीय एक्शन प्लान

1. अमेरिकन राष्ट्र की सीमाओं को 9/11 की भीषणतम दुर्घटना के बाद अधिक सुरक्षित और अधिक सीलबंद चौकस करने की नितांत आवश्यकता है। इस कार्य के लिये समस्त अप्रवासी (इमिग्रेशन) कार्यालयों में अधिक बड़े बेंड के इन्टरनेट कनेक्शन कम्प्युटर के साथ होना अति आवश्यक है। इस प्रबंध से आतंकी गतिविधि राष्ट्र में कहीं भी होती है और वे अपने विध्वंसक इरादों को लेकर सक्रिय होते हैं तो इन्टरनेट के द्वारा तुरंत सारे राष्ट्र को इस कोने से उस कोने तक दिखलाई पड़ेंगे। ये इन्टरनेट इन्टरपोल, एफ. बी.आई. और सी.बी.आई. कार्यालयों से भी सम्बद्ध होने चाहिये ताकि ये सूचनायें शीघ्रातिशीघ्र इन कार्यालयों को भी दी जा सके।

2. राष्ट्रीय स्तर की वे निर्माण कार्य करने वाली कम्पनियाँ जिनकी साख अच्छी हो, जिनके रिकार्ड अपटु-डेट हों, उन्हें ही पर्यटन स्थलों पर रेस्टोरेन्ट, होटल्स आदि खोलने का जिम्मा दिया जाना चाहिये। केन्द्रीय हो या प्रांतीय प्रशासन ऐसी ही निर्विवाद कम्पनियों को जमीन प्रदान करे ताकि आंतकी खतरों की संभावना कम रहे तथा पर्यटकों को उचित कीमत पर सम्पूर्ण सुविधाजनक ठहरने की सुरक्षित जगह मिल सके।

3. 500 वीडियो फिल्में बनाई जानी चाहिये जिनमें अमेरिका के तमाम त्यौंहारों, ऐतिहासिक दिवसों, धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक खास-खास पर्वों तथा दर्शनीय स्थानों का पूरा-पूरा ब्यौरा आकर्षक तरीके से किया हुआ हो। ये वीडियो फिल्में उन एजेंटों गाइडों और पर्यटन के कार्य में जुड़ें लोगों को कम से कम कीमत पर मिलनी चाहिये। वेबसाइट पर भी इन्हें दिखलाने की सुविधा होनी चाहिये और पर्यटन सम्बन्धी जो विशेष दूरदर्शन चैनल सारे राष्ट्र में प्रसारित होता है, उससे भी इसका प्रसारण निरंतर होता रहना चाहिये।

4. सभी प्रसिद्ध दर्शनीय स्थानों एवं पर्यटन स्थलों पर 10,000 पर्यटन सुरक्षा सैनिकों की नियुक्ति अनिवार्यतः होनी चाहिये। यह "पर्यटक सुरक्षा सैनिक दल" अत्यन्त फुर्तीला, खोजी, व्यवहारी और खतरों तथा समस्याओं से जूझने वाला जुझारू होना चाहिये।

5. संघीय प्रशासन आने वाले पर्यटकों के दल के स्वागतार्थ-स्वागत उत्सवों का समय-समय पर आयोजन कर संगीत, माल्यार्पण या अन्य अमेरिकन रीति-रिवाज से पर्यटकों के आगमन पर उनका स्वागत करे।

6. पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु उच्चाधिकारी की नियुक्ति प्रत्येक अमेरिकन दूतावासों में की जानी चाहिए।

7. अनुमानतः 200 पर्यटन स्थलों पर प्रकाश और ध्वनि के (Light & Sound) कार्यक्रम बराबर दिखलाये जाने चाहिये।

8. 100 से भी अधिक पी.एच.डी. (शोधकार्य) हेतु छात्रवृत्ति का प्रावधान हो जो संसार के 10 प्रसिद्ध और दर्शनीय स्थलों का वर्णन करते हुए यह बतलायें कि वहां पर्यटन सफल होने के क्या-क्या कारण हैं और अमेरिका उनसे क्या सीख सकता है? थीसिस (शोधग्रंथ) का विषय होना चाहियेः

"वह पर्यटन में इतने प्रसिद्ध क्यों है और अमेरिका अपने पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये उनसे क्या सीख सकता है, उनकी क्रियान्विती अपने राष्ट्र के पर्यटन उद्योग में कैसे कर सकता है?"

9. अमेरिका से विदा होने वालों को यादगार हेतु एक विदाई स्मृति-चिन्ह (मोमेन्टो) पुनः आने का आग्रह करते हुए भेंट किया जाना चाहिये।

10. अमेरिका के लघु उद्योग और कुटीर उद्योग की वस्तुऐं अच्छी क्वालिटी की पर्यटन स्थलों पर प्रचुर मात्रा में प्रदर्शित होनी चाहिये। इसी प्रकार शाही रेल का भी चलन किया जाना चाहिये जो पूर्ण सुविधाजनक और शानदार तरीके से सजी हुई हो। पर्यटक ऐसी ट्रेन में यात्रा करना बहुत पसंद करते है।

11. केन्द्रीय एवं प्रान्तीय अमेरिकन सरकारों को विभिन्न प्रकार के मेले का और अमेरिका की जमीन, सभ्यता संस्कृति से सम्बन्धित त्यौंहारों का आयोजन करने वालों को खूब प्रोत्साहन देना चाहिये। इन त्यौंहारों के कथानक अद्वितीय और प्राकृतिक शोभा से परिपूर्ण हों जिनमें अमेरिकी वासियों के संघर्ष, मानवता के प्रति प्रेम, लोकतंत्र की भावना, आस्तिकवाद आदि का प्रभावी चित्रण हो या अभिनय हो। इससे अन्य देशवासियों को

अमेरिका के विश्वहितकारी चरित्र एवं व्यक्तित्व का पता लगेगा व इसकी सही तस्वीर लोगों के सामने आयेगी।

12. पर्यावरण सम्बन्धी पर्यटन (इकोट्यूरिज्म) का अमेरिका में खूब विकास किया जाना चाहिये। इससे स्थानीय समृद्धि में बढ़ोतरी होगी। इससे जीवन शैली को उच्चस्तरीय बनाने में सहायता मिलेगी। स्थानीय स्त्रोतों का दोहन और उनका सही उपयोग हो सकेगा। इससे अतिरिक्त राजस्व प्राप्ति के अलावा नैतिक प्रगति (इथीकल प्रोमोशन) परंपरावादिता और प्राकृतिक क्षेत्रों की सुरक्षा होगी जो पर्यटकों के विचरण हेतु खुले होंगे।

13. विज्ञापन के अनुसार जन जागरण, जनचेतना, पर्यटन के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करने के लिये सरकार को सामाजिक संगठनों को प्रोत्साहित करना चाहिये। जनसम्पर्क पर किया गया एक डालर का खर्च, बदले में 3 डालर की आमदनी करवाता है। अस्तु व्यावसायिक जनसम्पर्क के व्यक्तियों व संगठनों के केन्द्र बनाकर, अमेरिका के पर्यटन उद्योग को समृद्ध बनाने हेतु उपाय किये जाने चाहिये।

कुल आय– 1 बिलियन डालर

कुल अतिरिक्त आय– 30 बिलियन डालर

अध्याय– 15

नयी तकनीक द्वारा प्रचुर लाभ

आज के इस प्रतिस्पर्धी युग की दौड़ में अमेरिकी सरकार के लिये यह नितांत आवश्यक है कि विश्व में होने वाली आधुनिकतम तकनीक का ज्ञान अपने देशवासियों को मुहैय्या करवाये।

वैसे तो अनुसंधान और टेक्नोलॉजी में अमेरिका भी बहुत प्रगतिशील है। विश्व इसका लोहा मानता है फिर भी कई नई तकनीक जो इजाद हुई जैसे – स्टेम सेल जिस पर अभी–अभी अमेरिकन विज्ञान शोधकर्ता को नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया है। नीनी टेक्नोलोजी, कोल्डफ्यूजन, हाइड्रोजन ऊर्जा आदि का अमेरिका में शोध व उपयोग उनकी जीवन शैली में आश्चर्यजनक परिवर्तन ला सकता है।

इसके लिये प्रेसीडेंट स्तर पर एक कमीशन का गठन किया जाय जो इस कार्य हेतु प्राप्त धन का सही वितरण व उपयोग करे। इस कमीशन का प्रमुख कार्य उन खोजकर्ता, शोधकर्ता कम्पनियों को पूर्ण सुविधा देना है। इस कमीशन का मूल उद्देश्य उन कम्पनियों को प्रमोट करने का होना चाहिये जो नयी तकनीक का उपयोग और क्रियान्विती समझाने का प्रयत्न करती है। एक पूर्ण दक्ष नई तकनीकों के जानकार की नियुक्ति चेयरमैन के रूप में की जाये। संघ प्रशासन इस कार्य के लिये एक बिलियन डालर का कोष निर्धारित करे और इस कोष के धन का वितरण और उपयोग करने का पूरा अधिकार गठित कमीशन को हो जो रिसर्च (खोज) की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने के लिये करे।

कुल व्यय – 1 बिलियन डालर
आय बढ़ेगी – 200 बिलियन डालर

अध्याय - 16

आदर्श और आध्यात्मिक मूल्यों की अमेरिकन समाज में पुर्नस्थापना

इसमें संदेह नहीं कि अमेरिका पूर्णरूपेण आस्तिकवाद का पक्षपाती और ईश्वर में पूर्ण विश्वास रखने वाला राष्ट्र है। विश्व में अमेरिका की आध्यात्मिक आधारशिला बहुत समृद्ध और सबल है। यहां तक की अमेरिका के डालर्स नोट और सिक्कों पर यह अंकित है कि ''हम ईश्वर में विश्वास करते हैं''। यह पूर्णतः सिद्ध करता है कि अमेरिका, आध्यात्मिक, ईश्वरवादी, प्राचीन आदर्शों से संस्कारित राष्ट्र है। अमेरिका में दान पर आधारिक अनेक मानव हितकारी संस्थाएं चलती हैं जिनमें नागरिक मुक्त हस्त होकर दान करते है। इस कार्य में अपनी आय का सर्वाधिक प्रतिशत खुशी-खुशी देते हैं।

अमेरिका में खुली दुकानें, बड़े-बड़े डिपार्टमेंटल स्टोर एवम् माल ऐसे हैं जहां ग्राहक अपनी खुशी से अपने उपयोग की वस्तुऐं चुनता है, इसमें दुकानदार की कहीं कोई दखलंदाजी नहीं होती। व्यापार का यह नायाब तरीका सबसे पहले अमेरिका ही में शुरू किया गया जिसका अनुकरण बाद में विश्व के अनेक राष्ट्रों के बड़े-बड़े शहरों में किया जाने लगा। यह नागरिकों के आपसी विश्वास का अनूठा तरीका है।

यह अमेरिका में ही संभव है कि कोई भी विदेशी पांच वर्ष तक अमेरिका में रहने के बाद वहां की नागरिकता प्राप्त कर सकता है और सरकार द्वारा मूल नागरिक को प्रदत्त सुविधाओं के अनुसार ही सुविधायें प्राप्त कर सकता है। केवल सुविधायें ही नहीं वह उच्चस्तर की नौकरी तक पाने का हकदार हो जाता है चाहे वह नौकरी संघीय सुरक्षा विभाग ही की क्यों न हो। मनुष्य मात्र पर बिना भेदभाव के विश्वास करने का ऐसा दृष्टांत और किन राष्ट्रों में है?

प्यूरीटन्स जो यूरोप से वहां आये, उन्होनें आधुनिक अमेरिका को स्थापित किया। इनका पूर्ण आदर्शवान मानवधर्म ही सबसे बड़ा लक्ष्य था। इनके उच्च आदर्शों पूर्ण नियमों, जीवन शैलियों के ही कारण अमेरिका ने 100 वर्षों में ही आश्चर्यजनक प्रगति प्राप्त कर ली जिसे एशिया और योरोप के राष्ट्र 1000 वर्षों में भी प्राप्त नहीं कर सके।

किंतु कुछ वर्षों से अमेरिका में उदारवादियों के बदलते रवैये व चर्च को सरकार से अलग रखने की धारणा ने उच्चस्तरीय आदर्शों का हनन किया है। जिन मानवीय आदर्शो पर अमेरिका का समाज टिका है उसे सही दिशा यह नहीं दे पा रहे हैं। अस्तु अमेरिका में आध्यात्मिकता, आस्तिकवादी, मानवधर्म को पुनः स्थापित करने के लिये सरकार को अपनी सक्रिय भूमिका निभाते हुए आगे आना चाहिये।

हम इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये इस एक्शन प्लान में कुछ सुझाव प्रस्तुत कर रहे हैं :

भारत भूमि पर आचार्य महाप्रज्ञ ने एक नया अध्याय, एक नया अभ्यास प्रारंभ किया है जिसका नाम है "जीने का विज्ञान और प्रेक्षाध्यान"। यह पाठ्यक्रम प्राथमिक शालाओं से लेकर स्नातकोत्तर कक्षाओं तक सैद्धान्तिक रूप से पढ़ाया जाना चाहिये और प्रायोगिक रूप से करवाया जाना चाहिये। निश्चय ही यह अभ्यास और इस प्रकार का ज्ञान छात्रों में नये आदर्शों और मानवहितकारी सिद्धान्तों को स्थापित करेगा।

विश्व समुदाय में आध्यात्मिक मूल्यों को फिर से स्थापित करने के लिये महाप्रज्ञ जी ने (थ्री डाइमेंशनल प्रोग्राम) का शुभारम्भ किया है। महाप्रज्ञ जी का महान दृष्टिकोण है कि मनुष्यों में आदर्श के मूल्य और आध्यात्मिक चेतना केवल बाहरी दिखावे के आचार व्यवहार से नहीं की जा सकती। यद्यपि यह भी आवश्यक है पर यही सब कुछ नहीं है। अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति के लिये और भी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। इन मूल्यों को स्थापित करने के लिये कक्षाओं में केवल प्रवचन और भाषण देने मात्र से स्थायी रूप से कुछ नहीं हांसिल होगा। इसके लिये आवश्यकता है आंतरिक परिवर्तन की, इसके लिये आवश्यकता है भावना में सद्विचारों को स्थापित करने की जो केवल प्रवचनों और व्याख्यानों से नहीं किया जा सकता।

आचार्य महाप्रज्ञ जी ने वैज्ञानिक तरीके से इस रूपांतरण हेतु मानव मस्तिष्क की **'प्यूटिचरी ग्लैंड'** का सूक्ष्म अध्ययन और निरीक्षण किया। उन्होनें इस ग्लैंड को रूपांतरण की कुंजी के रूप में देखा। अस्तु उन्होनें कुछ विशिष्ट तकनीक (अभ्यास द्वारा) इस मानव मस्तिक की 'प्यूटीचरी ग्लैंड' को सक्रिय करने के लिये प्रस्तुत की जिससे शरीर में कुछ रासायनिक परिवर्तन होंगे और ये युवाओं के व्यवहार में अभूतपूर्व परिवर्तन करने में सक्षम होंगे, यह प्राकृतिक रूपांतरण स्थायी होगा।

इनका यह शोध (थ्री डाइमेंशनल एप्रोच) ''अणुव्रत'' (छोटी छोटी प्रतिज्ञायें) के नाम से विश्व प्रसिद्ध है। यह जीने का विज्ञान और स्वयं को स्वयं के द्वारा देखना 'प्रेक्षाध्यान' कहलाता है। यह ध्यान युवाओं को आदर्शोन्मुख करता है। छोटे-छोटे व्रतों की पालना से बड़े व्रतों को पालने की शक्ति प्राप्त होती है। यह मनोवैज्ञानिक परिवर्तन जीवन शैली में आश्चर्यजनक रूप से रूपांतरण करता है। निरंतर ध्यान और छोटे-छोटे संकल्प जिन्हें अनुप्रेक्षा, कहा गया है शरीर मन और मस्तिष्क तीनों को आध्यात्मिक चेतना की ओर ले जाते हैं।

जीवन जीने का यह विज्ञान और इससे हुआ रूपांतरण युवाओं को, मानव मात्र को हिंसा, घृणा, प्रतिशोध, ईर्ष्या आदि मनोविकारों से विरत करता है और शांति, अहिंसा, प्रेम की तरफ अग्रसर करता है। इस क्रिया में कुछ सरल यौगिक क्रियाओं को करना आवश्यक है जिनके द्वारा शरीर में और मस्तिष्क में रासायनिक परिवर्तन होते हैं, यही अनुप्रेक्षाध्यान है जिसके द्वारा बच्चों में आंतरिक रूपांतरण सम्भव है।

महाप्रज्ञजी ने वृद्धों, प्रौढ़ो, युवाओं के लिये 'प्रेक्षाध्यान' (पर्सपेक्टिव मेडीटेशन) के द्वारा स्वयं को देखने, स्वयं को जाँचने की प्रक्रिया का वैज्ञानिक अन्वेषण किया है। स्व-निरीक्षण ही जीवन में वास्तविक प्रसन्नता उत्पन्न कर सकता है। ''प्रेक्षाध्यान'' की महाप्रज्ञ द्वारा यह वैज्ञानिक खोज अध्यापकों, प्राध्यापकों, विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों और सामान्य नागरिकों में बहुत ही प्रसिद्ध हुई है और अपनाई गई है। खास प्रक्रिया का यह उपचार आंतरिक विकारों से मुक्ति दिलाकर नये सद्‌गुणों को स्थापित करने में पूर्ण सक्षम है।

आचार्य महाप्रज्ञ की यह (थ्री डाइमेन्शनल) प्रस्तुति, यह वैज्ञानिक खोज मनुष्य मस्तिष्क और शरीर पर पूर्ण प्रभावी पाई गई है, आज के युग में तनावग्रस्त और नैराश्यवाद में डूबे हुए प्राणी के लिये ये प्रेक्षा और अनुप्रेक्षाध्यान की प्रक्रियायें नौका के समान उसे पार उतारने में सक्षम है।

अधिक विस्तार से प्रेक्षाध्यान के बारे में जानकारी हासिल करने के लिये मैं अमेरिकन नागरिकों से http://www.preksha.com को देखने की अपील करता हूँ।

संघीय प्रशासन को आर्थिक सहायता देते हुए प्रेक्षाध्यान के केम्प अमेरिका के विभिन्न शहरों में भिन्न-भिन्न स्थानों में लगवाने का प्रयत्न करना चाहिये।

हेप्पीनेस टी.वी. पर प्रेक्षाध्यान के कार्यक्रमों का शुभारम्भ होना चाहिए।

12 ट्रीलियन वार्षिक जी.एन.पी. (G.N.P.) के समृद्ध राजकोष के साथ आज अमेरिका विश्व का सर्वशक्तिमान राष्ट्र है। अस्तु समृद्धि (अर्थ की) के साथ यह नितांत आवश्यक है कि देश के नागरिकों में आध्यात्मिक जागरण पुनः स्थापित किया जाय। उन मानवीय आदर्शों को पुनः स्थापित किया जाय जिसकी नींव पर यह महान राष्ट्र खड़ा है।

भौतिक समृद्धि के अतिरिक्त मनुष्य को मानसिक शांति व वास्तविक प्रसन्नता की अत्यन्त आवश्यकता है। अस्तु 'हेप्पीनेस' नाम के दूरदर्शन चैनल के राष्ट्रव्यापी प्रसारण की शीघ्र और नितांत आवश्यकता है। अमेरिका का संविधान मानव सुविधा व प्रसन्नता के लिये सरकार को निरंतर प्रयत्नशील रहने का निर्देश देता है। उसी कड़ी में सरकार के अन्य प्रयासों के साथ दूरदर्शन पर प्रसारित हेप्पीनेस चैनल दूरगामी परिणामों को निश्चित ही हांसिल करवायेगा और नागरिकों को शांतिपूर्ण प्रसन्नजीवन यापन करने का दिशा निर्देश देगा।

हेप्पीनेस चैनल के कार्यक्रमों की रूपरेखा, पटकथा एवं साजसज्जा और कथावस्तु के लिये बिलगेट्स, एन्थोनी रोबिन्स और लुइस एल हेय जैसे दिग्गजों से परामर्श ली जानी चाहिये। इन विद्वानों के द्वारा विश्व के महान सफलतम महापुरूषों के जीवन जीने के रहस्यों को चैनल पर इस तरह सरल रूप से प्रस्तुत किया जाए कि दर्शक नागरिक अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन तथा अपनी जीवन शैली में उनको उतार सकें और इसी के साथ प्रेक्षाध्यान की प्रक्रियाओं का भी प्रचार-प्रसार इस चैनल के द्वारा किया जाना चाहिये।

संघीय प्रशासन को दूरदर्शन के इस चैनल के लिये 500 मिलियन डालर की प्रतिवर्ष राजकीय सहायता देनी चाहिये। करदाताओं का यह निवेश बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा तथा अमेरिकन नागरिकों में जीवन की वास्तविक खुशी की लहर फैला देगा। भौतिक समृद्धि के साथ आध्यात्मिक समृद्धि न हो तो जीवन जीने का कोई अर्थ ही नहीं होता।

कुल व्यय - 1 बिलियन डालर

अध्याय –17
स्वास्थ्य सुरक्षा पर पुनः विचार

अमेरिका संसार में सबसे अधिक धन राशि स्वास्थ्य सुरक्षा पर खर्च करता है। आधुनिक स्वास्थ्य रक्षा के तरीकों पर 1.3 ट्रिलियन डालर प्रतिवर्ष व्यय होता है। इसके उपरांत भी 60 प्रतिशत अमेरिकन नागरिकों का स्वास्थ्य बीमा नहीं है। मोटापा (ओबेसिटी) एड्स, केंसर आदि से ग्रसित रोगियों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। ऐसा क्यों है?

आधुनिक स्वास्थ्य प्रणाली आज भी अस्थिर (इन्कन्सिस्टेंट) सिद्धान्तों पर आधारित हैं जिसमें परिवर्तन होता रहता है। जिन दवाईयों का प्रयोग बीमारियाँ भगाने के लिये दस वर्ष पहले किया जाता था वह आज निरर्थक घोषित कर दी गई है क्योंकि इनको जहरीले (टॉक्सिस्) प्रभाव के कारण कतई उपयोगी नहीं माना गया है। यदि एलोपैथी औषधियों का सिस्टम पूरी तरह वैज्ञानिक है तो उन्हें पहली बार ही में स्वीकृत और वितरित कैसे किया गया, इसका उपाय करना चाहिए।

विज्ञान का अर्थ है कि पदार्थ की स्थिति और गुणवत्ता पर निरंतर शोध कार्य का होते रहना और यदि ये औषधियाँ आज गलत या अनुपयोगी सिद्ध हो रही है तो दस वर्ष पूर्व भी ये दोषपूर्ण रही होगी अर्थात वैज्ञानिक परीक्षण प्रक्रिया में ये खरी नहीं उतरी होंगी। न ही वैज्ञानिक इसकी गुणवत्ता पर पूर्ण सहमत हुए होंगे किंतु विशिष्ट औषधी निर्मात्री कम्पनियों द्वारा लाभ के स्वार्थ में गलत आंकड़ें प्रस्तुत कर और बिना सम्पूर्ण वैज्ञानिक शोध या परीक्षण के इन्हें प्रचलित करवा लिया होगा। शायद मेडिकल प्रोफेशन व दवा निर्माताओं के बीच कोई सांठ-गांठ रही होगी।

2. प्रतिवर्ष 90,000 जिन्दगियों को कैसे बचाया जाए?

नब्बे हजार या इससे भी अधिक मरीज अस्पतालों या घर में मर जाते हैं क्योंकि चिकित्सकों द्वारा लिखे गये औषधि पत्र (Prescription) स्पष्ट नहीं लिखे होते, स्पष्ट पढ़े नहीं जाते और अस्पताल के कर्मचारियों की गलतफहमी (गलत पढ़ लेना) के फलस्वरूप मरीज को दण्ड भुगतना पड़ता है।

संघीय शासन का यह दायित्व है कि वह सरकारी अस्पतालों और निजी

चिकित्सालयों को स्पष्ट निर्देश दें कि वे रोगी को औषधी लेने की समय सूची स्पष्ट रूप से समझायें और जो औषधि प्रपत्र लिखी जाय उसे स्पष्ट (अंग्रेजी वर्णमाला लिखने की पहली विधि) केपिटल लेटर्स में या टाइप करवा कर सौंपे ताकि जरा सी गलतफहमी में किसी की जान खतरे में न पड़े।

इस कम्प्यूटर युग में प्रत्येक चिकित्सक का यह दायित्व है कि वह अपने क्लीनिक में कम्प्युटर अवश्य रखें। रोगी को जो औषधी दी जाए उसका पूरा रिकार्ड, जब तक रोगी का इलाज चलता है, कम्प्यूटर में फीड किया जाना चाहिये। रोगी की समस्त सूचनायें कम्प्यूटर में होनी चाहिये और यदि कोई रोगी ब्लड प्रेशर से ग्रसित है या मधुमेह से ग्रसित है तथा चिकित्सक के द्वारा उसके रोग को हटाने हेतु दवा दी गई है किन्तु औषधि रोगी के अनुकूल नहीं है तो कम्प्युटर उसका निषेध स्क्रीन पर दिखलाये। चिकित्सक को कम्प्युटर के आदेश को तत्काल मानना चाहिये।

कानून में अति कठोरता को लचीला होने की आवश्यकता है। जैसा कि अमेरिकन कानून के अनुसार एलौपैथी चिकित्सा क्षेत्र के अनुसार होम्योपैथ, नेचरोपैथ (प्राकृतिक चिकित्सा) या अन्य थेरेपी जैसे कलर थेरेपी, वाटर थेरेपी, मसाज थेरेपी के विशेषज्ञों को एम.डी. आदि डिग्रियां धारण करना अनिवार्य है। ऐसा नहीं होना चाहिये। होम्योपैथी और नेचरोपैथी में सामान्य जानकारी रखने वाले को चिकित्सा करने की अनुमति दूर-दराज के गांवों व घरों जहाँ अधिक क्लिनिक व अस्पताल नहीं है सुविधा का कारण बन सकती है। सामान्य दो रोगों के लिये मरीज को बड़े-बड़े डाक्टरों के पास नहीं दौड़ना होगा। वह अपने घर या मोहल्ले ही में यह सुविधा प्राप्त कर सकेगा। होम्योपैथी या नेचरोपैथी के चिकित्सक को एलौपैथी की डिग्रियां लेना अनिवार्य नहीं होना चाहिए वरन् भारत की तरह रजिस्ट्रेशन किया जाए।

आप इस बात पर जरा गौर करिये कि डॉ. जॉन डी. राकफेलर जो एक धनाड्य व्यक्ति थे उन्होनें एक खोज पत्र सीनेट में प्रस्तुत किया और इसके कारण सीनेट में एक धारा (Resolution) स्वीकृत की गई कि प्रत्येक होम्योपैथ व नेचरोपैथ चिकित्सक को एलौपैथिक डिग्रियां हासिल करना अनिवार्य होगा तभी उन्हें चिकित्सा करने का अनुमति पत्र प्राप्त हो सकेगा। इस प्रकार मानव के कल्याण वाली होम्योपैथी चिकित्सा की डा. राकफैलर ने सीनेट के द्वारा हत्या करवा दी।

जबकि यह भी गौर करने की बात है कि डा. राकफैलर जैसी हस्ति ने जिन्दगी में स्वयं होम्योपैथी औषधियों के सेवन से अपने रोगों का उपचार किया।

यह बहुत ही चौंका देने वाली बात है कि ऐलौपैथिक औषधियों की तरह होम्योपैथिक औषधी के कोई समानांतर दुष्प्रभाव (Side effect) नहीं होते। आज तक होम्योपैथिक औषधी से किसी रोगी की मृत्यु नहीं हुई है। प्रत्युत मानव समाज में कई बीमारियों पर इनका सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित हुआ है जो कि बहुत बड़ी मानव सेवा है। अस्तु यह एकदम निरर्थक नियम है कि होम्योपैथ या नेचरोपैथ चिकित्सक को भी आठ वर्षों तक डिग्रियां प्राप्त करने के लिये एलोपैथ डाक्टरों की तरह जूझना पड़े तभी वे चिकित्सा करने के योग्य माने जायें। यह पूर्णतया अनुचित है। दोनों विज्ञान में कोई समानता नहीं है। सभी के आधार अलग-अलग हैं।

मैं संघीय प्रशासन से विनम्र निवेदन करूंगा कि मानव हित के लिये होम्योपैथ चिकित्सकों पर से यह प्रतिबंध हटा लिया जाए। विश्व के किसी भी होम्योपैथ महाविद्यालय से डिग्री हासिल किया हुआ चिकित्सक देश के किसी भी हिस्से में होम्योपैथिक चिकित्सा के लिये स्वतंत्र होना चाहिये। विश्व के अधिकांश राष्ट्रों में बिना एम.डी. की डिग्री हासिल किये चिकित्सा की अनुमति होम्योपैथिक चिकित्सकों को प्राप्त है और आज तक की सूचनानुसार न तो इस प्रणाली की चिकित्सा से किसी रोगी की मृत्यु हुई है ना ही मरीजों में औषधियों से साइडइफैक्ट हुआ है।

एलोपैथिक चिकित्सा और होम्योपैथिक चिकित्सा की कोई तुलना ही नहीं है। दोनों की चिकित्सा पद्धतियाँ ही एकदम भिन्न है। अस्तु संघीय सरकार को सामान्य प्राणी के हित में मानवता की रक्षा हेतु यह प्रतिबंध शीघ्र ही समाप्त कर देना चाहिये। यह लाखों अमेरिकन के हित में होगा। इससे उपचार का खर्च का ग्राफ भी आश्चर्यजनक गति से नीचे आयेगा।

एक राजकीय कोष एक बिलियन डालर का एलोपैथी के साथ-साथ अतिरिक्त चिकित्सा पद्धतियों को उपयोग में जाने हेतु है एवं उनके अच्छे संगठन, प्रचार-प्रसार पर खर्च करने हेतु स्थापित किया जाना चाहिये। जैसे योगा पद्धति, ध्यान पद्धति, रंगोपचार, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, होम्योपैथी आदि। इनके द्वारा लोग सामान्य खर्च पर ही अच्छी औषधियाँ प्राप्त कर सकेंगे और स्वस्थ तथा दीर्घायु हो सकेंगे।

अमेरिकन औषधि कम्पनियाँ अपनी आय का 35 प्रतिशत बाजार और विज्ञापन पर खर्च करती है- जबकि ये अनुसंधान और शोध पर तो केवल 15 प्रतिशत ही व्यय करती है। यदि अत्यधिक विज्ञापन बाजी पर प्रतिबंध लगाया जाय तो यह धन, शोध व अनुसंधान पर खर्च होगा जो चिकित्सा जगत के लिये अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा साथ ही अच्छी औषधियों का निर्माण भी हो सकेगा।

स्टैम सेल के चमत्कारः (Promting Miracle of Stem Cell)

नये आधुनिक शोध के क्षेत्र में (स्टैम सेल) को पूरी तरह से प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। केन्द्र सरकार को इस योजना पर एक बिलियन डालर प्रतिवर्ष खर्च करने हेतु मंजूर करने चाहिये। स्टैम सैल्स का दुरूपयोग करने पर कड़ी पाबंदी लगाई जाकर संग्रह के स्थानों की पूर्ण सुरक्षा का प्रबंध भी किया जाना चाहिये। मानव क्लोन बनाने पर भी पूरा प्रतिबंध होना चाहिये और ऐसा करने वाली संस्था या व्यक्ति को कड़ी से कड़ी सजा देने का प्रावधान किया जाए।

''स्टेमसेल'' पर सम्पूर्ण प्रतिबंध उचित नहीं है। यद्यपि यह बहुत लाभकारी और कम शोध प्रक्रिया है फिर भी मानव रोगों के उपचार के लिये पूर्ण प्रभावी और उपयोगी है। एक दुर्बल हृदय का रूपांतरण, किडनी, लीवर (यकृत), मस्तिष्क आदि के रूपांतरण और उपचार में पूर्ण सहायक है। बहुत ही कम खर्च और बिना शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) के शरीर के अंगों को स्वस्थ करने या रूपांतरण करने में सक्षम है। चिकित्सक को केवल स्टेमसेल की तैयारी को इन्जेक्शन द्वारा रोगी के शरीर में प्रवेश कराना है और ये नये सेल या तो दुर्बल अंगों को शक्ति प्रदान करते हैं या उनका रूपांतरण कर देते हैं।

एक वैचारिक वाद-विवाद अमेरिका में चल रहा है कि सरकार 'स्टेमसेल' चिकित्सा प्रक्रिया को प्रोत्साहित करे या बंद कर दे। मेरे विचार से मानव जाति के लिये इतनी लाभप्रद, सरल, सस्ती, चमत्कारी उपचार पद्धति को रोकना उचित नहीं होगा। यह बाधा कुछ स्वार्थी तत्वों के द्वारा उत्पन्न की जा रही है। इसके निराकरण हेतु जनता को इस उपचार पद्धति के लिये जागृत किया जाना चाहिये। आमजन इस पद्धति के बहुत ज्यादा फलदायक परिणामों को जानकर अवश्य ही प्रभावित होंगे।

कुछ अन्य तथ्य भी नागरिकों को स्वस्थ व निरोग रखने के लिये प्रस्तुत किये

जा रहे हैं। मुझे विश्वास है कि इन पर अमल करने से अमेरिका का स्वस्थ नागरिक और अधिक स्वास्थ्य लाभ करेगा तथा निरोग भी होगा।

खाद्य पदार्थों में पोषक तत्व

खाना और खाद्य पदार्थ प्राणीमात्र के स्वास्थ्य को बना भी सकते हैं और बिगाड़ भी सकते है। आवश्यकता ऐसे खाद्यपदार्थों की बिक्री की है जो ताजा हों और उनमें पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हों। यह जांच सरकार की चौकसी पर आधारित है। ''नेशनल एकेडेमी ऑफ सांइसेज'' पर भी आधारित है। ''नेशनल एकेडमी आफ सांइसेज'' के सर्वेक्षण के अनुसार वर्तमान में 60 प्रतिशत महिलायें और 40 प्रतिशत पुरूष केंसर के रोग से ग्रसित है और यह सब खाने में पोषक तत्वों की कमी के कारण होता है।

गहन अध्ययन से पता लगा है कि अधिकांश प्राणघातक रोग खाद्य पदार्थों में पोषक तत्वों की कमी तथा हानिकारक अन्य तत्वों की प्रचुरता के कारण हो रहे हैं, विशेषकर केंसर जैसे रोग की बढ़ोतरी में। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से अमेरिका की जनता ताजा सब्जियों और पूर्ण धान के स्थान पर रिफाइंड खाद्य पदार्थ और कृत्रिम रूप से उगाये गये फलों व सब्जियों पर आधारित होती जा रही है। यही रोगों का मुख्य कारण है।

यह अप्राकृतिक रिफाइंड खाद्य सामग्री अपने में प्रचुरमात्रा में चर्बी जो कि कीटनाशक और औद्योगिक प्रदूषण (केमीकल्स एज पेस्टीसाइडस प्रिजरवेटिव्स एन्ड इन्डस्ट्रियल पोल्यूटेंटस) से निर्मित है। राष्ट्रीय शोध समिति की 1982 की रिपोर्ट ''डाइट, न्युट्रिशन और केंसर'' शीर्षक से प्रकाशित हुई थी जिसमें यह तथ्य पूरी मजबूती से उजागर किया था कि अधिकांश लोगों में केंसर रोग का सम्बन्ध ''अजीब सी अमरीकी खाद्य नीतियों'' से है।

पशु द्वारा प्राप्त प्रोटीन का अधिक उपयोग

पशुजनित प्रोटीन का अधिक मात्रा में उपयोग छाती, कोलोन, पेनक्रियाज़, किडनी, और प्रोस्टेट ग्रंथियों के लिये केंसर का कारण सिद्ध हुई है। अधिक मात्रा में ग्रहण की गई प्रोटीन अधिकांश मात्रा में नाइट्रोजीनियम उत्पन्न करता है और यह आंतों में व्यर्थ ही इकट्ठा होता है। इनमें से कुछ रूपांतरित हो जाता है। कारसिनोजेनिक

नेट्रोसेमिनीज और अमोनिया साल्ट में। अधिक मात्रा में प्रोटीन, मेटाबोलिक एसिड हड्डियों में कैल्शियम निर्माण को क्षय करता है और जो कैल्शियम हड्डियों में है, उन्हें शनैः शनैः कम कर कमजोर बनाता है।

अमेरिका में वृहद स्तर पर हुए अध्ययन से प्रतीत हुआ है कि लालगोश्त (Red Meat) और केंसर की बीमारी में गहरा सम्बन्ध है। रेडमीट की अधिक खपत महिलाओं के स्तन केंसर की संख्या दुगनी कर रही है बजाय उन महिलाओं के जो रेडमीट का सेवन कम मात्रा में करती है। इसी प्रकार पुरूष जो 5 साल से रेडमीट का सेवन करते आ रहे हैं उनके प्रोस्टेंड ग्लेंडस में केंसर होते देखा गया है मुकाबले उन लोगों के जो ताजा सब्जियों का आहार करते हैं।

निरंतर बीफ पोर्क, और भेड़ के मांस का सेवन करने वालों को कोलोन केंसर से ग्रस्त पाया गया है। इस प्रकार के प्रत्येक अध्ययन में यह पाया गया है कि इन रोगों का मूल कारण अत्यधिक मात्रा में चर्बीयुक्त पदार्थों का सेवन ही है। अमेरिका में मांस में चर्बी की मात्रा की अधिकता होती है, और चर्बी में मिश्रित होने वाले रॉक्सिन पेस्टीसाइड और हरबिसाइड विष पाये जाते हैं।

सब प्रकार के तले हुए, उबाले हुए खाद्य (म्युटेजिन्स) लिये होते हैं और इस प्रकार के रसायन लिये होते हैं जो सेल्स की पुनः उत्पादक क्षमता को क्षति पहुँचाते हैं किंतु तला हुआ या (ब्राइल्ड) मांस अधिकमात्रा में म्युटेजिन्स लिये होता है उनके बनिस्पत जो खाद्य पौधों द्वारा प्राप्त पोषक तत्वों से बनता है। केंसर के इस प्रकार बढ़ने का मूल कारण, इसके किटाणुओं के बढ़ने का मूल कारण मांस मछली, मुर्गी आदि का तला हुआ होना, (ब्राइल्ड) होना या लोहे की सींको में फंसाकर सेंका हुआ (सींक कवाब) या उच्च तापमान में अधिक समय तक रखा हुआ होना ही है। ईरेडियेटेड फूड को अधिक समय तक खाद्य पदार्थों को रखने के लिये कीड़े, बेक्टीरिया, फंफूंद आदि को जो खाद्य पदार्थ पर छा जाते हैं, को इरडियेशन द्वारा समाप्त किया जाता है ताकि वे अलमारियों में अधिक समय तक सुरक्षित रह सके। परंतु यह प्रक्रिया भी उपभोक्ताओं के लिये खतरनाक सिद्ध होती है।

इरेडिएशन की प्रक्रिया टाक्सिस तत्वों जैसे बेनजेन, फारमेन्डीहाइड और अन्य हानिकारक रसायन उत्पन्न करती है जो कि केंसर रोग के होने का कारण बनती है। उदाहरण के लिये अलमारियों में रखे बंद खाद्य पदार्थों पर इरेडिएशन की

प्रक्रिया एक्लाटोक्सिन के स्तर को बढ़ता है व मृतप्राय: कार्सीनोजेनिक और बोटुलिज्म जहर को भी पैदा करता है। जब किसी खाद्य पदार्थ के तत्व अलग कर दिये जाते हैं तो उसका जहरीलापन अनिश्चित हो जाता है और वह ''यूनीक रेडियोलाइटिक प्रोडक्ट'' में बदल जाता है। विज्ञान इस बात से अनभिज्ञ है कि भोजन के शत प्रतिशत रासायनिक तत्व ही सामान्य भोजन में पाये जाते हैं।

भोजन में कौन-कौन से रासायनिक तत्व है

अमेरिकन भोजन में प्रतिवर्ष करीब 3000 रासायनिक तत्व मिलाए जाते हैं किंतु उसके कुछ अंश का परीक्षण मानव प्राणियों के लिये किया जाता है। एस्पोर्टम, सैकरीन, साईक्लेमेट व नकली मिठास पैदा करने वाले पदार्थ लोगों को यकृत कंसर आदि के अधिक पास ले जाते हैं। अन्य पेय पदार्थ जिसमें शराब या अन्य नशीले तरल पदार्थ टैनिक एसिड के कारण यकृत के कंसर को उत्पन्न करते हैं।

अन्य खाद्य पदार्थ भी विशिष्ट प्रकार के कंसर रोग की वृद्धि में सहयोगी हैं जैसे ब्ल्यू डाई नं. 2, प्रोपीगेलेटे, और रेड डाई नं. 3

पारे का ज़हर

पारे का नं. 11 माइक्रो मालेक्यूल 92 प्रतिशत मस्तिष्कीय तंतुक्रिया (स्नायुक्रिया) को कम कर सकता है जिससे एलजेमियर रोग होने का अंदेशा रहता है।

पाराजनित जहर भारी होता है। दाँतों में जो चाँदी के स्थान पर कैमीकल फिलिंग किया जाता है, उससे भोजन चबाने के समय 'कारसोनोगिन माइक्रोस्कोप मरकरी' निकलकर मनुष्य के शरीर में संचरित हो जाता है। अन्य भारी धातुओं की तरह, पारा भी धमनियों को क्षति पहुँचाता है, विशेष कर हृदय की धमनियों को कलांतर में कंसर का कारण बनता है।

ये भारी तत्व (धातुएँ) सूंघने से स्नायुमंडल में बहुत नुकसान पहुंचा कर रोग उत्पन्न करते हैं। इंटरनेशनल एकेडेमी आफ ओरल मेडिसिन एण्ड टेक्सिकोलाजी (IAOMT) यह निर्देश देती है कि दांतों में पारायुक्त कैमीकल भरने की क्रिया शरीर के छोटे छोटे कणों को भारी क्षती पहुँचाती है किडनी के क्रियाकलाप में बाधक बनती है। गहराई से शरीर की जांच करने पर पाया गया है कि अंततः यही

क्रिया अंततोगत्वा कैंसर, विशेषकर किडनी कैंसर, हृदय रोग, किडनी की प्राकृतिक क्रिया में अवरोधक के रूप में पाई गई है। अतः दांतों में पारायुक्त कैमीकल भरने की चिकित्सा पद्धति पर तुरंत रोक लगाई जानी चाहिये।

कीटनाशक, शाख तथा तृणमारक औषधियां

'पर्यावरण सुरक्षा समितियों' के 75 विशेषज्ञों ने यह सिद्ध किया है कि कीटनाशक दवाईयों का शेष अंश भी कैंसर का कारण होता है जो कि हम खाद्य पदार्थों-फलों, चर्बी और सब्जियों से ग्रहण करते हैं। बहुत से कैंसर उत्पन्न करने के तत्व कारखानों में प्रयोग किये जाने वाले रासायनिक पदार्थों व खेतों में प्रयोग किये जाने वाले कीटनाशक के शेष अंशों में पाये जाते है। ये शरीर की मोटी नसों में इकट्टा होते रहते हैं, चाहे वह मछली हो, पशु का मांस हो, मुर्गी हो या मनुष्य हो।

डा. एप्सटीन के अनुसार इन रसायनों पर प्रतिबंध लगना चाहिये क्योंकि ये वातावरण में अधिक समय तक अपना प्रभाव छोड़ते रहते हैं। इन विष मिश्रित पदार्थों द्वारा उगाई फसलों को पशुओं के खाने पर उनके मोटे स्नायु तंतों में विष इकट्ठा होता रहता है। ऐसे ही आदमी भी इन्हें खूब चबाकर खायें तो उनकी भी मोटी नसों में यह जहर जमा होता रहता है और यही नसों के कैंसर का कारण बनता है ।

डा. एप्सटीन के अनुसार यह प्रभाव मस्तिष्क, प्रजनन अंग और छाती पर विशेष रूप से होता है। दुर्भाग्यवश इन ज़हरीले तत्वों के प्रयोग में कमी पाये जाने के बजाय इनमें बढ़त ही हो रही है। 1940 में डी.डी.टी. की खोज के बाद तो ये विषतत्व दस गुना अधिक बढ़ गये हैं। गत 50 वर्षो में ये जहरीले तत्वों से भरे 15000 रासायनिक मिश्रण और 35000 के करीब नये ज़हरीले उत्पाद संसार भर में प्रयोग किये जा रहे है।

यूनाइटेड स्टेटस अमेरिका में प्रतिबंधित कई जहरीले उत्पाद अविकसित या विकासशील राष्ट्रों (तीसरी दुनिया) में अभी भी बेचे जाते हैं और वहीं से अमेरिका में भी आयात किये जाते है। जहां वे खाद्य और पेय पदार्थों के साथ प्राणियों के

शरीर में प्रवेश करते हैं जैसे कॉफी में, फलों में, सब्जियों में। कई जहरीले कीटनाशक, शाख और तृण नाशक अभी भी अमेरिका के खेतों, घरेलू उद्यानों, सार्वजनिक उद्यानों में काम में लिये जाते है। इन पर शीघ्र ही केन्द्र सरकार द्वारा प्रतिबंध लगाया जाना चाहिये।

औद्योगिकरण का जहर

कारखानों की उत्पादन प्रक्रिया में कई प्रकार के जहरीले रसायनों का प्रयोग किया जाता है। कई धातु भारी धातु कारखानों की उत्पादन प्रक्रिया से निसृत होते है। ये उत्पाद मनुष्य के और अन्य प्राणियों के तंतुओं में प्रवेश करते है और स्वास्थ्य को बिगाड़ देते हैं व कैंसर जैसे रोग पैदा कर देते हैं।

1980 तक ई.पी.ए. (एनवायरनमेंटल प्रोटेक्शन एजेंसी) 400 से अधिक जहरीले रसायनों की खोज कर पकड़ प्राणियों के स्नायुतंत्रों में कर चुकी थी। एक बार ये रसायन शरीर में प्रवेश पाने के बाद भयानक उथल पुथल मचा देते हैं और हारमोन्स के संतुलन को बिगाड़ देते हैं।

अस्तु यह प्रथम आवश्यकता है कि डा. दीपक चौपड़ा की अध्यक्षता में एक समिति का गठन तुरतं किया जाय जो इन हानिकारक तत्वों का विकल्प लाभदायक पदार्थों में जैसे नीम आदि को ढूंढकर बतलाये।

अध्याय- 18
मोटापे पर नियंत्रण

अमेरिका में चर्बी बढ़ने अर्थात मोटा होने की समस्या एक विकराल समस्या है। धुम्रपान की समस्या के पश्चात मोटापे की समस्या ने भी मृत्युदर में वृद्धि की है। शरीर का अधिक वजनदार होना, मोटा होना चिंतनीय समस्या है। विशेषतः युवा और बच्चे भी मोटापे के शिकार अत्यधिक संख्या में हो रहे है। इससे मधुमेह की बीमारी व अन्य जटिल (क्रोनिया) बीमारियां शरीर को घेर लेती हैं। यह एक राष्ट्रीय समस्या है। इससे (कार्डनिक डिजआर्डर) गठिया तथा जोड़ों में दर्द तथा मांसपेशियों के अनेक रोग हो जाते है।

सन् 1980 में 46 प्रतिशत युवा मोटापे और वजन बढने के रोग से ग्रसित थे। सन् 2000 में यह संख्या 64.5 प्रतिशत तक बढ गई। अधिक वजन वालों के बढने का प्रतिवर्ष एक प्रतिशत का अनुपात प्राप्त हुआ। वर्तमान में दो तिहाई नागरिक अधिक वजन से ग्रसित है, जिनमें आधे मोटापे से व्यथित हैं। यदि मोटापे की इस समस्या पर नियंत्रण नहीं किया गया तो आगामी चालीस वर्षों में अधिकांश अमेरिकन शरीर के अधिक भार से पीड़ित हो जायेंगे। मोटापे से उत्पन्न बीमारियों के उपचार में प्रतिवर्ष 100 बिलियन डालर का व्यय अमेरिका में प्रतिवर्ष होता है।

इस मोटापे की समस्या का निवारण व्यक्तिगत स्तर पर न करके सामाजिक स्तर पर किया जाना चाहिये। इसमें नवीनतम और आधुनिकतम शोधपूर्ण भोजन प्रणाली ही सर्वोत्तम परिणाम दे सकती है। ''युनाईटेड स्टेटस का एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट'' कृषि विभाग, अमेरिका के बच्चों में नई खाद्य सामग्री में रूचि पैदा कर मोटापे की इस समस्या से छुटकारा दिला सकता है।

सरकार मोटापे की वृद्धि को रोकने हेतु अमेरिका में निम्नलिखित सुझावों को लागु कर इस रोग के प्रति लोगों में जागृति उत्पन्न कर इस पर रोक लगाने में सफल हो सकती है।

भोजन की आदतों में परिवर्तन अत्यंत आवश्यक है। भोजन न करना (डाइटिंग) इस समस्या का अंतिम निदान नहीं है और यह उपचार अधिक समय

तक टिकता भी नहीं है प्रत्युत अधिक उपवास या डाइटिंग शरीर के अवयवों पर विपरीत प्रभाव डालता है, शरीर को अस्वस्थ बनाता है।

कई प्रकार के शोधों द्वारा यह सिद्ध किया गया है कि युवाओं और बच्चों में निरंतर दूरदर्शन के कार्यक्रमों बैठे बैठे या लेटे लेटे देखना भी मोटापे में वृद्धि का कारण है। इसके अतिरिक्त बच्चों में, युवाओं में (आउटडोर गेम्स) मैदानी खेल जैसे हाकी, फुटबाल, टेबिल टेनिस, बेडमिंटन, जिमनेस्टिक आदि में रूचि बढाई जानी चाहिये। जिससे शारीरिक श्रम हो, अधिक केलोरी की खपत हो तथा शरीर पर चर्बी न बढ़े। यह प्रोत्साहन सबसे अधिक कारगर सिद्ध हो सकता है।

इसी प्रकार जिस तरह सिगरेट के पैकेट पर सिगरेट पीने के हानिकारक प्रभाव के बारे में लिखा होता है उसी प्रकार खाद्य वस्तुओं के डिब्बो-थैलियों और अन्य पैकेज पर केवल उपयोग में लाये गये पदार्थों का ही नाम न हो प्रत्युत उनसे होने वाली हानियों का निर्देश छपा हुआ होना चाहिये। खाद्य वस्तुओं के निर्माताओं को इस सरकारी आदेश को मानने की सख्त हिदायत दी जानी चाहिये।

मोटापे को रोकने में योगाभ्यास और श्वांस प्रक्रिया के बाद ध्यान भी बहुत बड़ी सहायता कर सकता है। केन्द्रीय सरकार को राष्ट्रभर में एक बिलियन डालर व्यय के बजट पर राष्ट्रव्यापी योगा केन्द्र खोलने चाहिये।

जैसा कि मैं पिछले अध्यायों में भी लिख चुका हूँ और स्मरण दिलाता हूँ कि राष्ट्रीय दूरदर्शन पर ''हैप्पीनेस'' चेनल का शीघ्रातिशीघ्र शुभारम्भ कर उसमें योगा के अभ्यास, ध्यान के अभ्यास, श्वासं और प्राणायाम के अभ्यास निरंतर दिखलाये जाने चाहिये। इससे निश्चितः बच्चे व युवावर्ग पड़े रहने या आराम तलबी की बुरी आदत से जो कि मोटापे का मूल कारण है, इससे छुटकारा पा सकते है और स्वस्थ जीवन यापन कर सकते है।

मोटापे का दूसरा मुख्य कारण है मांस का अधिक उपयोग। संघीय सरकार को प्रचार के विभिन्न उपायों द्वारा शाकाहार के प्रति लोगों का रूझान बढ़ाना चाहिये। अमेरिका में मांसाहार के विकल्प में अंकुरित अनाज, ताजा हरी सब्जियां और ताजा फल प्रस्तुत कर इनके प्रति लोगों की रूचि बढानी चाहिये। इन्हीं का प्रचुरमात्रा में उपभोग, अमेरिका के नागरिकों को भाराधिक्य और मोटापे से निजात दिलवा सकता है।

अमेरिका की 7 प्रतिशत आबादी ही ''संघीय खाद्य निर्देशिका'' के अनुसार फल और सब्जियाँ ग्रहण करती है। जबकि सरकार की इस भोजन निर्देशिका में केवल 64 सेंट का ही खर्च बतलाया गया है। जनजागरण द्वारा जनता को इस निर्देशिका के अनुसार भोजन करने के लिये प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये। उपर्युक्त सर्वेक्षण प्रसिद्ध पत्रिका ''टाइम'' द्वारा किया गया था।

समस्त (NGO's) और दूरदर्शन के हेप्पीनेस चैनल द्वारा शाकाहार के प्रति प्रोत्साहित करने के अनेक कार्यक्रम सारे वर्ष आयोजित होते रहने चाहिये।

कुल व्यय - 1 बिलियन डालर
कुल बचत - 35 बिलियन डालर

अध्याय – 19

अमेरिका में 'एड्स' पर कैसे नियंत्रण हो?

सारा संसार ही वर्तमान में एड्स की जानलेवा बीमारी की विभिषिका से आक्रांत है। अमेरिका भी इस बीमारी के सम्बन्ध में अपवाद नहीं है। यहां भी केन्द्र प्रशासन इस बिमारी से जूझने के लिये लाखों डालर प्रतिवर्ष खर्च करती है फिर भी मानवता की हत्यारिणी यह एड्स की बीमारी तीव्र गति से राष्ट्र को अपनी चपेट में ले रही है। यह भयंकर चिंता का विषय है।

अगर यही स्थिति रही तो अमेरिका की भावी पीढ़ी को भयंकर परिणाम भुगतने पड़ेंगे। इसकी रोकथाम पर और अधिक शीघ्रता से युद्ध स्तर पर प्रयास किये जाने चाहिये। यहां कुछ सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे है :

1. एड्स जैसे भयंकर रोग से बचने के उपायों को हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों की पाठ्यपुस्तकों में सविस्तार सम्मिलित किया जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त अन्य विषय जैसे H I V A I D S अपरिपक्व उम्र में गर्भावस्था, तम्बाखू, कुपोषण तथा शारीरिक व्यायाम से अच्छा लाभ, स्वच्छ परिवेश, सद् साहित्य आदि पर लिखे गये अध्यायों में (पाठ्यक्रम के) सम्मिलित किये जाने चाहिये और यह स्कूल स्तर ही से शुरू कर देने चाहिये।

2. एड्स से बचने के उपायों पर सरकार 100 मिलियन डालर व्यय के साथ NGO's के द्वारा मनोरंजक किंतु प्रभाव डालने वाली फिल्मों का निर्माण करवाये जिनका कथानक रोचक एवं एड्स के प्रति जागरूक रहने की शिक्षा देता हो।

3. एक राष्ट्रव्यापी 'हॉटलाइन' चालू की जानी चाहिये जिसमें निरंतर सेवा निःशुल्क जारी रहे। यह हॉटलाइन एड्स बचने के उपाय पूछने वालों को तुरंत अपने सुझाव दें।

4. सामाजिक स्तर पर युवाओं और किशोरों में ड्रग्स के सेवन और इसके साथ सेक्स में लिप्त होने के घातक दुष्परिणामों का खौफनाक चित्रण किया जाना चाहिये। इस प्रकार की सूचनायें है कि कई छात्र सैक्स में शिरकत करते समय

या इससे पूर्व ड्रग्स को एल्कोहल (वाइन) में मिलाकर प्रयोग करते है। यही नहीं दो प्रतिशत तो हाईस्कूल स्तर के किशोर, अपरिपक्व बुद्धि वाले भी इस प्रकार की विकृत गतिविधियां करते पाये गये है। जिसका दुष्परिणाम HIV इन्फेक्शन(संक्रमण) तक हो जाता है जो कि प्राणघातक है।

5. प्रतिवर्ष अमेरिका की सरकार अनेकों बिलियन डालर एडस से बचने तथा एड्स ग्रसित लोगों के उपचार में खर्च करती है पर परिणाम आशाजनक नहीं है। 15 बिलियन डालर तो सरकार प्रतिवर्ष अफ्रीका में एडस से छुटकारा दिलाने हेतु खर्च कर रही है पर परिणाम संतोषजनक नहीं है। मेरा सुझाव है कि एलोपैथी की इन औषधियों के अतिरिक्त होम्योपैथी व आयुर्वेद की औषधियों का प्रयोग भी किया जाना चाहिये।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 90 प्रतिशत एलोपैथी औषधियों के प्रयोग के बजाय यह एक प्रयोग ही अधिक सफलता प्रदान करेगा। कम से कम 1 बिलियन डालर सरकार को खूब प्रसिद्ध और साख वाली उन शोध कम्पनियों पर खर्च करना चाहिये जो जटिल (क्रोनिक) बिमारियों के उपचार के लिये एलौपैथी से भिन्न उपचार कर विकल्प ढूंढने में शोध कर रही है।

कुल व्यय - 1 बिलियन डालर
कुल बचत - 10 बिलियन डालर

अध्याय – 20
अमेरिका में प्रदूषण नियंत्रण

दूसरे अन्य विकसित देशों के अनुरूप ही अमेरिका भी प्रदूषण से ग्रसित है। गत 50 वर्षों में अमेरिका दस गुणा अधिक प्रदूषित वातावरण में जी रहा है। अमेरिका के पानी हवा और जमीन का प्रदूषित वातावरण अनेक प्रकार के केंसर उत्पन्न करने का कारण है। अस्तु अमेरिका को स्वच्छ पर्यावरण के लिये तथा प्रदूषण रहित नागरिक जीवन के लिये प्रदूषण फैलाने वाले मुख्य कारणों को ढूंढना होगा। इसके लिए निम्नलिखित उपाय भी कारगर सिद्ध हो सकते हैः

1. एनजीओज (NGOs), विश्वविद्यालय और स्कूल के छात्रों को पर्यावरण के प्रति सजग करें। प्रत्येक शहर दो जोन में विभाजित किया जाना चाहिये और प्रत्येक जोन में कॉलेज और स्कूल के छात्रों पर वातावरण के स्वच्छ रखने का उत्तरदायित्व सौंपा जाना चाहिये। अपनी अपनी आबादी को प्रदूषण रहित करने का दायित्व इन छात्रों को दिया जाना चाहिये।

2. सरकार अपने आदेशों द्वारा प्रत्येक स्कूल (विद्यालय) में ईको (ECO) क्लब खुलवाये जो छात्रों को प्रदूषण के रोकथाम के बतलाये गये उपायों को शहर में क्रियान्वित करवाये।

3. अधिकतम आबादी वाले शहर हवा की स्वच्छता खो चुके हैं। हवा में निरंतर प्रदूषण बढ़ रहा है। हवा की गुणवत्ता का लेखा-जोखा ग्राफ द्वारा पूर्ण दक्षता के साथ रखा जाना चाहिये। इसी प्रकार जलवायु का भी सही मूल्यांकन नक्शों व मॉडल्स के द्वारा दर्शाया जाना चाहिये।

4. खतरनाम केमिकल्स, हानिकारक रासायनिक पदार्थ और कीटनाशक (पेस्टीसाइडस) को तुरंत प्रतिबंधित कर दिया जाना चाहिये। इनके आयात पर भी प्रतिबंध लगाया जाना चाहिये। कोई भी इण्डस्ट्री यदि हानिकारक रसायनों का प्रयोग करती है तो उस पर 200 प्रतिशत का उत्पादन कर अन्य लेवीज के साथ लगाया जाना चाहिये।

5. शोध शालाओं को प्राकृतिक खाद (फर्टिलाइजर) के शोध का दायित्व दिया

जाना चाहिये। जैसे नीम एक प्राकृतिक फर्टिलाइजर है जो कि रासायनिक फर्टिलाईजर्स से कई गुना अधिक श्रेष्ठ है। इन्हीं प्राकृतिक कृषि नाशक के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये क्योंकि रसायन के स्थान पर ये प्राकृतिक कृषि नाशक के विकल्प 100 प्रतिशत सुरक्षित होते हैं इनका कोई हानिकारक प्रभाव किसी अन्य प्रकार से (Side effects) नहीं देखा गया है।

6. क्लोरीन गैस तथा पानी में फ्लोराइड का उपयोग तुरंत प्रतिबंधित किया जाना चाहिये क्योंकि विज्ञान जगत में फ्लोराइड को अलझेमेर रोग का मूल कारण माना गया है।

7. स्वच्छ एवं प्रदूषण रहित पर्यावरण के लिये यातायात के भी विकल्प ढूंढना अत्यंत अनिवार्य है। भारी और हल्के वाहनों की प्रदूषण जांच समय-समय पर होती रहनी चाहिये। यह कार्य संघ एवं प्रांत दोनों ही प्रशासनों को बड़ी सावधानी से करना चाहिये। निजी वाहनों के प्रदूषण जांच पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये। यातायात में प्रदूषण रहित जो नये परिवर्तन वाहनों में आये हैं, उन विकल्पों को अपनाने हेतु सुझाव व आदेश दिये जाने चाहिये।

8. 'हवा के स्वच्छ रखने वाले अधिनियम्' लागु होने के बावजूद शहर या कस्बों के वातावरण में थोड़ा अन्तर आया है, फिर भी अमेरिका में कई मेट्रोपोलिटन क्षेत्रों की वायु बहुत हानिकारक और अस्वास्थ्यकर है जो कि प्राणियों के उपयोग की नहीं है। 'अमेरिकन लंग एसोसिएशन' के सर्वेक्षण के अनुसार ऐसे मेट्रोपोलिटन क्षेत्रों में 49 प्रतिशत अमेरिकन नागरिक अस्वास्थ्यकर स्थानों में रहते हैं जहां भुमिस्तरीय ओजोन (ग्राउण्डलेवल ओजोन) प्रभावी है।

9. यातायात से होने वाली प्रदूषण वृद्धि को रोकने के लिये सरकार को स्वच्छ ईंधन के उपयोग के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये। स्वच्छ ईंधन की श्रेणी में CNG, LPG और हाईड्रोजन नामक इंधन आते हैं।

10. शीशारहित गैसोलीन का उपयोग तुरंत प्रतिबंधित कर दिया जाना चाहिये। इस प्रकार अनेक कैंसर उत्पादक रसायन पेट्रोल कम्पनियों के द्वारा पेट्रोल में मिलाकर बेचे जा रहे हैं।

11. कारों में पेट्रोल-डीजल के विकल्प के रूप में हाइड्रोजन गैस के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। इस सम्बन्ध में यदि विशेष उत्साह से कार्य किया जाय तो 5 वर्ष के अन्दर अनेक कारें हाईड्रोजन गैस के द्वारा अमरीका में दौड़ने लगेंगी। यह गैस 100 प्रतिशत प्रदूषण मुक्त होती है। टास्कफोर्स को इंधन के अन्य और विकल्पों को प्रोत्साहित करने का निरंतर प्रयास करते रहना चाहिये।

12. एल्युमिनियम थैलियों के पैकेट तुरंत प्रतिबंधित होने चाहिये। जब यह पैकेट में खाद्य पदार्थ के सम्पर्क में आता है तो कई बीमारियों का कारण बनता है।

13. तुलसी के पौधे का उपयोग पूजा के साथ-साथ वातावरण को शुद्ध रखने में भी किया जाता है। अमेरिका में प्रत्येक घर में तुलसी का पौधा लगाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिये। यह पौधा मानव जाति को न केवल स्वास्थ्य प्रदान करता है बल्कि वातावरण को भी प्रदूषण रहित करने में अत्यधिक सहायक होता है।

14. खुशबूदार (एरौमैटिक) फूलों और झाड़ियों को सार्वजनिक स्थानों व घरों, में उगाया जाना चाहिये क्योंकि ये फूल और झाड़ियां मनुष्य के शरीर व मस्तिष्क पर पुनः सक्रियता (रीजेनेरेटिंग) का प्रभाव डालते हैं जो कि (अरोमा थेरेपी) के द्वारा डाला जाता है। ये फूल और झाड़ियां प्रदूषण दूर करने में भी सहायक है।

15. अमेरिका में संघीय कानून द्वारा (नॉनबायोडिग्रेडेबल) साबुनों और डिटर्जेंटों पर पूर्ण प्रतिबंध लगना चाहिये। इससे भूमि जल और भूमि प्रदूषण को कम करने में बहुत सहायता मिलेगी। केवल बोयाडिग्रेडेबल साबुन और डिटर्जेंट का ही प्रयोग होना चाहिये।

पौधे जो अमरीका की गर्म ऋतु में उगाये जा सकते हैं

S.No.	Plants	Color
1.	प्लूमेरा एल्बा	सफेद फूल
2.	मिचैलिया चेम्पाका	पीला और सफेद
3.	मोरिया एक्जोटिका	सफेद
4.	क्विसकालिस इंडिका	गुलाबी
5.	पोलिएनथस टयुबेरोसा	लाल चमकीला

6.	केस्ट्रम डिउरनम	हल्का लाल
7.	रोजा इंडिका	गुलाबी
8.	पेसी फ्लोरा	मेरून
9.	लाइम इलायची	पीला
10.	जेसमिनम एड्बा	सफेद
11.	जेसमिनम ह्यूमेलिस	पीला
12.	जेस्मीनीयम ओलेरेसिया	पीला
13.	मेग्नोलिया एल्बा	सफेद
14.	गगेलोलिया ग्रेंडी फ्लोरा	क्रीम पीला
15.	बोहीनिया परपूरिया	सफेद
16.	ट्रेचिलो स्पेरमम	सफेद
17.	गाडेनिया एल्बा	सफेद
18.	साइट्रस मिटिस	सफेद

वे पौधे जो ठंडे जलवायु में अमेरिका में उगाये जा सकते हैं

S.No.	Plants	Color
1.	रानुन क्यूलस	पीला
2.	एनोमोने	नारंगी और सफेद
3.	एक्वरजिया	गुलाबी और पीला
4.	पाइओनिया	गुलाबी
5.	रीटा टिंकटोरिया	सफेद
6.	मेग्नोलिया एल्बा	सफेद
7.	मिचेलिया केम्पांका	पीला
8.	ग्लोरीओसा सुपरबा	नारंगी
9.	जासमीनम एल्बा	सफेद
10.	प्लमेरिया एल्बा	सफेद

फलों के पेड़ जो सड़क किनारे उगाये जा सकते हैं

क्र.सं.	नाम	बोटोनिकल नाम
1.	सेव	स्पोडियास सीथिया
2.	संतरा	साइट्रस सिनेसिस
3.	आम	मेन्गीफेरा इंडिका

4.	जामुन	सनेमियम जम्बोलिका
5.	अमरूद	सीडियम खजावा
6.	बेल	एगल मारनेलोस
7.	लीची	लिची चिनेसिस
8.	पपीता	कारया पपाया
9.	नीम	एज़ेडिशच्टा इंडिका

16. इन फलों के पेड़ों का उत्पादन केवल आर्थिक लाभ ही देने वाला नहीं होगा, प्रत्युत पर्यावरणीय संरक्षण देने वाला भी होगा, साथ ही इनसे अमेरिका में इकोलोजिकल कंजर्वेशन में भी सहायता मिलेगी। इनसे अमेरिका में आकर्षक और मनमोहक सुंदरता की भी वृद्धि होगी। इनके रंग-बिरंगे दृश्य लोगों के दिलों में प्रसन्नता भरेंगे।

17. कार्यालयों और घरों में काले व भूरे रंग के पौधे लगाने पर निषेध होना चाहिये। इनके रंग मानव हृदय में उदासी और निराशा के भाव पैदा करते हैं। लोगों में नकारात्मक सोच की वृद्धि होती है।

18. अमेरिकन द्वारा उर्जा के विभिन्न स्त्रोतों के लिए सैंकड़ों प्रकार की नई तकनीकों का आविष्कार किया गया है। सरकार की लालफीताशाही के फलस्वरूप शीघ्र स्वीकार किये जाने के अभाव में जनमानस की मुख्य धारा तक नहीं पहुंच पा रही है। इसलिए सरकार को चाहिए कि वह इन नई तकनीकों पर विशेष ध्यान दे और इनके आविष्कारकर्ता को सम्मान तथा पुरस्कार देकर प्रोत्साहित करें।

19. प्लास्टिक बेग्स (थैलिया) प्रतिबंधित होने चाहिये और इनके स्थान पर गन्ने के कचरे, सन (जूट) तथा अन्य हानी न करने वाले पदार्थों का उपयोग होना चाहिये। आस्ट्रेलिया की एक कम्पनी ने अभी अभी ऐसे आविष्कार किये हैं जो (इकोफ्रेंडली) है।

20. स्वयंसेवी संस्थाओं में से "ग्रीन वालंटियर" के नाम से एक दल विद्यालय और महाविद्यालयों तथा गठित किया जाना चाहिये जो जनता तथा कारखाने चलाने वालों को हानिकारक प्रदूषित पदार्थों का उपयोग न करने के लिये जागरूक करेगा। कचरा फैलाना या कचरे को सही स्थान पर डालने की निरंतर

चेतावनियां देगा जो प्लास्टिक आदि के उपयोग न करने पर जनता में जागृति उत्पन्न करेगा। पौधों का महत्व बतलाते हुए उन्हें प्रचुर मात्रा में उगाने का प्रोत्साहन जनता में जागृत करेगा ।

साइबर प्रयोगशालायें प्रत्येक विद्यालय में खोली जाये तथा वातावरण, पर्यावरण, प्रदूषण की पूरी जानकारी तथा प्रशिक्षण देने के लिये जगह जगह प्रशिक्षण केन्द्र खोले जायें । ईकोपार्क इन प्रशिक्षण के लिये विकसित किये जायें।

21. संघीय प्रशासन प्रत्येक प्रांत में योजना, प्रबंध और शोध कार्यो के संस्थान स्थापित करे जो प्रत्येक प्रांत में उपयुक्त और ठोस कार्यक्रम लागू कर पर्यावरण को स्वच्छ बनाने का निरंतर प्रयत्न करती रहे।

22. वातावरण की सुरक्षा और प्रदूषण निवारण हेतु नवीनतम अन्वेषण तथा उपायों के लिये 2000 छात्रवृतियां उत्साही छात्रों व नागरिकों में वितरित की जायें। यह पर्यावरण सम्बन्धी शोध कार्य गुणवत्ता के लिये पर्यावरण से सम्बन्धित हो तथा समाज के हित में हो।

23. कार्यालयों में स्पेक्ट्रम लाइट का उपयोग फ्लोरोसेंट लाइट के स्थान पर होना चाहिये। ये स्पेक्ट्रम प्रकाश व्यवस्था बहुत ही मुलायम और मानव प्रकृति के स्वभाव को भी विनम्र बनाने में सहायक होती है। सरकार विद्युत कर में कमी कर इस प्रकाश व्यवस्था को कार्यालयों में उपयोग के लिये प्रोत्साहित करें।

कुल व्यय 1 बिलियन डालर

अध्याय – 21

अमेरिका में सड़क दुर्घटनाओं को कैसे रोका जाए?

अमेरिका में सड़क दुर्घटनाओं द्वारा मृत्यु दर में बढ़ोतरी हो रही है । इनको कम करने पर सरकार को काम करना चाहिए । इस पर निम्न सुझाव प्रस्तुत हैं:

1. सरकार को यातायात की नई नीतियों का निर्धारण करना चाहिये जिससे सड़क दुर्घटनाओं का ग्राफ नीचे हो सके। कार चालकों से यह कानून सख्ती से पालन करवाया जावे कि वे यातायात में अगली कार से पूर्ण सुरक्षित दूरी बनाये रखें। दुर्घटनाओं का यह एक मूल कारण है।

2. संघीय प्रशासन को दुर्घटनाओं की जांच के आधुनिक तरीके अपनाने चाहिये। सड़कों की सुरक्षा, रखरखाव, देखभाल, सुप्रबंध का होना अति आवश्यक है। अधिकारीगण व्यक्तिगत रूप से दुर्घटनाओं के कारणों का सर्वे करें। अमरीकी सरकार को नई तकनीकी जैसे लेसर, अल्ट्रासोनिक, इन्फ्रारेड और रॉडार सर्वे का उपर्युक्त जांच के लिये प्रयोग करना चाहिये।

3. सरकार एक 'एक्सीडेंट प्रिवेंशन सेल' (दुर्घटना सुरक्षा समिति) का गठन करे जो नियमित रूप से दुर्घटनाओं के कारणों की जांच करे। सड़कों की मरम्मत कहां आवश्यक है। ऐसी क्षतिग्रस्त सड़कें जो अधिक दुर्घटना का कारण बनती है, उनकी मरम्मत शीघ्रातिशीघ्र की जानी चाहिये।

4. अमेरिकी सरकार को यातायात के कानून पालन करवाने में सख्ती से पेश आना चाहिये ताकि वाहन चालकों की लापरवाही कम की जा सके।

5. संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में प्रति तीस मिनिट में एक दुर्घटना और एक व्यक्ति की मृत्यु एलकोहल (शराब) लेकर वाहन चलाने वाले चालकों के कारण होती है। प्रति दो मिनिट में ये चालक किसी को घायल कर देते हैं । सन् 2000 में 17,448 लोग दुर्घटना में मारे गये और ये सब नशे में वाहन चलाने के कारण ही हुआ। यातायात में होने वाली कुल दुर्घटनाओं में 41 प्रतिशत दुर्घटनायें तो नशे में वाहन चलाने के कारण होती है।

6. सर्वेक्षण से प्रतीत हुआ है कि 57 प्रतिशत वाहन चालक वाहन चलाते समय खाते हैं, 32 प्रतिशत वाहन चलाने के दौरान कुछ लिखते या पढते रहते हैं, और 17 प्रतिशत चालक या तो बालों में कंघा करते है या मेकअप करने में व्यस्त रहते हैं। सर्वे से प्रतीत हुआ है कि 75 प्रतिशत ड्राईवर कुछ ऐसी गतिविधियों में व्यस्त रहते है कि जिनसे उनका ध्यान ड्राईविंग से हट जाता है, यह भी दुर्घटना का एक कारण होता है।

7. सेलफोन (मोबाइल) का उपयोग वाहन चलाते समय एकदम प्रतिबंधित कर दिया जाना चाहिये और ऐसा करने वालों पर भारी जुर्माना किया जाए। यह दुर्घटना होने का भयंकर कारण है और इस पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये।

8. जहां सड़क का तेज घुमाव (टर्न) हो चट्टान हो, बर्फ गिरती रहती हो, फिसलन हो पहाड़ ढहने की सम्भावना वाला स्थान हो, घना कुहरा रहता हो, वर्षा हो तो वहां सड़कों पर चेतावनी निर्देश पट्ट अवश्य होने चाहिये।

9. अधिकांश दुर्घटनायें लम्बी निर्जन विरान सड़कों पर होते हैं जहां वाहनचालक थक से जाते हैं या उंघने लगते हैं। अधिकांश दुर्घटनायें चालक की थकान और उंघाई से सम्बन्धित है। हजारों दुर्घटनायें यहां तक की अमेरिका में भी दुर्घटनाओं का यही कारण होता है। इसे कम करने के लिये अतिरिक्त विश्राम क्षेत्र, होटल सुविधायें समस्त हाइवे पर बढाई जानी चाहिये। इस दिशा में सरकार को सक्रिय कदम उठाना चाहिये और हाइवे और संघीय हाइवे को जमीन आवंटित करे।

10. 'तीव्र गति जीवन की क्षति' कहावत को ध्यान में रखकर प्राणी को अपनी जीवन रक्षा पर अधिक ध्यान देना चाहिये बजाय प्रतिस्पर्धा और भागदौड़ के इस युग में तेजी से दौड़ने के। समस्त राष्ट्र में 60 मील प्रति घंटे की स्पीड (गति) निर्धारित कर दी जानी चाहिये। यदि आवश्यकता हो तो 'संघीय कानून' इस सम्बन्ध में लागू किया जाना चाहिये।

11. विद्यालयों में कक्षा I X से ही ड्राइविंग की सूचनाओं का तथा यातायात के नियमों का, यातायात संकेतों का, सड़क पर लगाये गये निर्देश पट्टिकाओं का

अध्यापन अध्ययन होना चाहिये। यह पाठ्यक्रम कम से कम एक वर्ष तो पढ़ाया ही जाना चाहिये। साथ ही दुर्घटना के समय की जाने योग्य प्राथमिक चिकित्सा का भी समुचित ज्ञान हाईस्कूल तक के विद्यार्थियों को करवाया जाना चाहिये ताकि विद्यार्थी समझ सके कि दुर्घटना ग्रस्त व्यक्ति को अस्पताल तक पहुंचाने के पहले वे क्या सहायता कर सकते हैं।

12. मुख्य सड़कों पर सड़क से निकलकर दूसरी लेन में जाने के संकेत ठीक निकलने वाली जगह के पास ही लगे होते हैं जिससे कभी चालक उन्हें पढ़ नहीं पाता और दुर्घटना हो जाती है। अस्तु लेन बदलने या मुख्य रूट से निकलने के स्थानों के संकेत कम से कम एक्जिट स्थान से एक या दो मील पहले लगाये जाने चाहिये।

13. सड़क दुर्घटनाओं से बचने के उपायों की लघु फिल्में समय-समय पर दिखलाई जानी चाहिये और ऐसी फिल्मों के बनाने को प्रोत्साहित करने के लिये 50 मिलियन डालर सरकार की ओर से खर्च किया जाना चाहिये।

14. कार व बसों की पिछली खिड़की के पास प्रकाश व्यवस्था पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिये।

कुल व्यय- 1 बिलियन डालर

अध्याय – 22

जल प्रबन्धन

पानी की समस्या आज समस्त विश्व की समस्या है। अमेरिका भी इस समस्या से अछूता नहीं है। औद्योगिक और शहरी क्षेत्रों के बढ़ने के कारण अमेरिका में भी पानी की समस्या विकराल रूप धारण कर सकती है, अमेरिका के कई हिस्सों में तो अभी से पानी की कमी के संकेत मिलने लगे हैं।

इस समस्या के निराकरण हेतु 'नेशनल वाटर बोर्ड' का गठन किया जाना चाहिये जिसे एक बिलियन डालर के व्यय कोष से स्थापित किया जाये। यह 'नेशनल वाटर बोर्ड' निम्नलिखित गतिविधियों को क्रियान्वित करें:

1. एक 'राष्ट्रीय जल स्त्रोत' का नक्शा शीघ्र ही तैयार किया जाना चाहिये। इसके लिये अल्ट्रामाडर्न सेनेसोरी डिवाइसेज का उपयोग किया जाना चाहिये। GPS (ग्लोबल पोजिशनिंग सेटेलाइट) का भी उपयोग होना चाहिये।

2. राष्ट्र की जल सम्बन्धी आवश्यकताओं का समयानुसार खाका तैयार किया जाना चाहिये कि आगामी 50 वर्षों में अमेरिका के प्रत्येक प्रांत में यह आवश्यकता कितनी होगी। इस बात के अध्ययन का एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण भी होना चाहिये कि कम से कम समय में किस उपाय से पानी की पूर्ति आवश्यकता के स्थानों पर की जा सके और इस कार्य में खर्चा भी कम लगे।

3. जल संग्रह को प्राथमिकता दी जानी चाहिये। इसके लिये आधुनिकतम जल संग्रहण के उपायों को अपनाया जाना चाहिये।

4. पृथ्वी पर पानी का वितरण प्रकृति नहीं करती, इसलिये प्रकृति के द्वारा जहां अधिक जल इकट्ठा हुआ है, जैसे झीलों, तालाबों में तो इस अतिरिक्त जल का वितरण शहरों और कृषि क्षेत्रों में नहरों और पम्पों द्वारा किया जाना चाहिये। जैसे शिकागो में ईरी झील का पानी पम्प द्वारा नजदीकी शहरों में पाइपलाइन द्वारा और छोटी-छोटी नहरों पहुंचाने के कार्य को बढ़ाया जा सकता है।

5. जहाँ कहीं भी सम्भव हो जल संग्रहण क्षेत्रों व नदियों का पानी नहरों से जोड़ दिया जाना चाहिये ताकि एक नदी का अधिक पानी नहरों द्वारा दूसरी नदी तक पहुंचाया जा सके।

6. हूबर बांध के द्वारा न्यूयार्क और लास एंजिल्स में पानी के वितरण की अच्छी व्यवस्था है जो कि अमेरिकन पूर्वजों द्वारा उस समय की आबादी व पानी की मांग के हिसाब से की गई थी। लेकिन बाद की पीढ़ियों ने इस प्रकार की वितरण प्रणाली पर गत 25 वर्षों से कोई कार्य नहीं किया। अब समय संभलने का है। हमें अपनी आँखें खोलनी चाहिये और दूरदर्शिता से सोचना चाहिये क्योंकि निकट भविष्य में पानी की समस्या अन्य कई समस्याओं को जन्म दे सकती है।

7. जल संग्रहण (कंर्जवेशन) से संग्रहित जल का फसलों में उपयोग और जल प्रबंधन की नई टेक्नोलोजी का उपयोग प्रचुर संख्या में किया जाना चाहिये।

8. जल प्रबंधन के अध्यापन और शोधकार्य हेतु एक नये विश्वविद्यालय की स्थापना की जानी चाहिये जिस पर कम से कम 100 छात्रवृत्तियाँ शोध छात्रों के लिये सुरक्षित की जाए जो कि आगामी 50 वर्षों में होने वाली पानी की समस्या और उसके निवारण पर गम्भीर खोजकर शोधग्रंथ तैयार करें।

9. यह हमेशा ध्यान में रखना चाहिये कि अनियंत्रित आधुनिक रसायनों का, खाद का, और कीटनाशक (पेस्टीसाइड) का उपयोग हमारे पानी को और भूजल को जहरीला बना रहे है। यदि यह पानी प्राणियों के उपयोग का नहीं है तो यह किस काम का? प्रत्युत यह तो जल को व्यर्थ नष्ट करने के समान है। क्योंकि यह पानी पूर्णरूपेण प्रदूषित होता है। अस्तु इस भीषण समस्या से उबरने के लये नये तरीकों की खोज की जानी चाहिये।

10. यह मेरा सुझाव है कि पानी स्वच्छता के लिये जो जहरीली कीटनाशक दवाइयां काम में ली जाती है उन्हें एकदम प्रतिबन्धित कर देना चाहिये। इसके बजाय पारम्परिक कीटनाशक जैसे नीम, कम्पोस्ट खाद, गाय का गोबर और वर्मीकलचर आदि का उपयोग किया जाना चाहिये।

11. नई–नई खोज की आवश्यकता है जिससे जल संग्रहण व वितरण के नये नये तरीके, तकनीक इजाद हो सके। जैसे ड्रिप इरिगेशन (सिंचाई) और ग्रीन हाउस निर्माण, इससे कृषि कार्य में व्यय होने वाले जल की 50 प्रतिशत कमी की जा सकेगी।

12. आधुनिक रहन सहन की शहरी सभ्यता भी पानी की फिजूलखर्ची की जिम्मेदार है। इसमें भी परिवर्तन होना अत्यन्त आवश्यक है। आर्थिक रूप से यह पानी का व्यय संतुलित होना चाहिये और पानी का अपव्यय बंद होना चाहिये।

13. पानी की कीमतों में दस गुणा वृद्धि कर देनी चाहिए । इससे पानी का अपव्यय रोका जा सकेगा।

14. इस बात की नितांत आवश्यकता है कि नौजवानों में जल के सीमित और आवश्यक खर्च के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जाये। मैं तो कहता हूँ कि पढाई के हर स्तर पर पानी की समस्या पर पाठ्यक्रम में एक दो पुस्तकें अवश्य रखी जाये। पानी को मानवहित के साथ जोड़कर स्कूल से कॉलेज तक सम्पूर्ण शिक्षा अध्ययन काल में दी जानी चाहिये।

15. कनाडा से बहकर आने वाला अतिरिक्त पानी न्यायिक और आर्थिक दृष्टि से उपयोग में लिया जाना चाहिये।

16. आर्मी कोर आफ इंजीनियर्स के 500 अभियंताओं (इंजीनियर) को हाइड्रोथर्मल योजना पर सार्थक रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिये कहा जाना चाहिये। इन्हीं योजना सम्बन्धी सूचनाओं को निजी व्यवसायियों को आगे कार्य रूप में परिणित करने के लिये सौंप दिया जाना चाहिये।

कुल व्यय – 1 बिलियन डालर

अध्याय- 23

भूमि विभाग (जोन) कानून में सुधार

अमेरिका में भूमि विभाजन के सुधारों की राष्ट्र स्तर पर आवश्यकता हैं वर्तमान में बहुत से निषेध कानून भूमि क्रय-विक्रय पर लागु हैं। कानून का वास्तविक अर्थ तो होता है कि समाज की प्रगति सहायक हो और स्थायी समृद्धि समाज का निर्माण करें।

इन क्षेत्रीय कानूनों (जोनिंग लॉज) को सरल बनाने हेतु एक राष्ट्रीय स्तर पर नये कमीशन का गठन किया जाना चाहिये। अभी के कानूनों के अनुसार विकास के नाम पर विकास करने के स्थानों पर भूमियों के दाम बहुत ऊँचे होते जा रहे हैं जबकि नागरिक और प्रशासनिक स्तर पर इसमें संतुलन की आवश्यकता है। यदि सामान्य नागरिक को दृष्टि में रखकर इन जोनिंग सिस्टम के कानूनों की जटिलता को सरल किया जाय तो निश्चय ही जमीनों के दाम नीचे आयेंगे और साधारण नागरिक भी जमीन खरीद कर मकान बनाने के अपने स्वप्न को साकार कर सकेगा।

जमीनें और भवनों से सम्बन्धित कानूनी धाराओं के सरलीकरण का कार्य राष्ट्रीय स्तर पर होना चाहिये।

कुल व्यय 100 मिलियन डालर

अध्याय - 24

प्रगति का जादुई फार्मुला

1940 और 1970 के दशक में अमेरिका में ब्याज की दर बहुत ही कम थी और यह दर स्थायी भी थी। इसी नीति ने राष्ट्र को बहुत ही समृद्ध और शक्तिशाली बनाने में मदद की थी। इस नीति ने अमेरिका को विश्व का सबसे धनाढ्य राष्ट्र बना दिया था। किंतु प्रेंसीडेंट कार्टर के शासन काल में ब्याज दर का ग्राफ उपर नीचे होना शुरू हो गया। कभी यह दर बहुत ऊँचाई तक पहुँच जाती तो कभी यह बहुत ही न्युन हो जाती।

निश्चय ही संघीय कोष के लिये ब्याज दर 2 प्रतिशत बीस वर्षों तक के लिये कर दी जानी चाहिये। एक स्थायी और समृद्ध आर्थिक स्थिति को प्राप्त करने के लिये 20 वर्षों तक स्थायी रूप से 2 प्रतिशत ब्याज दर केन्द्र के कोष को भर देगी और इसके अधिकतम लाभदायक परिणाम होंगे।

जैसे ही यह ब्याज दर कम करने की धारा लागू हुई कि संघीय कोष के उध ार लेने का ऋण प्राप्त करने का ग्राफ एकदम नीचे आ जायगा और केन्द्रीय बजट के घाटे की भी यह पूर्ति करेगी।

यह विजय - अन्य कई राष्ट्र की बुरी स्थितियों पर विजय दिलवायेगी। इससे कई समस्याओं का निराकरण होगा। जो लोग सिर्फ बैंकों या आर्थिक बाजार में निवेश करते हैं, उन्हें थोड़ी सी हानि अवश्य होगी। लेकिन हानि की पूर्ति उन्हें शेयर बाजार में से प्राप्त अच्छे लाभ से हो सकेगी। न्यूनतम ब्याज दर बाजार को ऊँचा उठाने में सहायक होगी।

राष्ट्रीय हित में उपर्युक्त विचार की क्रियान्विती के लिये श्रीमान् वारेन बफेट की अध्यक्षता में एक कमीशन का गठन किया जाना चाहिये जो इस धारा के लिये नये माध्यम और क्रियान्विती के नये नये उपाय प्रस्तुत करें।

यह कार्य जापान और यूरोप व अमरीका से भी कर परामर्श कर किया जाना चाहिये। ये तीन आर्थिक शक्तियाँ संघीय शासन के लिये ब्याज की दर निश्चित करने हेतु सुझाव प्रस्तुत करेंगी जिससे अमेरिका के लिये ऋण लेने व ऋण देने का मार्ग विश्वभर में सरल हो जायेगा और अमेरिका की आर्थिक स्थिति आश्चर्यजनक रूप से समृद्ध व सुदृढ़ होगी।

कुल व्यय - कुछ नहीं
कुल बचत - 50 बिलियन डालर

अध्याय -25

प्रतिवर्ष 200 बिलियन डालर बचाने का जादुई फार्मुला

यह एक बहुत ही कष्टदायक स्थिति है कि सरकार को जनता से ली गई कर राशि का अनुमानतः 235 बिलियन डालर नागरिक के प्रति जिम्मेदारियाँ (लाईबलिटीज) और वर्ग भेद (क्लास एक्शन) पर प्रति वर्ष व्यय करना पड़ता है। यह राशि जनता से ही वसूल की जाती है।

राष्ट्रीय आय के स्त्रोतों और आर्थिक स्थिति के लिये यह व्यय भयावह स्थिति उत्पन्न करती है। यह अपव्यय है।

अस्तु एक कानून तुरंत लागू किया जाना चाहिये कि अमेरिका में जिम्मेदारियों और वर्ग भेद के मुकदमों में अधिकतम 1 मिलियन डालर से अधिक धन स्वीकृत नहीं किया जायेगा। इससे अमेरिकन आर्थिक स्थिति को समृद्ध होने में आशातीत सफलता प्राप्त होगी।

यदि हानि होगी तो कुछ लालची लोगों की या धनाढ्य व्यक्तियों की।

किंतु 99.5 प्रतिशत अमरीकी वासियों को न्यूनतम प्रीमियम पर जीवन बीमा करवाने, वाहन बीमा आदि करवाने में सहायक होगी।

कुल व्यय - कुछ नहीं
कुल बचत - 200 बिलियन डालर

अध्याय - 26
बजट घाटे को कैसे कम किया जाय?

इस वर्ष अमेरिका को 400 बिलियन डालर के घाटे से जूझना पड़ा है। यह स्थिति भविष्य के लिये खतरनाक है। अमेरिका को यदि विश्वपटल पर एक समृद्धिशाली राष्ट्र के रूप में अपना अस्तित्व रखना है तो बजट घाटे को मिटाने के तत्काल उपाय करने होंगे।

इस घाटे की पूर्ति हेतु मैं कुछ सुझाव प्रस्तुत करना चाहूंगा

1. एक कानून पास किया जाना चाहिये कि 4 वर्ष के अंदर बजट को स्थायित्व प्रदान किया जाये। यह दायित्व संघीय शासन का होगा कि वह घाटे के बजट का संतुलन व स्थायित्व उत्पन्न करे।

2. संघीय कोष से ऋण देने की दर 2 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिये।

3. रोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रम लागू होना चाहिये जो प्रतिवर्ष 10 मिलियन नागरिकों को विभिन्न प्रकार के रोजगार के लिये तैयार करें। यह जी.एन. पी. की अभिवृद्धि में बहुत सहायक होगा।

4. यदि अन्य पद्धति द्वारा स्वास्थ्य रक्षा के उपायों - साधनों और सभी को शीघ्र उपलब्ध उपचार पर पूरा ध्यान दिया जाय तो निश्चित रूप से जो व्यय स्वास्थ्य सुरक्षा बीमा योजना और दवाईयों पर खर्च किया जाता है, उसमें बहुत कमी आ जाएगी।

5. इसी प्रकार किसानों का कृषि का प्रशिक्षण समुचित रूप से दिया जाय तो सरकार द्वारा दी जाने वाली ऋण पर छूट (सब्सिडी) की दर बहुत कम हो जायेगी। यह बहुत बड़ी बचत होगी, किसान खुशहाल होगा, उसकी आय में वृद्धि होगी।

6. यदि अमेरिका विदेशी तेल पर आधारित न रहे, ऐसे राष्ट्रीय स्त्रोत खोजे जाएं जो विदेशी तेल का विकल्प हों तो राष्ट्र की अतुल धन सम्पत्ति जो तेल के लिये बाहर जा रही है उसे बचाया जा सकता है। इससे राष्ट्रीय स्थिति को बहुत लाभ पहुंच सकता है।

7. आतंकवादियों के दिल जीतने का प्रयत्न किया जाना चाहिये। युद्ध और अनेक सैनिक अभियान में धन और जन दोनों की हानि होती है। यदि आतंकवादियों के हौंसले उनके दिल जीतकर समाप्त किये जाए तो इस प्रकार व्यय होने वाले धन पर कमी लाई जा सकती है।

8. वर्च्युअल विश्वविद्यालय और निःशुल्क कम्प्युटर प्रशिक्षण लोगों को नये नये रोजगार नई नई नौकरियां दिलाने में सहायक होगा। उनकी आय में वृद्धि होगी, वे खुशहाल होंगे। बेरोजगारी भत्ता देने में बहुत कमी आयेगी।

9. पर्यटन व्यवसाय की वृद्धि तो अमेरिका में धन की वर्षा करा सकती है। राजस्व की आशातीत वृद्धि तथा रोजगार की वृद्धि निश्चित रूप से होगी।

10. ई–गवर्नेंस योजना निश्चित रूप से कार्यालयों में होने वाले लाखों डालर के कागज खर्च को कम कर सकती है। लालफीताशाही और नौकरशाही का कार्यालय क्रियाकलापों में अत्यधिक विलम्ब करता है उसमें भारी कमी आ सकती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि अमेरिका उपर्युक्त सुझावों को राष्ट्र हित में लागु कर बजट के घाटे की पूर्ति कर सकती है और एक खुशहाल राष्ट्र के लिये स्थायी तथा पूर्णसमृद्ध कोष बना सकती है।

कुल बचत – 400 बिलियन डालर

अध्याय – 27
कर निर्धारण नीतियों में सुधार

1. बिना किसी अपवाद के संघीय प्रशासन सब प्रकार की आय पर एक ही नीति के अनुसार 13 प्रतिशत का कर लगाये यह अमेरिका में आर्थिक उन्नति में अत्यधिक कारगर साबित होगी और कर संचय करने में जो कमी आ रही है वह रूकेगी। इस सम्बन्ध में राष्ट्रीय स्तर पर विचार विमर्श की संगोष्ठियाँ आयोजित की जानी चाहिये। समय आ गया है कि कर संचय नीतियों में तुरंत परिवर्तन किया जाय और अविलम्ब इसे राष्ट्र में लागू कर दिया जाए ।

2. करों में दी जाने वाली छूट को तुरंत प्रभाव से बन्द कर दिया जाना चाहिये। केवल वे ही संघठन जो बिना लाभ के कार्यरत है। केवल उन्हें ही छूट दी जानी चाहिये।

3. यदि छोटे छोटे कर निरस्त (एलिमिनेट) कर दिये जाते हैं तो केवल 10 बिलियन डालर की हानि तो होगी पर एकमात्र यह नियम 100 बिलियन GNP में उन्नति करने में सक्षम होगा। यह उत्पादन के समय में भी बहुत बचत करेगा जो कि अनावश्यक रूप से नौकरशाही द्वारा कागजी कार्यवाही द्वारा नष्ट होता है।

कुल व्यय – कुछ नहीं
कुल बचत – 100 बिलियन

अध्याय – 28
व्यापार के घाटे को कैसे कम किया जाये?

यह भयावह स्थिति है कि हमारे देश का व्यापार 500 बिलियन डालर प्रतिवर्ष के घाटे में चल रहा है और यह घाटा प्रतिदिन बढ़ता ही जाता है। कोई अर्थशास्त्री इस घाटे को किस प्रकार रोका जाए, इसके सुझाव दे सकता है? इसलिये प्रसिद्ध व्यापारियों, अर्थशास्त्रियों और बुद्धिजीवियों का सामूहिक प्रयास, विचार-विमर्श व सुझाव होने चाहिये तथा ऐसे जरिये बतलाये जाने चाहिये जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार के इस घाटे को दूर कर सके। इन सुझावों को सरकार द्वारा एक वर्ष के अन्दर लागु कर देना चाहिये।

यदि इस स्थिति पर तुरन्त ध्यान नहीं दिया गया तो अमेरिकन डालर की वही स्थिति होगी जैसे रीवल (ब्राजीलियन करेंसी) की जहाँ अमेरिकन डालर की कीमत 99 प्रतिशत घट गई है। यह स्थिति अमेरिका के सामाजिक ढाँचे को बिगाड़ देगी, आर्थिक स्थिति को बिगाड़ देगी और दुनियाँ में जो आज अमेरिका की धाक समृद्धिशाली राष्ट्र होने की है उस पर भी असर पड़ेगा।

सुझाव

WTO (विश्व व्यापार संगठन) के अंतर्गत चीन, जापान और ताइवान देश गम्भीर व्यापार घाटे के शिकार हैं। वर्तमान की स्थिति में अभी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं किया जा सकता है। यदि यही व्यापार का ढंग रहा तो आगामी सात वर्षों में अमेरीकन व्यापार का घाटा एक ट्रिलियन डालर प्रतिवर्ष से भी अधिक बढ़ सकता है जो कि एक असहनीय स्थिति होगी।

इसलिये यह अमेरिका के हित में होगा कि वह चीन, जापान, ताइवान जैसे देशों को स्पष्ट रूप से हिदायत एवं चेतावनी दें कि अमेरिका के साथ व्यापार का संतुलन बनाये रखें अन्यथा बाध्यतः अमेरिका को WTO (विश्व व्यापार संगठन) से अपना सम्बन्ध-विच्छेद करना होगा और 100 प्रतिशत आयात कर इन देशों के लिये लागु करना होगा।

निःसंदेह इस प्रकार के नोटिस से उपर्युक्त देशों के नेताओं और अर्थ मंत्रालयों को सोचना होगा और विश्व व्यापार में हलचल मचाने के बजाय जितना सामान वे अमेरिका में निर्यात करेंगे उतना ही सामान अमेरिका से उन्हें आयात करना होगा। यह एक न्यायपूर्ण आर्थिक नीति है जिसका पालन हर राष्ट्र को करना ही चाहिये।

अमेरिका को अपने डालर की अवमूल्यन स्थिति को रोकने के लिये कुछ कड़े कदम उठाने ही चाहिये ताकि व्यापार के घाटे को कम किया जा सके और अपनी साख को स्थिर रखा जा सके।

कुल व्यय – कुछ नहीं
लाभ – अमेरिकन डालर का स्थिरिकरण

अध्याय - 29

रेल्वे में आमूलचूल परिवर्तन और सुधारात्मक प्रगतिशील तरीका

एक ट्रिलियन डालर से भी अधिक राशि अर्जित करने वाली रेल व्यवस्था पर राष्ट्रीय स्तर पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाने से इसकी आय का सही उपयोग नहीं हो पा रहा है। इसका मूल कारण, सरकारी एवं जनता के स्तर पर रेल्वे का सम्पूर्ण उपयोग न किया जाना है। यह असावधानी सिद्ध करती है कि रेल्वे के महत्व को प्रत्येक स्तर ने पूरी तरह से नहीं समझा है।

राष्ट्र के शिखर पर बैठे बड़े-बड़े समक्ष व्यक्ति व उद्योगपतियों का एक कमीशन गठित किया जाना चाहिये जो अपने हाथों में इस बात की खोज को लें, नये-नये सुझाव सरकार को दें कि रेल्वे का राष्ट्रोत्थान में सही उपयोग कैसे किया जा सकता है?

1. एक लक्ष्य निर्धारित किया जाना चाहिये जिससे विशेष (फ्राइट) और पेंसेजर गाड़ियों की गति 50 प्रतिशत बढ़ाई जा सके।

2. पांच वर्ष के अंदर माल ढुलाई और पैसेंजर गाड़ियों की ढुलाई बढ़त 100 प्रतिशत कैसे बढ़ाई जा सके, यह व्यवस्था हमारे आवागमन हाईवे पर बढते बोझ और प्रदूषण को कम करने में अत्यधिक सहायता मिलेगी।

3. रेल्वे की कार्यक्षमता को बढ़ाने में आधुनिकतम नई तकनीक का प्रयोग किया जाना चाहिये। रिमोट के द्वारा चलित GPS (ग्लोबल पोजीशनिंग सैटेलाईट) का प्रयोग मानीटरिंग हेतु किया जाना चाहिये।

4. एक कमीशन गठित किया जाना चाहिये जो नई तकनीक, नई खोज का उपयोग रेल्वे में करें। इसके लिए बजट में 1 बिलियन डालर तक खर्च करने का अधिकार होना चाहिये।

5. रेल्वे के अध्ययन, प्रगति के लिये सुझाव, आधुनिक तकनीक के अध्ययन हेतु एक राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थान की स्थापना होनी चाहिये।

कुल व्यय - 1 बिलियन डालर

अध्याय - 30
कर कटौती की वैकल्पिक योजनाएं

यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि सरकार को टैक्स (कर) की कटौती का अध्यादेश वापस ले लेना चाहिये और उस धन को योजनाओं पर खर्च करना चाहिये। यह राष्ट्रीय आवश्यकता है। जापान ने भी यही बड़ी भारी गलती की थी और बाद में उसे आर्थिक स्थिति सुधारने के लिये प्रत्येक नागरिक को 1000 डालर के वाउचर वितरित करने पड़े। किंतु देखिये इससे क्या हुआ? आर्थिक स्थिति और शेयर बाजार गहरे मंदी के दौर में चले गये जो अभी तक पुनः सही स्थिति में नहीं आ सकें। जब तक हम इस आर्थिक मंदी की जड़ों तक पहुँचकर सही कारणों का पता नहीं लगायेंगे तब तक हम इस स्थिति से उबर नहीं पायेंगे।

मैं यहाँ अपने शोध के आधार पर इस स्थिति से उबरने के अचूक उपाय प्रस्तुत कर रहा हूँ। मुझे आशा है इन सुझावों को काम में लाने पर आर्थिक स्थिति में निश्चित ही सुधार होगा।

60 प्रतिशत कर कम करने की विकल्प योजना

S.No.	Particulars	Amount
1.	1000 विषयों पर और विडियो व्यावसायिक प्रशिक्षण जिसका लक्ष्य 5 लाख नये उद्योग सिखलाने का होगा।	$ 10 बिलियन
2.	ई-गर्वनेन्स योजना की क्रियान्विती (लागू करना)	$ 10 बिलियन
3.	वर्च्युअल युनीवर्सिटी द्वारा 5 लाख छात्रों को कॉलेज स्तर की निःशुल्क शिक्षा (500 पाठ्यक्रम के साथ)	$ 5 बिलियन
4.	पर्यटन विकास । लक्ष्य - 2 लाख नये रोजगार दिलाना	$ 3 बिलियन

5.	प्रदूषण नियंत्रण पर नए शोध	$ 5 बिलियन
6.	न्यायिक प्रणाली में आमूलचूल सुधार। लक्ष्य-मुकदमों का निर्णय शीघ्र करना	$ 5 बिलियन
7.	स्वास्थ्य सुधार योजना को शीघ्र लागू करना और इसमें सम्पूर्णतः सुधार व परिवर्तन करना	$ 10 बिलियन
8.	राष्ट्रीय राजमार्ग और जर्जर पुलों की मरम्मत व पुर्ननिर्माण	$ 5 बिलियन
9.	उर्जा के नये स्त्रोत खोजना जिससे सामान्य नागरिकों को लाभ हो। नए उर्जा संयत्र व बिजली बचत पर शोध	$ 5 बिलियन
10.	सुरक्षित कोष	$ 2 बिलियन
	कुल व्यय	**$ 60 बिलियन**

एक सौ के करीब हाइड्रोथर्मल प्रोजेक्ट बनाने पर रिपोर्ट तैयार करें इससे देश में नये हाइड्रोथर्मल पावर जेनेरेशन जिनकी शक्ति एक सौ हजार मेगावाट हो देश में स्थापित करने का लक्ष्य रखा जाना चाहिये। यह कार्य सात वर्षों में पूरा होना चाहिये। इस कार्य में अनावश्यक कानूनी अड़चनें व्यय सम्बन्धी निषेधों की नहीं आनी चाहिये।

अंतरिम सरकार की विशेष समिति द्वारा इन कार्यों को शीघ्र संपादित करने का कार्य किया जाना चाहिये क्योंकि देश में पानी और उर्जा के अभाव की भारी समस्या निकट भविष्य में उत्पन्न हो सकती है अतः ये योजनायें इन समस्याओं का समाधान सिद्ध हो सकती है देश में पानी और उर्जा की पूर्ति हो सकती है।

इस योजना को शीघ्र संपादित करने हेतु पांच बिलियन डालर का व्यय पानी और ऊर्जा के नये विकल्प ढूंढने व उन पर खोज किये जाने पर किये जाने चाहिये। निजी संस्थानों का सहयोग भी इस कार्य को तत्परता से सम्पन्न करवाने में सहयोगी हो सकता है।

यह बहुत ही आश्चर्य की बात है कि इस देश में सर्वोत्कृष्ट तकनीक तथा सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक प्रगति होते हुए भी हम इस देश में पानी और उर्जा का विकल्प अभी तक प्रस्तुत नहीं कर पाये हैं। मुझे लगता है कि तेल की बड़ी बड़ी कम्पनियों और ओपीईसी के मध्य कोई षड्यंत्र है जो इस महत्वपूर्ण समस्या का हल या विकल्प नहीं निकलने दे रहा है।

समस्या : करदाताओं का 11 बिलियन डालर धन भ्रष्टाचारी खा रहे हैं।

समाधान : व्हाइट हाउस के ईमानदार, राष्ट्र के प्रति समर्पित कर्मचारियों को लेकर एक समिति गठित की जानी चाहिये जो इस भ्रष्टाचार की जड़ तक पहुँचने का प्रयत्न करें और एक साल के अन्दर 2 राष्ट्रीय कोष के अपव्यय और भ्रष्टाचारियों का पर्दाफाश करे। एक वर्ष में एक बिलियन डालर तक अपव्यय की खोज होनी ही चाहिये। इस अति महत्वपूर्ण विशेष कार्य के लिये केन्द्र सरकार को 200 मिलियन डालर खर्च करने चाहिये।

समस्या: विद्यालयी शिक्षा का असफल होना व महाविद्यालयी शिक्षा का अत्यधिक खर्चीला होना।

समाधान: वर्च्युअल युनिवर्सिटी द्वारा प्रतिवर्ष 5 बिलियन डालर का खर्च कर दो सौ नये रोजगार सम्बन्धी विषयों का कालेज स्तर का अध्यापन/प्रशिक्षण राष्ट्र के सभी विद्यार्थियों को निःशुल्क दिया जाना चाहिये।

समस्या : 5.6 प्रतिशत बेरोजगारी

समाधान : प्रतिवर्ष 25 लाख अमेरिकन नागरिकों को रोजगार प्रशिक्षण केन्द्रों द्वारा प्रशिक्षित किया जाना अत्यन्त अनिवार्य है। इस कार्य के सम्पादन हेतु राष्ट्रपति के अन्तर्गत एक विद्वत्जनों की समिति का गठन किया जाना चाहिये। रोजगार का सबसे सशक्त माध्यम पर्यटन हो सकता है। इसके लिये एक राष्ट्रीय पर्यटन बोर्ड की स्थापना की जानी चाहिये जो पर्यटन को बढ़वा दे और पर्यटन से सम्बन्धित नये नये रोजगार के अवसर नई पीढी को मुहैया करवाये।

पर्यटन के द्वारा अमेरिका 20 बिलियन डालर की अतिरिक्त आय अर्जित कर सकता है। अमेरिका में पर्यटन को पर्याप्त प्रोत्साहन देने हेतु एक पर्यटन सचिव की नियुक्ति होनी चाहिये और प्रतिवर्ष तीन बिलियन डालर का व्यय इस कार्य के लिये निर्धारित किया जाना चाहिये। इस योजना से हम आर्थिक जगत में दो लाख

नये रोजगार पैदा कर सकते है। चीन ने तो वर्ष 2006 में पर्यटन के क्षेत्र में 14 लाख नये रोजगारों को खोजने का लक्ष्य रखा है।

एक्शन प्लान के सुझाव

1. एक विश्वव्यापी दूरदर्शन चैनल का प्रसारण सरकार द्वारा किया जाना चाहिये जिसका नाम 'स्वतंत्रता' या 'स्वर्णभूमि अमेरिका' रखा जाना चाहिये।

2. अमेरिका में विस्तृत और विशाल क्षेत्र के पर्यटन स्थल की होटलों में रहने के लिये सूट्स, कमरों (सिंगलबेड, डबल बेड) की कमी (बहुत ज्यादा पर्यटकों के आने के कारण) बहुत अखरती है। इन शहरों से दूरदराज के पर्यटनस्थलों में स्थानाभाव (कमरे आदि) अखरता है अतः केन्द्र शासन को अपने स्तर पर 1000 नये होटलों का निर्माण, निर्माताओं को कम ब्याज पर ऋण देकर बनाने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये।

3. अमेरिका का पर्यटन साहित्य विश्व की मुख्य मुख्य भाषाओं जैसे हिन्दी, स्पेनिश, फ्रेंच, जर्मनी, जापानी और चाईनीज भाषाओं में प्रचुर मात्रा में छपवा कर समस्त विदेशी दूतावासों में उपलब्ध करवाना चाहिए।

4. एक विशिष्ट सुरक्षा दल का गठन किया जाना चाहिये जो पर्यटकों की पूर्ण सुरक्षा के लिये शीघ्र तत्पर और सजग रहे।

5. हमें लंदन, पेरिस, रोम, बैंकाक आदि पर्यटन व्यवसाय में समृद्ध और उन्नत देशों का गहन अध्ययन करना चाहिये कि पर्यटकों को आकर्षित करने व उन्हें पूर्ण मनोरंजन और सुविधायें देने हेतु वे क्या क्या उपाय करते हैं? उनमें जो आदर्श और नीतिगत उपाय हों उन्हें अवश्य अपनाना चाहिये और पर्यटन के विकास के लिये उनका उपयोग किया जाना चाहिये।

समस्या : अमेरिका में होशियार (दक्ष, अपने कार्य की सम्पूर्ण जानकारी रखने वाले) मजदूरों का अभाव।

समाधान : इस नित्य परिवर्तित आर्थिक स्थिति को उन्नत करने के लिये हम कामगारों, तकनीशियनों, मजदूरों की एक बहुत बड़ी संख्या को प्रशिक्षित करना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिये हमें हजारों विभिन्न विषयों पर सी.डी., वीडियो

कार्यक्रम तैयार करवाने चाहियें इस योजना हेतु विश्वप्रसिद्ध निर्देशक स्पीलबर्ग के निर्देशन में नये रोजगारों के मनोरंजक तथा सारगर्भित सीरियल तैयार करवा कर उन्हें 'हॉटजाब' नाम से देश भर में निरंतर प्रसारित किया जाना चाहिये।

समस्या : अमेरिका के किसानों की उन्नत आर्थिक स्थिति में निरंतर कमी होना।

समाधान : यह बहुत ही खेद का विषय है कि जो राष्ट्र विश्व के अनेक आपातग्रस्त राष्ट्रों को खाद्य सामग्रियाँ बहुत अधिक मात्रा में वितरित करता है, उनके संकट को दूर करता है उसी राष्ट्र के किसान आज आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न नहीं है।

ऊपर दिये गये 'एक्शन प्लान' के सुझाव निश्चितः अमेरिका को इस स्थिति से उबारने में सहायक होंगे। निश्चित रूप से किसानों की आय में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण बात यह है कि अमेरिका के सामान्य नागरिक को भी उचित दामों में अच्छी किस्म के फल, सब्जियाँ प्राप्त हो सकेगीं।

हमें विश्वभर से अच्छी किस्म के फल, सब्जियाँ आदि मंगवाने चाहिये। उनके उन्नत किस्म के बीज आयात करने चाहिये जो अभी अमेरिका में न तो पाये जाते हें, न बोये जाते हैं। उन्हें उपजाने की तकनीक, खाद की किस्मों की जानकारी प्राप्त करनी चाहिये।

किसानों को मुफ्त में बीज वितरित किये जाने चाहिये और कुल खेत के दस प्रतिशत हिस्सों में अनिवार्यतः इन्हें उपजाया जाना चाहिये इसमें फल, सब्जियाँ, जड़ी-बूटियाँ सभी की प्रयोगात्मक उपज की जानी चाहिये। इस एक ही योजना को लागू करने पर किसानों की आय में आश्चर्यजनक वृद्धि होगी और सामान्य से सामान्य नागरिक को भी अच्छी किस्म का अन्न - फल- सब्जियाँ व जड़ी-बूटियाँ उचित मूल्यों पर प्राप्त हो सकेंगी उदाहरणार्थ टमाटर यहां एक डालर में एक पोंड बेचा जाता है जबकि अनाज अविश्वसनीय स्तर पर सात सेंट में एक पोंड जैसी कीमत में बिकता है।

इन नई किस्मों की सब्जियों को, फलों को, जड़ी-बूंटियों को लोकप्रिय बनाने के लिये दूरदर्शन पर विभिन्न चैनलों द्वारा निरंतर प्रचार किया जाना चाहिये।

मुझे पूरा विश्वास है कि केन्द्र सरकार यदि इस योजना को लागू करने में 60 बिलियन डालर खर्च करे और वापसी के लिये कम से कम कर वसूल करे तो निश्चितः हमारी आर्थिक स्थिति में चमत्कारिक रूप से बढ़ेतरी होगी और हर जाति के नागरिक को इससे लाभ होगा।

अध्याय – 31

राष्ट्रपति द्वारा 8 समितियों (कमीशन) का गठन

सामाजिक आर्थिक स्थिति में चमत्कारी परिवर्तन लाने हेतु और स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा, उर्जा और तकनीक में अभूतपूर्व प्रगति लाने हेतु मैं अमेरिका के राष्ट्रपति को अपने स्तर पर 8 कमीशन समितियां गठित करने का सुझाव दूंगा वे 8 कमीशन निम्नानुसार गठित की जानी चाहिये।

1. अमेरिका के लिये उर्जा के विकल्प स्त्रोतों की खोज आविष्कार, प्रगति और क्रियान्विती के लिये राष्ट्रपति महोदय को एक कमीशन का गठन करना चाहिये। ताकि विदेशी आयातित तेल पर निर्भर न रहा जाये। इस महत्त्वपूर्ण कार्य की चेयरमैनशिप के लिये मैं श्रीमान् रोज पेरेट का नाम प्रस्तावित करता हूँ।

2. एक कमीशन आतंकवाद के मूल कारणों का पता लगाने तथा इसके निराकरण का सुझाव देने के लिए गठित किया जाना चाहिये। इसे कम किया जाय। अमेरिका में आतंकवादियों के प्रति घृणा और हिंसा के स्थान पर उनके हृदय और मस्तिष्क जीतने का कार्य कमीशन के द्वारा सम्पन्न कराया जाना चाहिये। इस कमीशन की चेयरमैनशिप के लिये मेरे मतानुसार श्रीमान् जार्ज एफ. बिल सर्वथा उपयुक्त व्यक्ति है जिनको महामहिम राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किया जाना चाहिये।

3. शिक्षा में सम्पूर्ण परिवर्तन और सुधार हेतु महामहिम राष्ट्रपति को श्रीमान् विलयम बेनेट की चेयरमैनशिप में एक कमीशन का गठन करना चाहिये।

4. एक कमीशन आधुनिक तकनीक की खोज और क्रियान्विती राष्ट्र में करवाने हेतु गठित किया जाना चाहिये। इस नई तकनीक द्वारा सामान्य व्यक्ति को लाभ किस प्रकार पहुंचाया जा सकता है इसकी योजना भी कमीशन द्वारा ही तैयार की जायेगी। आधुनिक तकनीक के द्वारा किस प्रकार लाभ पहुंच सकता है। जैसे नीनो तकनीक, स्टेम सेल, बीओ टेक्नोलोजी और डिवाइस प्लान की योजना तीव्र गति से इनकी क्रियान्विती

इस विश्वास के साथ कराई जानी चाहिये कि इससे अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। श्रीमान् अल गौरे को महामहिम राष्ट्रपति द्वारा चेयरमैनशिप के पद पर आसीन करवाना चाहिये।

5. कार्यालयों में ई-मेल, कम्प्युटर तथा कम्प्युटर का नेटवर्क क्रियान्वित करने के लिये एक कमीशन का गठन किया जाना चाहिये ताकि कार्य फाइलों में न अटका रहे और कागज का भी व्यर्थ व्यय न हो। 90 प्रतिशत कार्य कम्प्युटर के द्वारा सम्पन्न कराया जाना चाहिये ताकि नौकरशाही से छुटकारा मिल सके।

6. 5 वर्ष के अन्दर किसानों की आमदनी दुगनी करने के उपायों, सुझावों, नये नियमों को लागू करवाने के लिये एक कमीशन का गठन किया जाना चाहिये। कृषि के उन्नयन हेतु भी यह कमीशन नई नई योजनाओं को मूर्त रूप प्रदान करेगा।

7. श्रीमान् राष्ट्रपति द्वारा एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्यीय कमीशन का गठन किया जाना चाहिये जो 10 लाख अमेरिकन नागरिकों को कुशल ट्रेडों में प्रशिक्षण देकर व योग्य बनाकर उन्हें रोजगार उपलब्ध करवाएगा। यह एक अत्यन्त महत्वाकांक्षी योजना होगी।

8. एलौपेथिक चिकित्सा पद्धति से सर्वेक्षण के अनुसार 1.2 ट्रिलियन डालर का बोझ समाज पर पड़ रहा है जो कि आर्थिक दृष्टि से बहुत अधिक है। जो कुछ व्यय करके हम अभी प्राप्त कर रहे है यदि अन्य चिकित्सा के अन्य विकल्पों के उपयोग में यदि 1 प्रतिशत राशि भी खर्च करते हैं तो आश्चर्यजनक लाभ की हमें प्राप्ति होगी। एलोपैथिक सिस्टम से हटकर अब हमारा ध्यान नये विकल्पों जैसे होम्योपैथिक, प्राकृतिक चिकित्सा, योगा आदि पर अधिक केन्द्रित होना चाहिये।

डा. दीपक चोपड़ा की चेयरमैनशिप में श्रीमान राष्ट्रपति द्वारा एक कमीशन का गठन आधुनिक चिकित्सा विकल्पों को स्थापित करने हेतु किया जाना चाहिये। इन हेल्थ थेरेपीज से अमेरिका के नागरिकों को अत्यधिक लाभ व सुन्दर स्वास्थ्य की उपलब्धि होगी।

उपसंहार

इतिहास गवाह है कि प्रत्येक राष्ट्र को एक बार असमंजस के चौराहे पर अवश्य खड़ा होना पड़ता है। अमेरिका भी इस अर्थ में कोई अपवाद नहीं है। यदि सही मार्ग को सही दिशा में चुना जाय तो देश उन्नति की ओर अग्रसर होने लगता है और देश के नागरिक शांति और प्रगति के साथ जीवन-यापन कर सकते है।

9/11 की दुर्घटनाजनित दुखांतिका के पश्चात अमेरिका को भी अपनी नीतियों, राज्य व्यवस्था आदि पर पुन: विचार करना होगा ताकि अभिनव उत्थान के साथ ज्ञान से प्रगति की ओर तथा विश्व शांति के उसके महत् उद्देश्य की ओर अग्रसर हो सके। मुझे पूरा विश्वास है कि असफलता में ही सफलता के बीज छुपे होते हैं, पतन में ही उन्नति के रहस्य छुपे होते हैं। निराशा में ही आशा की किरण भी दिखलाई देती है। आवश्यकता है सिर्फ सही चिंतन की, नये रास्तों के खोज की। आवश्यकता है परंपरागत चली आ रही अनुपयोगी तकनीक को छोड़कर नई तकनीक को अपनाने की। विश्व में कहीं भी हुई नई खोज, नई तकनीक, नये आविष्कार को ढूंढने व उनका उपयोग राष्ट्रहित में करना श्रेयस्कर होगा।

इस पुस्तक में मैंने कई नये रास्ते, नये सुझाव जो कि बहुत ही प्रासंगिक और तर्कसंगत होने के साथ-साथ समय की आवश्यकता के अनुरूप है वे सुझायें है। अमेरिकन संघीय शासन यदि इन पर विचार-विमर्श कर इनकी क्रियान्विती करता है तो निश्चय ही वे सुझाव अमेरिका को प्रसन्नता, शांति, और सफलता की ओर इस 21वीं सदी में ले जायेंगे, यह निर्विवाद सत्य है।

मुझे विश्वास है कि उसका नया प्रायोगिक पथ प्रदर्शन बुद्धिजीवियों में चिंतन और विचार विमर्श के नये पृष्ठ खोलेगा, नौकरशाही को नये तरीके से कार्य करने को प्रेरित करेगा, और व्यापार के क्षेत्र के बड़े-बड़े दिग्गजों को एकजुट होकर सकारात्मक गति से नेतृत्व करने व नई दिशा के क्रियाकलापों को सफल बनाने को प्रेरित करेगा ताकि अन्तर्राष्ट्रीय जगत में उस महान् राष्ट्र की स्थिति अक्षुण्ण बनी रहे।

मैं विश्वास करता हूँ कि अमेरिका का 'स्वर्णिम स्वप्न' अमेरिका द्वारा नये आयाम स्थापित करने पर ही 'स्वर्णिम' (सुनहरा) बन सकता है। एक राष्ट्रव्यापी नई बहस की, चिंतन की, विचार विमर्श की नितांत आवश्यकता है। नए सकारात्मक और रचनात्मक प्रयोग ही अमेरिका के स्वप्न को 'सुनहरा' बना सकते हैं।

मेरे द्वारा सुझाये गये सुझावों की क्रियान्विती में मैं अपना हृदय से सहयोग देने को तत्पर हूँ क्योंकि मेरी स्वयं की भी महती और समर्पण भाव से यह इच्छा है कि अमेरिका का भविष्य सही अर्थ में समृद्धि और प्रसन्नता से परिपूर्ण 'सुनहरा' तथा दैदिप्यमान हो।

अनावश्यक तर्क-वितर्क, वाद-विवाद में समय नष्ट न किया जाये। अब हमें शीघ्रता से और निर्णयात्मक दृष्टि से अमेरिका को सही अर्थ में 'स्वर्णिम अमेरिका' बनाने के पावन उद्देश्य की ओर दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ एक जुट होकर अग्रसर होना चाहिये।

डॉ. पी.सी. लूनिया

आप एक ख्याति प्राप्त सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रत्न व्यवसायी डॉ.पी.सी. लूनिया (डा. पुखराज चन्द्र लूनिया) का जन्म अप्रेल 13, 1943 (रामनवमी, चैत्र शुक्ला नवमी, सम्वत् 2000) को हुआ। आपके पूर्वजों में स्व. श्री धींगरमल शाह मुल्तान राज्य के प्रधानमंत्री थे। 1136 ए.डी. में प्रातः स्मरणीय जैन आचार्य दादागुरू जिनदत्त सूरी ने आपको चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का मार्ग दिखलाया और तभी से आप उनके अनन्य उपासक बन गये। यह परिवार मुल्तान से प्रस्थान कर जैसलमेर, दिल्ली और अंत में 150 वर्ष पूर्व जयपुर में स्थापित हो गया। यहां इन्होनें रत्नों के व्यवसाय को अपनाया। आपके दादा स्व. श्री गुलाबचंद लूनिया ओर पिता स्व. श्री केसरीचंद लूनिया गुलाबी नगरी, जयपुर के प्रसिद्ध रत्न व्यवसायियों में गिने जाते थे।

डा. पी.सी. लूनिया भी व्यवसाय के क्षेत्र में बहुत ही उत्साही, शोधकर्ता और डायनेमिक व्यक्तित्व के धनी हैं। उन्हें ईश्वर प्रदत्त वरदान है कि वे किसी भी रत्न का मूल्यांकन सही रूप में कर लेते हैं। इस एक खोज से कि उन्होनें जम्मू कश्मीर के सफेद नीलम को नई तकनीक के द्वारा एकदम चमकदार नीले रंग में बदल दिया और इसने उन्हें ख्याति के उच्च शिखर पर पहुँचा दिया। उनके इस आविष्कार में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रत्ना लूनिया का भी बहुत बड़ा योगदान है।

श्री लूनिया ने झाड़फानुसों की श्रृंखला (बड़े केडिलियर्स स्टूडेड) बहुत ही कीमती और मुश्किल से मिलने वाले रंग-बिरंगे रत्नों से बनवाई जो कि आर्ट और क्राफ्ट का अद्विितीय नमूना पाई गई। न्युयार्क टाईम्स ने इस शानदार कलाकृती का और डा. पी.सी. लूनिया रत्न की व्यवसाय में उपलब्धियों का वर्णन अपने विशेष परिशिष्ट में अगस्त 20 सन् 1971 में प्रकाशित किया था। आपके सम्मान में एक पार्टी (जलपान) का भी आयोजन किया गया था जिसमें श्री और श्रीमती सेवार्ड जेफर्सन, जोहन एण्ड जोहन नानटूकेट (U.S.A.) के चेयरमैन ने आपको सम्मानित किया।

आपने भारत में 'गोल्डन इण्डिया फाउण्डेशन (स्वर्णिम भारत) नाम से एक समाजसेवी संगठन की स्थापना की। इसका एकमात्र उद्देश्य किसी प्रकार का आर्थिक लाभ कमाना न होकर केवल सर्वहारा, गरीब या गरीबी की रेखा से नीचे

जीवन-यापन करने वालों को उन्नत करने का है और भारत के प्राचीन गौरव को पुर्नस्थापित करने का है। यह संगठन वैचारिक क्रांति के द्वारा भारत की मूल समस्याओं का निरंतर अध्ययन करता है और उसके हल करने के सहज, सरल उपाय जनता से लेकर प्रान्तीय तथा केन्द्रीय सरकारों को प्रस्तुत करता है। डा. पी.सी. लूनिया का स्वप्न 21वीं शताब्दी में भारत को 'स्वर्णिम भारत' के रूप में देखने का है।

डा. पी.सी. लूनिया हंसमुख और मृदुभाषी व्यक्तित्व के धनी हैं। आपके व्यक्तित्व में आध्यात्मवाद तथा भौतिकवाद का संतुलन आश्चर्य रूप से समाहित है। आपने व्यापार के साथ-साथ स्वधर्म (तेरापंथ) के अणुवृतों का पालन कर जीवन को संयमित और संतुलित कर रखा है।

डा. पी.सी. लूनिया में सहानुभूति और सहयोग की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। आपसे प्रेरित एवम् लाभान्वित प्रियजन और परिजन आपकी निरंतर प्रशंसा करते नहीं थकते हैं।

''आत्मविश्वास'' डा. लूनिया का विशिष्ट गुण है। इस विश्वास के चलते वे संसार में कोई भी कार्य असंभव नहीं मानते। इसी आत्मविश्वास के बल पर प्रेरणा देकर उन्होनें अपनी एकमात्र कन्या अन्नू को जयपुर में सार्वजनिक रूप से बारह तेरह फीट लम्बी जानते हुए अंगारों से भरी खाई पर चलाकर दिखा दिया।

योगाभ्यास, प्रेक्षाध्यान, स्वाध्याय आदि का मार्ग-निर्देशन वे नियमित रूप से, भारत आवास के समय परम पूजनीय गुरूदेव महाप्रज्ञ जी से लेते रहते हैं।

उक्त सारे प्रभाव इस पुस्तक में भी अनेक जगह प्रकाशित हुए हैं।

मार्च 3, 2000 में डा. पी.सी. लूनिया को 'मैन आफ नॉलेज' की उपाधि से विभूषित करते हुए केन्द्रीय कानून मंत्री श्रीमान् अरूण जेटली ने WISITEX की तरफ से आपके राष्ट्र के प्रति समर्पित निस्वार्थ सेवा भाव और बेरोजगारों को उन्नत करने के कष्टसाध्य प्रयत्नों के कारण, नेतृत्वशक्ति से परिपूर्ण उर्जावान उद्योगपति के रूप में सम्मानित किया।

Lof.ke vefjdk

cuku gr

dk; ;ktuk

y[kd

Mk- ih- lh- yfu;k